

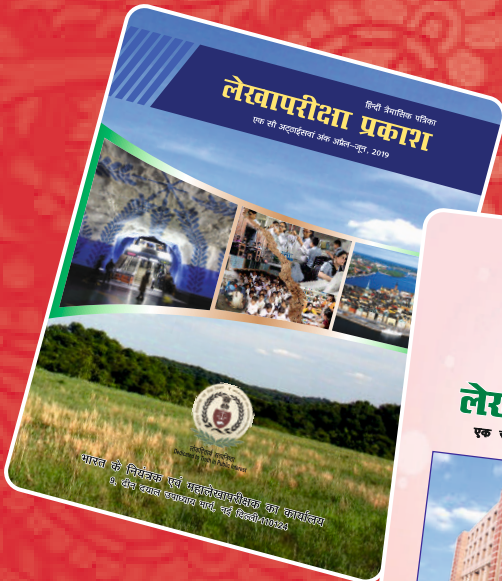


लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बत्तीसवां अंक अप्रैल-जून, 2020



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में 'शहरीवन' का उद्घाटन करते हुए
श्री प्रकाश जावड़ेकर, पर्यावरण मंत्री





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बत्तीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(अप्रैल-जून, 2020)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124

हमें संकल्प लेना होगा कि हम सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने में अपना गौरव समझेंगे और हिंदी का प्रयोग न केवल निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए करेंगे बल्कि हिंदी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।



लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ बत्तीसवां अंक (अप्रैल-जून, 2020)

पृ.सं.	पृ.सं.
अनुक्रमणिका	3
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
पाठकों के नाम पाती	6
लेख	
1. हिंदी का महत्व एवं सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी में कार्यान्वयन डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'	7
2. कोरोना वायरस : एक अंतर्राष्ट्रीय आपदा डॉ. लाखा राम	12
3. कोविड-19 : एक महामारी सुश्री बबीता	15
4. लॉकडाउन पर भावना भारी एस.सी. मित्तल	17
5. झूठा सच मदन गोपाल शर्मा	19
6. वैतनिक रोजगार से स्वरोजगार की ओर कमल कुमार	21
7. कबीर के बीजक साखी और सबद नरेन्द्र कुमार पाण्डेय	25
8. रावण, जानकी और पवनकुमार बनवारी लाल सोनी	28
9. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सुश्री सं.ग. श्रीमती कहानियाँ	31
10. पादरी की अंगूठी बी.एस. चौहान	34

	पृ.सं.		पृ.सं.
11. हिटलर बाबू संजय कुमार सिंह	40	18. इस वीरां में कोई दोस्त नहीं मिलता योगेश कुमार मिश्र	78
12. जीवन की सांझ तजिन्द्र सचदेवा	51	19. आज सुबह राजेश 'पंकज'	79
13. सलमा सितारों वाली सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'	59	20. फिर भला क्या ... सुश्री नीतू सिंह	80
14. सुनो अख्तर ... अनिल कुमार 'शर्मा'	67	21. माँ की दुआ ... राजेश कुमार जांगिड	81
कविताएँ		22. विरह गीत राम सिंह	82
15. कुदरत का कहर — कोरोना नरेन्द्र बडगुज्जर	75	23. गरीब मजदूर की दर्द भरी आवाज दीपक कुमार पंकज	83
16. लॉकडाउन का सकारात्मक प्रभाव भास्कर कुमार	76	24. अन्याय सुश्री सुमेधा अमर	84
17. एक मराठन — एक मराठा मेहरबान सिंह नेगी	77		



स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ बत्तीसवां अंक
(अप्रैल-जून, 2020)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री राजीव महर्षि

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री सरोज पुन्हानी

उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री राज कुमार

प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अजीत सिंह

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

श्री हीरा बल्लभ भट्ट

सलाहकार

सुश्री अनामिका अंतिल

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

रचना चयन समिति

श्री सुनील डबराल

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री राजकुमारी शर्मा

सलाहकार

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस

जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ
संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।

संपादकीय

हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ का एक सौ बत्तीसवां अंक (अप्रैल-जून, 2020) आपको प्रस्तुत करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका की सफलता में सुधी पाठकों व रचनाकारों का बहुत बड़ा योगदान है। यह योगदान हमें समय-समय पर मिलता रहेगा तो पत्रिका नियमित रूप में छपने लगेगी।

हिंदी भाषा संवाद का एक महत्वपूर्ण और प्रखर माध्यम है। यह कई भाषाओं और बोलियों का मिश्रण है जो इसे सौहार्द की भाषा बनाता है। हिंदी भाषा प्रकृति से विकासशील, ग्रहणशील और लचीली भाषा है इसलिए चाहे यह भाषा किसी भी भाषा या बोली से जुड़े या उनके शब्दों को आत्मसात करे, तब भी यह सहज की बनी रहती है। यही कारण है कि शायद हिंदी ही राष्ट्र की चेतना और संवेदना है। इस विचार को हम हिंदी भाषी लोगों को समझना होगा कि हम हिंदी का प्रयोग निरंतर करते रहें तथा साथ ही साथ अपने आसपास भी इसको बढ़ावा दें। केवल औपचारिकता के लिए हिंदी का प्रयोग न करें अपितु हिंदी को दैनिक दिनचर्या का भाग बनायें। अधिक से अधिक लेखन कार्य हिंदी में किया जाये। कविता, कहानी, निबंध, ब्लॉग, लघु कथा, उपन्यास आदि को हम न केवल पढ़ें अपितु हिंदी भाषा के प्रशंसक, लेखक, लेखिका, कवि-कवियत्री, सब नये-नये विषयों को अपनी हिंदी लेखनी से छुएं जिससे पाठकों का दायरा बढ़ सके और उनकी रुचि भाषा में और अधिक बढ़े।

हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ का संपादक होने के नाते मेरा पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि आप हिंदी का अधिक से अधिक पठन-पाठन करें तथा जो हिंदी में लेखन कला में पारंगत हैं वे अपनी लेखनी से नये तथा समकालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विषयों पर प्रकाश डालें ताकि पाठकों को कुछ नई पठन सामग्री मिले तथा जन मानस को इन विषयों पर विचार-मंथन का अवसर प्राप्त हो।

जय हिन्दी – जय भारती!

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह

संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम पाती

आदरणीय पाठक वृन्द,

जय हिन्द, जय हिन्दी! विभागीय त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का यह एक सौ बत्तीसवां अंक आपके करकमलों में है। रचनाकारों ने अपनी नवीनतम सरस कविताओं व सरल रचनाओं में समेटे अविरल भावों के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुंचाए हैं।

इस अंक में 'लेखापरीक्षा प्रकाश' की सभी सामग्री रुचिकर, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक है। हम केवल मात्र रचनाकारों व पाठकों के मध्य एक सेतु का कार्य करते हैं। जैसे रचनाकारों के भावों व विचारों को पाठक तक पहुँचा देते हैं वैसे ही पाठकों की प्रतिक्रिया आपके पत्र स्तम्भ में सम्मिलित कर रचनाकारों तक पहुँचा देते हैं।

सभी राष्ट्रभाषाओं के साथ-साथ राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार अबाध गति से निरंतर बढ़ रहा है। हमें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि सरकार की राजभाषा नीतियों का अमल करने, राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की अहम भूमिका निभाने में भी हमारा विभाग आगे ही रहा है और हमें आशा नहीं अपितु विश्वास है कि इस राष्ट्रीय दायित्व को हम सब पूरी निष्ठा व संकल्प के साथ पूरा करेंगे। भारत भारती के इस पावन यज्ञ में आहुतियां आपकी हैं, अतः जब तक यह संकल्प पूरा नहीं हो जाता आप का सतत् सहयोग नितान्त आवश्यक है।

अतः आशा ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि हमारे रचनाकार साहित्य की दृष्टि से उपयुक्त स्तरीय सामग्री के साथ-साथ विभागीय काम के अनुरूप सामग्री उपलब्ध करवाकर पत्रिका के नियमित और सतत् प्रकाशन में अपना सहयोग बराबर देते रहेंगे।

जय हिंदी, जय भारती!

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी

अजीत सिंह

संपादक

हिंदी का महत्व एवं सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी में कार्यान्वयन



डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'
जी-4, अक्षया फ्लेट्स,
53, इरुम्पा स्ट्रीट, आइस हाउस,
ट्रिपलिकेन, चेन्नै-600005

1. राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

— लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

2. हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।

— राजा राममोहन राय

3. यदि हम भारत की राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं, तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।

— राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

प्रसिद्ध साहित्यकार गोपाल सिंह नेपाली की कविता में कहा है —

“दो वर्तमान को सत्य सरल
सुंदर भविष्य के सपने दो।

हिंदी है भारत की बोली
तो अपने आप पनपने दो।।”

भाषा, किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है और भाषायी एकता से ही राष्ट्र की अखण्डता सुदृढ़ होती है। कोई भी देश स्वभाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता।

पुरातन काल से 'हिंदी' हमारे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती आ रही है और आज वह भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत के संविधान में वर्णित भावनात्मक एकता को मजबूत करने का भी माध्यम है। हिंदी ने भारतीय संस्कृति से संविधान निर्माण प्रक्रिया तक और पुरातन युग से स्मार्ट फोन के प्रयोग तक का लंबा सफर तय करते हुए हमारी सामासिकता को अक्षुण्ण रखने में महती भूमिका निभाई है और देशवासियों में अनेकता में एकता की भावना को भी पुष्ट किया है।

जिस देश के नागरिक अपनी भाषा में सोचें और लिखें, विश्व उस देश को सम्मान की दृष्टि से देखता है। भारत जैसे विशाल, बहुभाषी और प्रजातांत्रिक देश की चहुँमुखी विकास प्रक्रिया में हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं की भी अहम् भूमिका रही है। हमारे देश की सभी भाषाएं और बोलियाँ हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं और इनका प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार करना, यह हमारा परम कर्तव्य है।

भारतीय संविधान द्वारा दिनांक 14 सितम्बर, 1949 को धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परंपराओं को जोड़ने की कड़ी और अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली, हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में चुना गया है। इसके साथ ही, संघ सरकार को यह महत्वपूर्ण दायित्व भी सौंपा गया कि वह अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली एवं पदावली को आत्मसात

करते हुए हिंदी भाषा का विकास करे ताकि वह भारतीय संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

आज कोई भी भाषा कंप्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रह कर जन मानस से जुड़ी नहीं रह सकती। वर्तमान में डेटाबेस के आधार पर मशीनी अनुवाद के जरिए पूरे विश्व में अनुवाद किया जा रहा है। केन्द्र सरकार के कामकाज में अत्यधिक मात्रा में नियमित आधार पर किए जाने वाले अनुवाद कार्य में लगने वाले अतिशय मानव संसाधन और समय को बचाने के लिए राजभाषा विभाग ने सी-डैक, पुणे की सहायता से 'कंठस्थ' नामक अनुवाद सॉफ्टवेयर भी तैयार किया है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने भी एक अभिनव पहल करते हुए 'हिंदी प्रौद्योगिकी संसाधन केन्द्र' (Hindi Technological Resources Centre) की स्थापना की है ताकि कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए नवीन ई-टूल्स (E-Tools) विकसित किया जा सके।

आज Instagram, E-mail, Twitter, SMS, Whatsapp सभी जगह हिंदी पूरी तरह से छाई हुई है।

निज भाषा के प्रति स्वाभिमान और हिंदी भाषा का समुचित ज्ञान एवं तकनीकी कुशलता ही हिंदी में कार्य करने का मुख्य आधार है। मुझे

विश्वास है कि केन्द्र सरकार के उपक्रमों एवं विभागों आदि में इन सॉफ्टवेयरों के अधिकाधिक प्रयोग से द्विभाषीकरण यानि अनुवाद कार्य अपेक्षाकृत सरल होगा और इससे राजभाषा कार्यान्वयन को गति मिलेगी।

सूचना प्रौद्योगिकी के मौजूदा दौर में हमें हिंदी के विभिन्न ई-टूल्स जैसे यूनिकोड, हिंदी कीबोर्ड, लीला, स्वयं हिंदी शिक्षण सॉफ्टवेयर, अनुवाइ ई-लर्निंग प्लेटफार्म, श्रुतलेखन, ई-महाशब्दकोश आदि का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए। हिंदी प्रचार-प्रसार केवल सरकारी उपक्रमों स्तर तक सीमित न रखकर इसे भारत के जन-जन तक ले जाना होगा ताकि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ देश के प्रत्येक नागरिक को मिल सके।

आप सभी को यह विदित ही होगा कि 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारतीय संविधान में 'राजभाषा' के तौर पर शामिल करते हुए इसे 26 जनवरी, 1950 को घोषित किया गया था, और हर वर्ष 14 सितम्बर को 'हिंदी दिवस' के तौर पर भारत में हर जगह मनाया जाता है।

संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है। भारत और अन्य देशों में 80 करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और

लिखते हैं। फिजी, मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिंदी बोलती है।

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने अपने लेख विश्व में 'हिंदी फिर पहले स्थान पर' में हिंदी बोलने वालों की एक सूची दी है, जिसमें हिंदी बोलने वालों की संख्या 1023 करोड़ से अधिक है और मन्दारिन बोलने वालों की संख्या लगभग 900 करोड़ है। चीनी से अधिक हिंदी भाषा बोली जा रही है विश्व में हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या चीनी से अधिक है। आज हिंदी प्रथम स्थान पर है।

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली भाषा हिंदी के कारण ही भारत विश्व में अपनी महानता बनाए हुए है। इसमें भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की वह सुगंध समायी हुई है, जिसके आकर्षण में सम्पूर्ण विश्व शांति का अनुभव करता है। हिंदी विश्व की किसी भी समुन्नत भाषा की तरह समुन्नत और समृद्ध भाषा है। आदियुग के सरहपा, स्वयंभू और पुष्पदंत से लेकर सूरदास, तुलसी, मीरा, रसखान और कबीरदास से होती हुई प्रसाद, पंत, निराला तक यह निरंतर गौरवपूर्ण ढंग से विकसित होती गई। स्वाधीनता संग्राम में भी साहित्य व पत्रकारिता के माध्यम से देश को संगठित रखकर आजादी दिलाने में इसने भरपूर योगदान दिया।

हिंदी इस देश के बहुसंख्यक वर्ग की ही नहीं, संस्कृत जैसी वैज्ञानिक एवं अति समृद्ध भाषा की उत्तराधिकारिणी होने के साथ-साथ सरल, संप्रोज्य एवं सुग्राह्य होने के कारण विभिन्न भाषा-भाषी सैनानियों तथा भाषा मर्मज्ञों के द्वारा एकमत से राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार की गई है। संसार में जिस भारत भूमि से सर्वप्रथम सभ्यता व संस्कृति का उद्भव और विकास हुआ हो, जिस उर्वरा भूमि में ऋग्वेद जैसे उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ हो, जिस ज्ञानभूमि से सांख्य योग, दार्शनिक प्रणाली, ज्योतिष, गृह नक्षत्रों की दूरी, काल की गणना आदि का निर्धारण हुआ हो, उस देश की भाषा का अंदाजा लगाया जा सकता है कि उसकी जड़ें कितनी गहरी हैं।

हिंदी हमारी भाषा ही नहीं है अपितु वैश्विक स्तर पर सम्पर्क भाषा भी है। आज आवश्यकता इस बात की है हम वादों के घेरे में न फंसेकर हिंदी को इतनी समृद्ध शक्तिशाली सक्षम बना दें कि उसके अस्तित्व पर कोई आंच न आए।

राजभाषा जनता का कार्य जनता की भाषा में निष्पादित करती है। अतः राजभाषा जनसाधारण की भाषा की तरह सरल होनी चाहिए। राजभाषा के माध्यम से संपूर्ण देश के आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि कार्यव्यापार सरल रूप से होना

आवश्यक है। देश की जनसंख्या का अधिकांश भाग राजभाषा को समझकर उसे प्रयोग करने में आसानी महसूस करनी चाहिए। राजभाषा की उपज देश की माटी से होना आवश्यक है। राजभाषा में सहयोगी भाषाओं की विशेषताओं को समाहित करने की विशेषता अवश्य होनी चाहिए। भारत में भाषा वैविध्य के साथ-साथ हिंदी में उल्लिखित सभी विशेषताएं उपलब्ध हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा था — 'हिंदी के द्वारा सारा भारतवर्ष एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।'

राजभाषा विषयक हिंदी की विशेषता का उल्लेख करते हुए मराठी विद्वान वैशंपायन ने कहा था — 'हिंदी केवल अपनी सरलता, मधुरता, ओजस्विता आदि से ही भारत को मोहित नहीं करती प्रत्युत उसका विशाल प्राचीन साहित्य भी अपने गौरव की ओर संकेतित है।' देश की सर्वांगीण उन्नति में राजभाषा का पद वही प्राप्त कर सकती है जिसमें उच्च शिक्षण, विज्ञान की बोधगम्यता, व्यापार की व्यापकता, परस्पर विचार-विनिमय की सरलता, अन्य भाषाओं की शब्दावली की समायोजनता संबंधी सभी विशेषताएं मौजूद हों। हिंदी में उल्लेखित ये भी विशेषताएं उपलब्ध हैं। हिंदी की यह क्षमता मौलिक है क्योंकि हिंदी भारत की आत्मा से उपजी हुई भाषा है। हिंदी केवल

भारतीय स्तर की नहीं बल्कि उसका विस्तार क्षेत्र संपूर्ण विश्व है।

हिंदी विशेष समृद्ध, अत्यंत व्यापक, परिष्कृत एवं सर्व सुगम भाषा है। जिसके द्वारा राष्ट्र की एकता संवर्द्धित होती है। राजभाषा हिंदी भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है, जिसके माध्यम से भारत का प्रत्येक नागरिक अपना कार्य सुगमता से कर सकता है। राजभाषा हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों को पचाने की क्षमता विद्यमान है।

राजभाषा हिंदी की देवनागरी लिपि में किसी भी भाषा के शब्दों को लिखा जा सकता है। देवनागरी लिपि वैज्ञानिकता विश्व के भाषाविदों द्वारा प्रमाणित है। राजभाषा हिंदी में प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

आज के बाद भारत में प्रारंभ से ही राजभाषा हिंदी प्रयोग के कारगर समन्वयन एवं प्रभावी व्यवस्था के लिए विशेष प्रयासों का अभाव सा रहा है। राजभाषा हिंदी प्रयोग के लिए जो भी योजना, आदेश, निर्देश, नीति आदि तैयार किए गए हैं अथवा लागू किए गए हैं, उनमें सीधे-सीधे कार्य व्यवस्था के स्थान पर किन्तु परन्तु आदि का आधिक्य रहा है और वे तात्कालिक समस्याओं के अस्थायी समाधान मात्र बनकर रह गए हैं। निःसंदेह राजभाषा हिंदी प्रयोग संबंधी

कोई भी आदेश, निर्देश, नियम, आदि अपेक्षानुसार प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो सका है।

अतः अब राजभाषा हिंदी प्रयोग के लिए यथा आवश्यक मानव संसाधनों, यांत्रिक उपकरणों तथा अपेक्षानुसार प्रशासनिक एवं वित्तीय शक्तियों का सुनियोजन करके विभिन्न विभागों, कार्यालयों में राजभाषा संकायों को सक्षम साधन संपन्न एवं कार्य परिणाम प्राप्त करने में योग्य बनाने के प्रभावी उपायों की विशेष आवश्यकता है। कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों के साथ-साथ राजभाषा कार्मिकों को अधिकार संपन्न बनाने की भी अपेक्षा है।

राजभाषा हिंदी प्रयोग संबंधी कार्यक्रमों को सुचारु रूप से नियोजित करने के साथ-साथ उनको लागू करने की प्रविधियाँ तथा परिणामों का मूल्यांकन आदि वैज्ञानिक विश्लेषणात्मक ढंग से सुनियोजित करना आवश्यक है।

कार्यालयों के कार्यों में यांत्रिक सुविधाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। जिन कार्यालयों में जितनी अधिक विकसित यांत्रिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं वे कार्यालय उतने ही अधिक प्रगतिशील होते हैं। जैसे तिमाही रिपोर्ट भेजना, वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट भेजना, हिंदी शिक्षण योजना को अर्ध वार्षिक रिपोर्ट प्रेषण, राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

की कार्यवृत्त की रिपोर्ट भेजना, हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी पखवाड़ा की रिपोर्ट, हिंदी प्रशिक्षण की रिपोर्ट आदि भेजना। यह सभी आधुनिक यंत्रों के माध्यम से तुरंत हो सकता है।

उपक्रमों में सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, सभी उपयोग की जाने वाली मोहरें, रबड़ स्टाम्स आदि द्विभाषी होनी चाहिए। वेबसाईट भी द्विभाषी होनी चाहिए। सभी कंप्यूटरों में द्विभाषी हिंदी एवं अंग्रेजी सॉफ्टवेयर होना चाहिए ताकि कार्मिक इसका उपयोग कर सकें।

इसके अतिरिक्त हिंदी के कार्यान्वयन के लिए सभी रजिस्ट्ररों के नाम द्विभाषी एवं फाइल कवर पर द्विभाषा का प्रयोग करना चाहिए।

उपस्थिति पंजिका में हिंदी और अंग्रेजी में नाम दर्ज होने चाहिए। उपक्रम में उपयोग होने वाले सभी फार्मस भी द्विभाषी होनी चाहिए।

राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमित तौर पर हर तिमाही होनी चाहिए। उस बैठक में विचाराधीन मुद्दों पर विचार-विमर्श कर उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित करना चाहिए।

उपक्रम में जितने भी अनुभाग हैं, उनका हर छमाही राजभाषा कक्ष द्वारा हिंदी के कार्यान्वयन का

निरीक्षण किया जाना चाहिए। निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों को दूर करने का यथासंभव प्रयास किया जाना चाहिए।

राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 में उल्लेखित सभी बिंदुओं का सख्ती से अनुपालन किया जाना चाहिए।

हिंदीतर कर्मचारियों के लिए हिंदी भाषा प्रशिक्षण अनिवार्य है। इसके साथ-साथ कंप्यूटर में हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण भी अनिवार्य रूप से देना चाहिए।

राजभाषा नीति से संबंधित प्रोत्साहन की योजनाओं से कर्मचारियों को अवगत कराना चाहिए ताकि उनमें हिंदी सीखने की ललक लगे, ताकि वे टिप्पणी, मसौदा एवं पारिभाषिक शब्दावली, पत्र लेखन, हिंदी व्याकरण की अद्यतन जानकारी हासिल कर सकें।

हिंदी कार्यशाला का नियमित तौर पर कर्मचारियों के लिए आयोजन किया जाना चाहिए ताकि वे नई-नई विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकें।

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन कर उसमें प्रतियोगिताओं का संचालन करना भी अनिवार्य है। वाद-विवाद, टिप्पण एवं मसौदा लेखन, प्रश्न मंच, गीत एवं आशुभाषण, काव्य-पाठ आदि किया जा सकता है।

उपक्रमों के कार्यालयों में हिंदी गृह पत्रिका अथवा ई-पत्रिका भी प्रकाशित की जानी चाहिए ताकि कार्मिक अपनी साहित्य एवं भाषायी प्रतिभा का विकास कर सकें।

कर्मचारियों को अनुवाद प्रशिक्षण हेतु भी नामित किया जाना चाहिए। अनुवाद प्रशिक्षण उनमें दूसरी भाषाओं के साहित्य को पढ़ने एवं जानने का अवसर प्राप्त होगा।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का युग है, जिसमें भाषिक आकलन वैश्विक दृष्टि से करने की जरूरत महसूस होती जा रही है, इन सभी जरूरतों की पूर्ति करने का सामर्थ्य हिंदी में निश्चित है।

अतः आज की हिंदी न केवल आज बल्कि भविष्य में भी विस्तृत मानवीय संदर्भों में राष्ट्रीयता की सीमा को लांघकर पूरे विश्व को प्रभावित करने वाली अमोघ शक्ति बनी रहेगी। संरचना की दृष्टि से यह विश्लेषणात्मकता में भी संतुलन बनाये रखने का भी सामर्थ्य रखती है और रहेगी। आज सृजनात्मक हिंदी किसी भी प्रकार के विषय के संबंध में अभिव्यक्ति में समर्थता प्राप्त कर चुकी है। साथ ही शिक्षा प्राप्त, ज्ञान-विज्ञान, कानून आदि संबंधों में स्वायत्त भी बनती जा रही है। यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि हिंदी अपनी साहित्यिक सीमाओं को

लांघकर जीवन शैली की भाषा बनती हुई विज्ञान एवं तकनीकी से जुड़ती जा रही है।

आज विदेशों में लगभग 144 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था है। हिंदी के महान कवियों की कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद तथा शोधकार्य किया जा रहा है। जर्मनी के 17 विश्वविद्यालयों में हिंदी के स्वतंत्र विभाग हैं तथा अमेरिका के लगभग 33 विश्व-विद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन होता आ रहा है।

आज भारतीय अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण हिंदी भाषा के विकास एवं विस्तार का मार्ग प्रशस्त करता जा रहा है। जब हम वैश्वीकरण और हिंदी की बात करते हैं तो सूचना क्रांति और प्रौद्योगिकी को हिंदी से दूर नहीं रख सकते। आज वर्ड प्रोसेसिंग, बेब दुनिया आदि में हिंदी के तेजी से बढ़ते प्रयोग को नजर अंदाज नहीं कर सकते। आज विश्व पटल पर हिंदी अपना एक सर्वमान्य धरातल निर्माण कर चुकी है। अतः वैश्विक स्तर पर हिंदी का भविष्य भी दैदीप्यमान है।

आज भारत अगर पूरी दुनिया के सामने शक्तिशाली बाजार के रूप में उभरा है तो हिंदी भाषा एक बाजार की सबसे शक्तिशाली भाषा के रूप में सामने आ रही है। बाजार में व्यापार बिना आपसी समझ के संभव नहीं है।

इस आपसी समझ में सहजता, सरलता और विश्वास पैदा करने का काम हिंदी ने किया है और भविष्य में भी करते रहने की न केवल पूर्ण संभावना है बल्कि विश्वास है। आज हिंदी और रोजगार आपस में अच्छी तरह जुड़ते जा रहे हैं। अतः आने वाले दिनों में हिंदी का प्रशासन से लेकर शिक्षा के साथ सभी क्षेत्रों में लगे रहना और शिक्षा का व्यावसायिमुख होने की प्रक्रिया में लगे रहना स्वाभाविक है।

आज का युग 'वैश्वीकरण' का युग है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से संपूर्ण विश्व एक परिवार के रूप में करीब आ गया है। निःसंदेह हिंदी राजभाषा पद के लिए सर्वाधिक उपयुक्त एवं सक्षम भाषा है। इसलिए संविधान निर्माताओं द्वारा हिंदी को राजभाषा का स्थान दिया जाना सर्वदा सर्वविधि समीचीन है।

अतः राजभाषा हिंदी अब राष्ट्रभाषा बनने की ओर अग्रसर है। सबके दिलों की धड़कन है : हिंदी।

जो हिंदी हित की बात करेगा
वही दिलों में राज करेगा।।

जो हिंदी को अपनायेगा
वही संसद में राज करेगा।।
न हम शिकवा करते हैं
न शिकायत करते हैं।।
हिंदी रहे सलामत
यही दुआ करते हैं।।

कोरोना वायरस : एक अंतर्राष्ट्रीय आपदा



डॉ. लाखा राम
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

लैटिन भाषा में 'कोरोना' का अर्थ 'मुकुट' होता है और इस वायरस के कणों के इर्द-गिर्द उभरे हुए कांटे जैसे ढाँचो से इलेक्ट्रान सूक्ष्मदर्शी में मुकुट जैसा आकार दिखता है, जिस पर इसका नाम रखा गया था। कोरोना वायरस कई वायरस (विषाणु) प्रकारों का एक समूह है जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग के कारक होते हैं। यह आरएनए वायरस होते हैं। यह वायरस जानवरों से इंसानों में फैलता है। कोरोना वायरस विषाणुओं के परिवार का है। यह वायरस ऊंट, बिल्ली और चमगादड़ सहित कई पशुओं में भी प्रवेश कर रहा है। गाय और सूअर में यह अतिसार और मुर्गियों में यह ऊपरी श्वास तंत्र के रोग का कारण बनता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, यह वायरस सी-फूड से जुड़ा है और इसकी शुरुआत चीन के केंद्र में स्थित हुवेई प्रांत के वुहान शहर के

एक सी-फूड बाज़ार से ही हुई मानी जा रही है, जहां अक्सर काम करने वाले लोग जीवित या नव वध किए गए जानवरों को बेचते थे जो इस वायरस से संक्रमित थे। चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवल कोरोना वायरस इसी समूह के वायरसों का एक उदाहरण है, जिसका संक्रमण 2019-20 में तेज़ी से उभरकर 2019-20 वुहान कोरोना वायरस प्रकोप के रूप में फैलता जा रहा है। हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका नाम कोविड-19 रखा। कोरोना वायरस, इंसानों में कोविड-19 नामक बीमारी देता है।

आधिकारिक तौर पर पैन्डेमिक कोरोना वायरस का नाम सार्स सीओवी-2 है। इन्क्यूबेशन पीरियड संक्रमण और लक्षण दिखने के बीच का वक्त होता है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलने के कारण बहुत अधिक सावधानी

बरती जा रही है। चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ कोरोना वायरस (कोविड-19) तेज़ी से दुनिया भर में अब तक 186 से ज्यादा देशों में पहुंच गया है। इन देशों में प्रमुख रूप से प्रभावित देश थाईलैंड, ईरान, इटली, जापान, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, भारत और संयुक्त अरब अमीरात हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना को फैलने से रोकना स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की तरफ से एक एडवाइजरी भी जारी की गई है, जिसमें बीमारी के लक्षण पहचानने और उसकी रोकथाम के उपायों के बारे में जानकारी दी गई है। कोरोना वायरस के कारण बिजनेस पर भी असर पड़ा है। सब कुछ ठप्प हो गया है। एक वायरस कितनी तेज़ी से अर्थव्यवस्थाओं की कमर तोड़ रहा

है। बड़ी संख्या में नौकरियां जाने लगी हैं। दवा उद्योग पर गहरा असर पड़ा है।

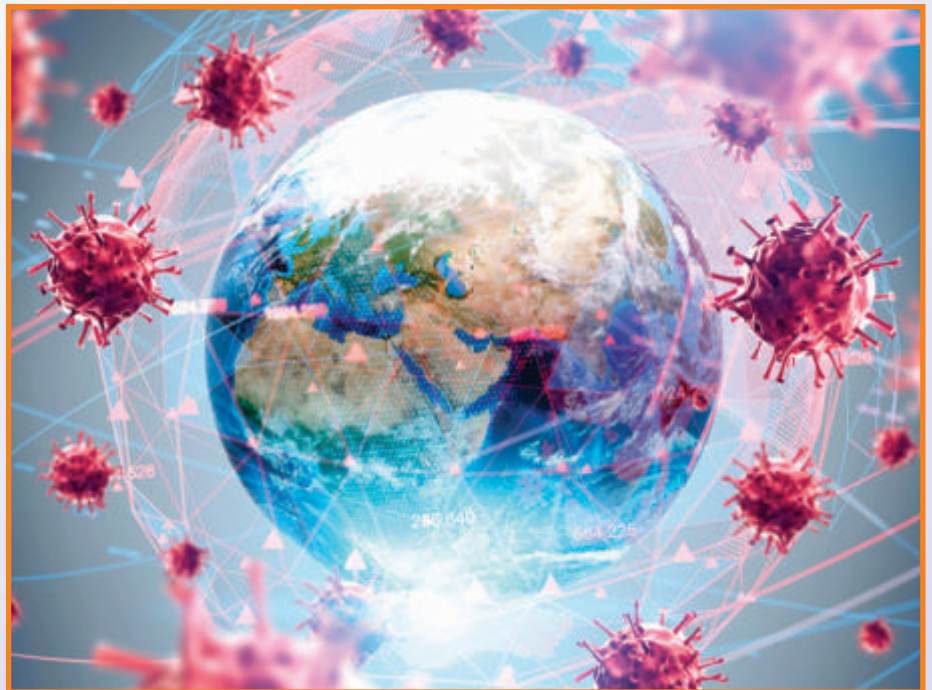
मानव में यह वायरस श्वास तंत्र संक्रमण के कारण होते हैं, जो अधिकांश रूप से मध्यम गहनता के होने के कारण इसके शुरुआती लक्षण बेहद मामूली होते हैं, लेकिन सामान्य मौसमी फ्लू से यह 20 गुना ज्यादा खतरनाक है। बीबीसी की रिपोर्ट में चीन के सीसीडीसी यानी चाइनीज सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन का कहना है कि इसके 80 प्रतिशत मामले नरम हैं यानी उनका नतीजा घातक नहीं है, जो बुजुर्ग हैं उन पर ज्यादा असर होता है। लेकिन इसके बावजूद इसके संक्रमण से मरने वाले लोगों की लगातार बढ़ती संख्या चिंता का विषय है। मरने वालों में पुरुषों की संख्या बहुत ज्यादा है। चीन के हवेई प्रांत में सबसे अधिक मौतें हुई हैं। खासतौर पर मरने वाले अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा, डायबिटीज और हार्ट की बीमारी है।

शरीर के भीतर जाने के बाद ये वायरस इंसान के लिए सांस लेने में तकलीफ पैदा कर सकता है, इसके बाद सांस की नली और फेफड़ों पर हमला करता है, यहां ये एक तरह की 'कोरोना वायरस फैक्ट्रियां' यानी फेफड़ों को छोटे-छोटे एयरसैक बना देता है। एयरसैक में पानी जमने

लगता है और इस कारण आपको सांस लेने में तकलीफ होती है और आप लंबी सांस नहीं ले पाते हैं। इसका सीधा असर किडनी पर पड़ सकता है। कुछ लोगों में संक्रमण के शुरुआती वक्त से ही लक्षण दिखाई देने लगते हैं। वायरस का इन्क्यूबेशन पीरियड भी लोगों में अलग-अलग हो सकता है। औसतन ये पाँच दिन का होता है। संक्रमित लोगों में से दस में से आठ में ये लक्षण बेहद मामूली होते हैं और ये लक्षण बुखार और खांसी होते हैं, बदन दर्द, गले में खराश और सिर दर्द भी हो सकता है।

आपका शरीर वायरस को एक विदेशी हमलावर की तरह देखता है और पूरे शरीर को संकेत देता है कि शरीर पर हमला हुआ है। इसके बाद वो वायरस को खत्म करने के लिए

साइटोकाइन नाम का केमिकल छोड़ना शुरू करता है, शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति पूरे जोर से हमले का जवाब देने में जुट जाती है और इस कारण आपको बदन दर्द और बुखार भी हो सकता है। कोरोना वायरस के कारण होने वाली खांसी अमूमन सूखी खांसी होती है, जिसमें बलगम नहीं आता लेकिन कभी-कभी ये मामला खराश तक भी सीमित हो सकता है, ऐसे मामलों में बलगम में फेफड़ों की मृत कोशिकाएं होती हैं। इन लक्षणों में अक्सर डॉक्टर आपको आराम करने, खूब पानी पीने और पैरासिटामोल लेने के लिए कहते हैं। इसके लिए अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं होती। जिन लोगों का इम्यून सिस्टम वायरस से लड़ने में कामयाब होता है,



उनका स्वास्थ्य एक सप्ताह के भीतर सुधरने लगता है।

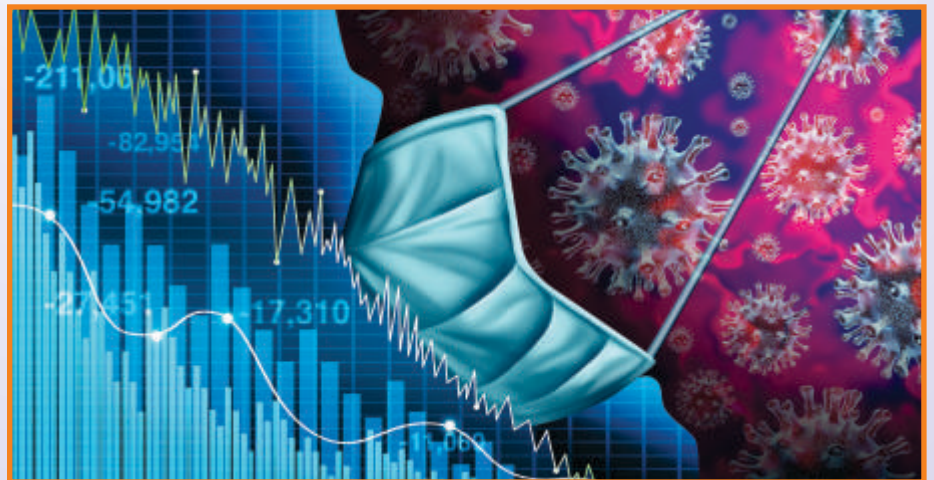
कोरोना वायरस सूखी सतहों पर 8 से 10 दिनों के लिए सक्रिय रह सकता है। आमतौर पर सभी वायरस गर्मी बढ़ने पर निष्क्रिय या नष्ट हो जाते हैं, लेकिन कोरोना वायरस 37 डिग्री सेल्सियस पर मानव शरीर में जीवित रहता है, अभी तक कोविड-19 को निष्क्रिय करने के लिए सटीक तापमान का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। हालांकि, वैज्ञानिकों के पास कोविड-19 पर गर्मियों के तापमान के प्रभाव पर कोई निश्चित जवाब नहीं है। ज्यादातर एक्सपर्ट्स ने इससे बचने के लिए सावधानियां बरतने की सलाह दी, तो कुछ ने गर्मी से कोरोना वायरस के प्रभाव के बारे में कहा कि जिन देशों में गर्मी ज्यादा है, वहां भी कोरोना वायरस का प्रकोप देखने को मिल रहा है। ऐसे में इस वायरस के बारे में ज्यादा कुछ अभी कहा नहीं जा सकता है। हालांकि, कोरोना वायरस को तीन चीजों के प्रति संवेदनशील माना जाता है — सूर्य का प्रकाश, उच्च तापमान और आर्द्रता। सूरज की रोशनी वायरस की क्षमता को प्रभावित करती है, जबकि गर्मी इसे निष्क्रिय कर देती है।

किसी भी बीमारी या महामारी की दो प्रमुख चुनौतियों में एक उसका

इलाज और दूसरा उससे जुड़ी भ्रांतियों का इलाज होती हैं। हर बीमारी अपने साथ नई भ्रांतियां, नए मिथक लेकर आती है। इन भ्रांतियों से लड़ना भी कम मुश्किल नहीं होता। लेकिन क्या कोरोना वायरस से लड़ने के लिए दुनिया और भारत सक्षम है? इनकी रोकथाम के लिए कोई टीका (वैक्सीन) या वायरसरोधी (Antiviral) अभी उपलब्ध नहीं है और उपचार के लिए प्राणी की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है और रोग लक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डीहाइड्रेशन, ज्वर, आदि) का उपचार किया जाता है, ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे।

दुनिया भर की सरकारें कोरोना वायरस को लेकर लोगों को जागरूक करने पर ध्यान दे रही हैं। जानकारों का कहना है कि इसके संक्रमण को फैलने से रोककर ही इसे काबू किया जा सकता है। इसके लक्षणों को

पहचानकर ही कोरोना वायरस की बेहतर रोकथाम की जा सकती है। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस संक्रमण की गंभीरता को समझते हुए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए कोरोना वायरस पर सार्क देशों के प्रमुखों से चर्चा की और देश की जनता को भी सीधे संबोधित करके जागरूक करने का उल्लेखनीय प्रयास किया। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं जिनमें हाथों को साबुन से धोना, अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तेमाल करना, खांसते और छींकते समय नाक और मुंह को रुमाल या टिशू पेपर से ढककर रखना, जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों उनसे दूरी बनाकर रखना, अंडे और मांस का सेवन न करना तथा जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचना आदि शामिल हैं। अतः बचाव ही उपचार है।



कोविड-19 : एक महामारी



सुश्री बबीता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

कोरोना वायरस रोग (कोविड-19) एक संक्रामक रोग है, जो एक नए खोजे गए कोरोना वायरस के कारण होता है। कोरोना वायरसों का एक बड़ा परिवार है जो जानवरों एवं मनुष्यों में बीमारी के कारण हो सकते हैं। मनुष्यों में, कई कोरोना वायरस को सामान्य सर्दी से लेकर अधिक गंभीर बीमारियों जैसे कि मिडिल ईस्ट श्वसन सिंड्रोम (MERS) और सिवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (SARS) के कारण श्वसन संक्रमण का कारण माना जाता है। सबसे हाल ही में खोजे गए कोरोना वायरस का कारण कोरोना वायरस रोग कोविड-19 है। यह नया वायरस और बीमारी दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान में फैलने से पहले अज्ञात थी। कोविड-19 अब वैश्विक स्तर पर अनेक देशों को प्रभावित करने वाली महामारी है।

कोविड-19 के सबसे सामान्य लक्षण हैं बुखार, सूखी खांसी और थकान। अन्य लक्षण जो सामान्य नहीं हैं जो कुछ रोगियों को प्रभावित कर सकते हैं उनमें लगातार पीड़ा एवं दर्द, नाक में खून का जमाव, सिर दर्द, कंजाक्वाइटिस, गले में खराश, दस्त, स्वाद एवं गंध का पता न लगना या त्वचा पर दाने या उंगलियों एवं पैर की उंगलियों में धब्बे पड़ना शामिल है। ये लक्षण आमतौर पर हल्के होते हैं और धीरे-धीरे प्रारंभ होते हैं। कुछ लोग संक्रमित हो जाते हैं परंतु उनमें बहुत हल्के लक्षण होते हैं। अधिकांश लोगों (लगभग 80 प्रतिशत) को अस्पताल में उपचार की आवश्यकता के बिना बीमारी से उबरना पड़ता है। कोविड-19 से ग्रसित हर 5 में से 1 व्यक्ति गंभीर रूप से बीमार हो जाता है और उसको सांस लेने में कठिनाई होती है। वृद्ध व्यक्ति और उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) हृदय और फेफड़ों की समस्याओं, मधुमेह

(डायबिटीज) या कैंसर जैसी अंतर्निहित चिकित्सा समस्याओं वाले व्यक्तियों में गंभीर बीमारी के विकसित होने का खतरा अधिक होता है। हालांकि, किसी को भी कोविड-19 हो सकता है और वह गंभीर रूप से बीमार हो सकता है। सभी उम्र के लोग जो बुखार और/या खांसी से संबंधित, सांस लेने में कठिनाई, सीने में दर्द/दबाव या बोलने में असमर्थता, चलने में कठिनाई महसूस करते हैं उन्हें तुरंत चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए। यदि संभव हो, तो पहले स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता या सुविधा प्रदाता को बुलाने की सिफारिश की जाती है, ताकि रोगी को सही क्लिनिक में निर्दिष्ट किया जा सके।

लोगों को कोविड-19 से ग्रसित अन्य लोगों से यह वायरस ग्रसित कर सकता है। यह बीमारी मुख्य रूप से नाक या मुंह से छींकने या खाँसने

अथवा बोलने पर छोटी बूंदों के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलती है। ये बूंदे अपेक्षाकृत भारी होती हैं दूर तक फैलती और जल्दी से जमीन पर आ जाती हैं। वायरस से संक्रमित व्यक्ति से इन बूंदों में सांस लेने पर कोविड-19 शरीर में प्रवेश कर सकता है। यही कारण है कि दूसरों से कम से कम 1 मीटर की दूरी रखना आवश्यक है। ये बूंदें व्यक्ति के चारों ओर की वस्तुओं एवं सतहों पर जैसे टेबल, दरवाजे का दस्ता और दरवाजे के हैंडिल पर चिपक जाती हैं, लोग इन वस्तुओं या सतहों को छूकर संक्रमित हो सकते हैं, फिर अपनी आंखों, नाक या मुंह को छूते हैं और संक्रमित हो जाते हैं। यही कारण है कि अपने हाथों को साबुन और पानी से नियमित रूप से धोना या एल्कोहल आधारित सैनिटाइजर से

हाथों को साफ करना महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

कोविड-19 ने दुनिया भर के वैज्ञानिक समुदाय को उन तरीकों से प्रस्फुटित किया, जो पहले किसी अन्य प्रकोप में नहीं किए थे। नवम्बर 2019 तक, बहुत कम वैज्ञानिक कोरोना वायरस पर काम नहीं कर रहे थे। हालांकि, जैसे-जैसे यह बीमारी एक महामारी में फैलने लगी, बहुत से वैज्ञानिकों ने इस पर काम करना प्रारंभ किया और नोवल कोरोना वायरस (SARS-CoV-2) एक अभूतपूर्व पैमाने पर शोध का केन्द्र बने, इसमें डायग्नोस्टिक्स, थेरेपी और साथ ही टीके बनाना शामिल है। बेशक, इन सभी को वायरस जीव विज्ञान की एक उचित समझ और होस्ट वायरस के साथ अंतःक्रिया जिसके विषय में पहले से बहुत कम

जानकारी थी। वर्तमान में दुनिया भर में विकास के विभिन्न चरणों के तहत 100 से अधिक वैक्सीन अणु हैं। कुछ संतोष की बात है कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक शोधकर्ता द्वारा और दूसरे हांगकांग में सूचीबद्ध बायोटेक फर्म कैनिनो बायोलॉजिक्स, पहले से ही नैदानिक परीक्षणों के द्वितीय चरण में है। अमेरिकी कांग्रेस के कई सदस्यों ने खाद्य और औषधि प्रशासन के आयुक्त और स्वास्थ्य एवं मानव सेवा के सचिव को पत्र लिखा ताकि वायरस के साथ जान-बूझकर संक्रमित स्वयंसेवकों को वैक्सीन के परीक्षण में तेजी लाने पर विचार करने के लिए महामारी की वैश्विक लागत का हवाला दिया जा सके और अधिक से अधिक संख्या में मनुष्यों पर इसका परीक्षण करके इसे कारगर बनाया जाए।



लॉकडाउन पर भावना भारी



एस.सी. मित्तल (सेवानिवृत्त)
94 / 75, मानसरोवर, जयपुर

दिसम्बर, 2019 में चीन में जन्मे कोरोना संक्रमण ने धीरे-धीरे दुनिया के लगभग सभी देशों में अपने पाँव पसार लिये। शायद ही कोई देश इस जानलेवा बीमारी से अप्रभावित रहा हो। लाखों निर्दोष लोग मई, 2020 के पहले पखवाड़े तक बे-मौत काल के गाल में समा गये। करोड़ों लोग संक्रमित हो गये। अभी तक इस महामारी के उपचार के लिए कोई समुचित दवा नहीं बन पाई। विश्व में सरकारों के पास अपने नागरिकों को बचाने के लिए लॉकडाउन घोषित करके उन्हें सुरक्षित रहने, आपस में समुचित सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) बनाए रखने, मुँह पर मास्क लगाने, बाहर से घर आने पर साबुन से हाथ धोने, सब्जियाँ धो कर बनाने जैसे उपाय बताने और लॉकडाउन का पालन कराने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं बचा। अतः भारत सरकार ने भी 22 मार्च, 2020 को एक दिन का सांकेतिक लॉकडाउन करके

समूचे देश में घोषित किया। परिणाम उत्साहजनक होने के फलस्वरूप पूरे देश में 25 मार्च से सम्पूर्ण लॉकडाउन लागू किया गया। चौथे चरण का लॉकडाउन 31 मई, 2020 तक घोषित किया गया।

परिवार का हर सदस्य विशेषकर 60 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक तथा दस वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए घर से बाहर निकलना पूर्णरूपेण वर्जित था।

मेरा पौत्र आठ वर्षीय यश भी अपने घर की चारदीवारी में बन्द रह कर लॉकडाउन का पालन कर रहा था। 17 फरवरी, 2020 को उसने पूर्ण उल्लास के साथ अपना जन्मदिन मनाया था। अब 10 मई को मदर्स डे आ गया। वह इस दिवस को भी बड़े चाव से मनाने की सोच रहा था परन्तु 17 फरवरी को बाजार खुले थे। वह मदर्स डे पर भी अपनी माँ कुमुद को एक अच्छा गिफ्ट देने का मन बना चुका था। उसकी इस बात के उत्तर

में यश की माँ बताती — बेटा! बाहर कोई भी दुकान नहीं खुली है। सब बन्द है इसलिए कोई गिफ्ट लाना संभव नहीं है। वह उसको समझाने लगी — कोई बात नहीं। इस बार कोई गिफ्ट न सही। तुम मुझे अगले वर्ष के मदर्स डे पर दो गिफ्ट दे देना।

यश बोला — ऐसे थोड़ी ना होता है माँ! गूगल पर सर्च कर लो क्या पता कोई दुकानदार ऑनलाइन सप्लाई कर दे।

कुमुद ने सड़क का नजारा बालकनी से दिखाते हुए पूछा — बता, तू ही बता, सड़क पर तुझे कोई आता-जाता नजर आ रहा है? जब सम्पूर्ण लॉकडाउन पूरे शहर में है तो है। क्या कर सकते हैं। 9 मई की रात तक यश बड़ा परेशान था।

एक बार यश बोला — माँ! मामा को कहो। वे बल्लभगढ़ से ले आयें।

यश की माँ फिर बोली — बेटा! तेरे समझ में क्यों नहीं आ रही कि बाजार बन्द हैं। तू इतना दुःखी मत हो।

यश कभी बालकनी में झाँकने लगता। कभी पलंग पर घुटना खड़ा करके दूसरा पैर उस पर रख कर अपनी समस्या का समाधान सोचता। कभी माथे पर बाँह के ऊपर बाँह रख कर पंखे को निहारता। खैर, 9 मई तो जैसे-तैसे बीत गई परन्तु अगले दिन वह बहुत बेचैन था। कभी कॉपी पैन उठाता, उस पर कुछ लिखता, कोई चित्र सा बनाता। माँ देखने लगती तो कॉपी बन्द कर देता।

लगभग नौ बजे प्रातःकाल का समय था। उसकी माँ बैडरूम में बैठी थी। यश ने कहा — माँ! आप थोड़ी देर इसी बैडरूम में बैठे रहना। यह कह कर यश ने उस रूप का बाहर से सांकल लगा दी और अपनी माँ को उसमें बंद कर दिया।

यश की माँ चिल्लाई — ये क्या कर रहा है? दरवाजा खोल।

यश ने उत्तर दिया — माँ! आप थोड़ी देर इंतजार करो और किसी प्रकार की चिन्ता न करो। अभी खोलता हूँ।

यश ने किचन की शैल्फ में से सेन्डविच मेकर उतारा, बिजली बोर्ड में लगाया। फ्रिज में से ब्रैड, बटर,

पनीर निकाला। दो ब्रैडपीस के बीच में पनीर और थोड़ा सा बटर, नमक मिर्च तथा सॉस की परत बिछाई। घी लगाकर उसे सेन्डविच मेकर में पैक कर दिया। सेन्डविच को पक जाने पर निकाला और फोइल पेपर में लपेट कर प्लेट में रखा। प्लेट को ट्रे में रखा, एक कप में दूध लिया। कॉपी के एक पृष्ठ पर लिखा — हेप्पी मदर्स डे टू यू। फाड़ा और ट्रे में रखा। यश ने बैडरूम की सांकल खोली और अपनी माँ के सामने ट्रे रख दी।

यश की माँ बोली — क्या है ये?

आठ वर्ष का वह अबोध परन्तु माँ के प्रेम से भरी भावना वाला वह बालक

बोला — माँ! आपको मदर्स डे की बहुत-बहुत बधाई।

माँ ने फोइल पेपर खोला तो दंग रह गई और बोली — क्या तू सेन्डविच भी बना सकता है। आज तो तूने कमाल कर दिया। तू अपनी माँ से इतना प्यार करता है। तूने न केवल आज गजब की भावनाओं का प्रदर्शन किया है बल्कि लॉकडाउन को हरा दिया है। यह कहकर कुमुद ने यश को गले लगा लिया। बोली — लॉकडाउन पर भावना भारी पड़ी है आज। जहाँ चाह वहाँ राह। समस्या है तो समाधान भी है। हिम्मत मर्दा, मददे खुदा। वाह! बेटा वाह! धन्यवाद। मुझे गिफ्ट स्वीकार है।



**कठिन काम आसान हो, यदि हो सबका सहयोग,
सहयोग से ही कटेगा, परभाषा का रोग।**

— संपादक

झूठा सच

मदन गोपाल शर्मा

60, अनुपम नगर,
ग्वालियर, मध्य प्रदेश

सच भी कभी झूठा हो सकता है यह अपने आप में आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है और इस पर आम आदमी शायद ही विश्वास करे, पर यह एक तथ्य है जिसको नकारा नहीं जा सकता। हमारे सामाजिक, राजनैतिक व पारिवारिक जीवन में झूठा सच बोलने के सैकड़ों उदाहरण मिल जाएंगे, यह बात अलग है कि इसको सही रूप से सबके सामने मानने में अधिकांश लोग कतराते हैं। वैसे भी अनादिकाल से प्रिय सत्य बोलने और अप्रिय सत्य बोलने से बचने की बात हमारे देश में कही जाती रही है। इस अप्रिय सत्य से बचने के लिए ही झूठे सच का सहारा लिया जाता है, यह कहाँ तक सही है और कहाँ तक गलत है इस पर चर्चा करना व्यर्थ है पर यह गलत नहीं है कि झूठा सच बोला जाता रहा है और आज भी बोला जा रहा है और भविष्य में भी बोला जाता रहेगा। कुछ लोग इसे नैतिकता से जोड़ कर भी देखते हैं और इसकी आलोचना भी करते हैं पर देश, काल, परिस्थिति के अनुसार शायद ऐसा करना एक

मजबूरी भी हो सकती है, यह ठीक है कि सच को झूठलाना अच्छी बात नहीं है पर कड़वे सच के दुष्परिणाम को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

महाभारत का 'नरो वा कुंजरो वा' प्रसंग सभी जानते हैं युधिष्ठिर से ऐसा कहलवाने में सत्य के साथ खिलवाड़ किया गया, इसमें कोई संदेह नहीं है और यह अप्रिय सत्य भी नहीं था बल्कि रणनीति का एक सोचा समझा हिस्सा था। किन परिस्थितियों में यह झूठा सच बोला गया, यह विचारणीय नहीं है बल्कि विचारणीय यह है कि बोलने वाले की संचित प्रतिष्ठा को दांव पर लगा कर यह कार्य कराया गया जिससे सामने वाला इस झूठे सच को सच मान ले। किसी अन्य से कहलवाया जाता तो शायद लक्ष्य अधूरा ही रह जाता। यह उस जमाने की बात है जब नैतिकता का अस्तित्व आज के मुकाबले बहुत ज्यादा था, आज तो नैतिकता और सत्य शायद घोड़े बेच कर सो गया है यही कारण है कि अनैतिकता और झूठ का साम्राज्य दिन दूरी रात

चौगुनी गति से बढ़ रहा है और अमर बेल की तरह चारों ओर छा गया है। यह तो ठीक है कि किसी बहुत बड़े संकट से बचने या बहुत बड़े हित के लिए यदाकदा सच को छिपाने व झूठा सच बोलने में शायद ज्यादा बुराई नहीं है पर इसे आधार बना कर ज्यादातर मामलों में सच को झूठलाना कतई ठीक नहीं है और इससे सच के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। अच्छा सच और झूठ को अलग-अलग रहने दें एवं सच व झूठ का मिश्रण न होने दें।

एक ऐतिहासिक प्रसंग है जिसमें जान बचाने के लिए झूठ बोला गया। यह झूठ जानबूझ कर बोला गया क्योंकि यदि सच बोला जाता तो एक महत्वपूर्ण व्यक्ति की जान चली जाती। मुझे लगता है कि एक अच्छे उद्देश्य के लिए बोला गया झूठ शायद अनैतिक नहीं है और उतना ही नैतिक है जितना कि कोई सच। ऐसे ही सच को अप्रिय सच कहा गया है। बात उस समय की है जब महादजी सिन्धिया और अहमद शाह अब्दाली के मध्य भयंकर युद्ध चल रहा था,

इसमें लड़ते-लड़ते महादजी सिन्धिया घायल होकर युद्ध भूमि में गिर कर अचेत हो गए। ऐसी स्थिति में राणो जी नामक एक भिक्षु ने देखा कि घायल राजा को यहाँ से नहीं हटाया तो उनकी मृत्यु हो जाएगी। उसने महादजी सिन्धिया को अपने बैल पर डालकर जंगल की ओर जाने का निश्चय किया और घने जंगल में ले जाकर सिन्धिया को छुपा दिया। कुछ ही देर में कुछ सैनिक आते हुए दिखाई दिए। राणो जानबूझ कर उनके पास आ गया जिससे ये लोग महादजी सिन्धिया के पास न आ सकें। सैनिकों ने राणो से पूछा – क्या उसने महादजी सिन्धिया को इधर भागते हुए देखा है? उसने कुछ कहने का प्रयास किया तो एक सैनिक ने उसकी गर्दन पर तलवार

लगाकर कहा – यदि झूठ बोला तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायेगी। राणो ने स्थिति को समझने में देर नहीं की, उसने तुरंत कहा – मैं एक सच्चा मुसलमान हूँ, अल्लाह की कसम मैंने आपको नहीं देखा। राणो की बात पर सैनिकों को विश्वास हो गया और वे वापस चले गए। इस तरह महादजी सिन्धिया की जान बच गई। राणा ने यह झूठ नेकी के लिए बोला था। अपने किसी स्वार्थ के लिए नहीं। उसका विश्वास था कि नेकी के लिए बोले गये झूठ को अल्लाह भी माफ कर देता है।

ये दोनों ही झूठे सच थे। एक सच कई हजार साल पुराना है और एक कई सौ वर्ष पुराना है। प्रश्न यह है कि झूठ का डर दिनोंदिन कम होता जा

रहा है और आज तो झूठ बोलने में शायद किसी को भी डर नहीं लगता। कौआ तो पहले भी झूठों को नहीं काटता था और न आज काटता है, केवल डर का अस्तित्व था जिसके कारण लोग झूठ बोलने से डरते थे। आज झूठ शपथ लेकर भी सरेआम बोला जाता है, हर क्षेत्र में झूठ का व्यापक अस्तित्व बढ़ता जा रहा है, इसे रोक पाना असंभव लग रहा है। झूठ का अनैतिकता से गहरा नाता है, यह सबको पता है फिर भी लोग बेझिझक सार्वजनिक रूप से झूठ बोलते हैं। आज कल टेलीविजन का युग है फिर भी लोग झूठ बोल जाते हैं और पकड़े जाने पर पलट जाते हैं। यह आश्चर्यजनक जरूर है पर यह झूठा सच नहीं बल्कि सच्चा सच है।



वैतनिक रोजगार से स्वरोजगार की ओर

कमल कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)– II
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

मनुष्य अपने जीविकोपार्जन के लिए जो कार्य करता था, करने पड़ते हैं, उसे रोजगार कहते हैं। भारत में लगभग 48.7 करोड़ लोग कार्यशील हैं यानि कामगार हैं। जिसमें लगभग 94 प्रतिशत लोग असंगठित क्षेत्रों में काम करते हैं। असंगठित कहने का अभिप्राय यह है कि वे बिना किसी लाइसेंस, जी.एस. टी. या फिर अन्य कोई टैक्स अदा करते हैं। छोटे-मोटे दुकानदार जैसे किराना, कपड़ा बेचने वाले, सब्जी, ठेले, रिक्शा, नाश्ते का ठेला, मकान बनाने वाले मजदूर, मिस्त्री आदि असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले कुछ उदाहरण हैं। संगठित क्षेत्रों में लगभग 2.75 करोड़ लोग काम कर रहे हैं जिसमें से 1.73 करोड़ लोग सरकार के स्वामित्व वाली इकाइयों में काम करते हैं। संगठित और असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों की उत्पादकता और कमाई में काफी अंतर होता है। असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों की

उत्पादकता कम होती है और उनकी उस उत्पादकता या सेवा के बदले जो मजदूरी मिलती है वो भी काफी कम होती है। वही संगठित क्षेत्रों में काम करने वाले की उत्पादकता अपेक्षाकृत अधिक होती है और उनकी उत्पादकता या सेवा के बदले मजदूरी भी पर्याप्त मिलती है। निजी उपक्रमों में काम करने वाले कुछ ऊँचे पदों वाले पदाधिकारियों का वेतन तो काफी अधिक होता है वहीं निम्न वर्गीय कर्मचारियों के वेतन अपेक्षाकृत काफी कम होते हैं। वहीं लोक उपक्रम के कर्मचारियों के वेतन सही मानदंड पर दिये जाते हैं।

संगठित क्षेत्रों में रोजगार की कम वृद्धि दर

सन् 1991 में भारत में नई आर्थिक नीति अपनाई गयी, जिसके अंतर्गत भारत में खुले बाजार की नीति अपनाई गयी। आयात और निर्यात में वृद्धि हुई। कुछ नई कंपनियाँ, बैंक खुलने लगे। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश

आने लगा। रोजगार के अवसर में वृद्धि हुई किंतु बहुत ही कम। 1983-94 में 1.2 प्रतिशत वृद्धि हुई। 1994-2008 में केवल 0.05 प्रतिशत और 2010-11 में 1.0 प्रतिशत लगभग। ऐसी वृद्धि भारत जैसी तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले देश के लिए पर्याप्त नहीं है। सितम्बर 2018 तक भारत में 3.1 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। भारत एक युवाओं का देश है जहाँ 63.6 प्रतिशत लोग 15-69 वर्ष के हैं जो लगभग कार्यशील होते हैं। इतनी बड़ी आबादी का इतना बड़ा हिस्सा अगर बेरोजगार होगा तो यह किसी भी देश के लिए सही नहीं होगा। भारत का सकल घरेलू उत्पाद लगभग 3 ट्रिलियन है दूसरी तरफ भारत के सबसे धनी 10 प्रतिशत लोगों के पास कुल सम्पत्ति का 80 प्रतिशत है। जबकि केवल 1 प्रतिशत लोग जो सबसे अमीर हैं कुल सम्पत्ति का 58.4 प्रतिशत भाग उनके पास है। इस हिसाब से देखा जाए तो 90 प्रतिशत गरीब है या गरीबी के स्तर से

भी नीचे हैं। ये लोग किसी तरह अपनी शिक्षा सरकारी स्कूलों में करते हैं, फिर आस-पास के ही सरकारी महाविद्यालयों से आगे की पढ़ाई करते हैं। कुछ बच्चे पढ़ाई और छोटे-मोटे काम भी करते हैं ताकि आर्थिक तंगी से निपटा जा सके। भारत का आर्थिक विकास भी सभी राज्यों में समान रूप से नहीं हुआ है। कुछ राज्य आर्थिक रूप से बहुत पीछे हैं जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश एवं पूर्वी राज्य आदि।

इन आर्थिक रूप से पिछड़े राज्यों में से किसी भी प्रकार के उद्योग, कल-कारखानों का विकास नहीं हुआ है। इन क्षेत्रों में कम पढ़े लिखे युवा, मजदूर, मौसमी बेरोजगार आदि अपेक्षाकृत उन्नत राज्यों या क्षेत्रों में काम करने जाते हैं। जो युवा अपनी आर्थिक समस्याओं को झेलते हुए किसी तरह पढ़-लिख लेते हैं उनकी केवल एक ही आस होती है, सरकारी नौकरी। जिनकी शारीरिक स्थिति रक्षा विभाग में जाने लायक होती है वह पुलिस, एयरफोर्स, फौज आदि की तैयारी करने लगते हैं और बाकी लोग सामान्य प्रतियोगिता परीक्षा जैसे बैंक, एस.एस.सी. आदि की तैयार करने लगते हैं। पढ़े-लिखे बेरोजगारों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है और सीटों की संख्या घटती, जिसके कारण

प्रतियोगिता परीक्षा को पास कर पाना बहुत ही जटिल होता जा रहा है। दस हजार के पदों की बहाली पर दस लाख या कभी-कभी उससे भी अधिक आवेदन आते हैं। नौकरी की इतनी अधिक मांग को देखते हुए नौकरी दिलवाने वालों का एक गिरोह भी तैयार हो गया है, जो पैसे और घूस खिलाकर नौकरी दिलाने का वादा करके लोगों को ठग रहे हैं। इन लोगों के बहकावे में युवा आसानी से आ रहे हैं क्योंकि इसके अलावा उन्हें कोई और रास्ता दिखता भी नहीं क्योंकि इनके पास अन्य कार्य कर पाने की कुशलता भी नहीं है। जब ये युवा नौकरी पाने में नाकाम हो जाते हैं तो खेती-बाड़ी या फिर अगर इसमें कमी आती है तो कोई छोटी-मोटी दुकान खोलकर बैठ जाते हैं। जब तक उम्र रहती है सरकारी नौकरी लगने की आशा रखते हैं। यह प्राइवेट संस्थाओं में ज्यादा प्रयास नहीं करते क्योंकि ज्यादातर इंग्लिश नहीं बोल पाते और कुशल भी नहीं होते।

सरकार की भी अपनी मजबूरियाँ हैं। इतनी नौकरी आखिर वो कहाँ से लायेगी। ऊपर से सरकार द्वारा किया जा रहा विनिवेश बेरोजगारों को और भी डरा रहा है अब भविष्य क्या होगा। अतः उन्हें या तो खेती बाड़ी या फिर अगर व्यावसायी वर्ग के हैं तो उसी

छोटी दुकान पर बैठना होगा जो एक अलग समस्या में है। अब छोटे से दुकानों में लोग खरीददारी भी कम करने लगे हैं। हर छोटे मोटे शहरों में मॉल खुलने लगे हैं जिसमें एक ही छत के नीचे सब कुछ मिलने लगा है। छोटे शहरों में भी 3-4 मॉल खुल गये हैं जिससे प्रतिस्पर्धा कर पाना छोटे दुकानदारों के बूते की बात नहीं। इस तरह पिछड़े क्षेत्रों में वैतनिक रोजगार ना मिल पाना स्थिति को और भी खराब कर रहा है। हमारे देश अधिकांश क्षेत्र जो पिछड़े हैं की शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी है कि इस शिक्षा को प्राप्त करके केवल वैतनिक कार्य ही किया जा सकता है। किसी भी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा या कुशलता उनके पास नहीं होती तो अंततः केवल एक ही रास्ता दिखता है, वैतनिक रोजगार प्राप्त करना।

स्वरोजगार का मतलब

वैतनिक रोजगार के घटते अवसर को देखते हुए, सरकार स्वरोजगार को बढ़ावा दे रही है। स्वरोजगार का मतलब है – रोजगार का वह प्रारूप जिसमें कार्य करके जीविकोपार्जन करना जैसे पापड़ बनाना, अचार, मिठाई, आटा मिल, चावल मिल आदि लगाकर खुद का रोजगार करना और कुछ लोगों को उसमें रोजगार भी देना। भारत जैसे विशाल जनसंख्या

वाले देश में बेरोजगारी को कम करने का यह बहुत ही अच्छा समाधान है। इससे देश की उत्पादकता भी बढ़ेगी, और अधिक से अधिक लोगों के हाथ में पैसा जायेगा तो मांग भी बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त गरीबी भी कम होगी। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान है तो कृषि आधारित छोटे उद्योगों को या कुटीर उद्योग को अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए। सरकार स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए तरह-तरह की योजनाएं लाई है।

1. **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना** – इसकी शुरुआत अप्रैल 2015 को हुई। इसके अंतर्गत सरकार छोटे उद्यमों को लगाने के लिए छोटी रकम लोन पर देती है। सरकार लोन को चुकाने के लिए 5 वर्ष का समय देती है। इस योजना में महिलाओं पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। इसके अंतर्गत तीन तरह के लोन दिये जाते हैं :—

- क) शिशु लोन ₹ 50000 रुपये तक
- ख) किशोर लोन ₹ 50000 से ₹ 5 लाख तक
- ग) तरुण लोन ₹ 5 लाख से ₹ 10 लाख तक

2. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना — इसका उद्देश्य देश के युवाओं को उद्योगों से जुड़ी ट्रेनिंग देना है जिससे उन्हें रोजगार पाने में

मदद मिल सके। इसमें युवाओं को ट्रेनिंग देने की फीस का भुगतान सरकार खुद करती है। इसके बाद सरकार उन्हें सर्टिफिकेट देती है। समय-समय पर होने वाले रोजगार मेले में इस सर्टिफिकेट के आधार पर रोजगार दिया जाता है।

3. **स्टैंड-अप इंडिया** – इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जातियों, पिछड़े वर्ग, जनजातियों और महिलाओं को लोन दिया जाता है ताकि उनमें उद्यमशीलता को बढ़ावा मिल सके। परियोजना या व्यवसाय की स्थापना करने के लिए ₹ 10 लाख से ₹ 1 करोड़ तक का लोन दिया जाता है।

4. **गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GEM)** – इसके द्वारा सूक्ष्म, लघु और मध्यम वर्ग के उद्योग सरकार

द्वारा प्लांट, मशीनरी, फर्नीचर आदि खरीद किये जाने पर अपने उत्पादों को बेच सकते हैं। विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा आवश्यक सामान्य उपयोग के सामान और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद की जाती है।

इसके अतिरिक्त स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए कुछ राज्य सरकारों ने भी योजनाएं चलाई हैं जैसे एक उदाहरण है उत्तर प्रदेश की सरकार ने एक जिला एक उत्पाद योजना को बढ़ावा दिया। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के हर एक जिले का अपना एक विशेष उत्पाद हुआ करता है, जिसके लिए वो काफी प्रसिद्ध भी थे। लेकिन समय के साथ वो विलुप्त होने की कगार पर पहुँच गये थे। कुछ अभी भी प्रसिद्ध है जैसे बनारसी साड़ी, फिरोजाबाद की



चूड़ियाँ आदि। अंतर्राष्ट्रीय मार्केट में इसकी पहुँच के लिए सरकार नई तकनीक और पूँजी प्रदान कर रही है ताकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार के अनुसार गुणवत्ता प्राप्त कर सके तथा लागत में कमी लाकर बड़े बाजारों में प्रतिस्पर्धा कर सके।

उपर्युक्त सरकार द्वारा उठाये गए कदम काफी सराहनीय है और इससे कई बेरोजगार युवाओं को काफी फायदा हुआ है। पढ़े-लिखे युवाओं ने काफी नई स्टार्ट-अप कंपनियाँ भी स्थापित की है जिसमें और भी सहकर्मी सम्मिलित है। ये कंपनियाँ शिक्षा, यातायात, रेस्टोरेंट, भोजन हर तरह के कार्यों के लिए स्थापित की गई है। इसमें कुछ बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है लेकिन कुछ की स्थिति खराब भी हो गई है।

स्वरोजगार बेरोजगारी को दूर करने का एक अच्छा विकल्प है किन्तु इसके जोखिम और व्यापार की समझ के अभाव के कारण अभी भी युवा वैतनिक रोजगार खासकर सरकारी नौकरी को ही अधिक महत्व देते हैं। कर्ज लेकर स्थापित किए गए नये छोटे उद्योगों को, पहले से स्थापित पुराने उद्योगों तथा बड़े पूँजीपतियों से

कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। जिसमें नये व्यक्तियों को अनुभव की कमी के कारण नुकसान की संभावना अधिक होती है। बड़े पूँजीपति मार्केट में एकाधिकार बनाए रखने के लिए कभी-कभी लागत से कम मूल्य पर भी वस्तु एवं सेवाएं देने लगते हैं जिसमें नये और कम पूँजी के व्यवसाय अधिक समय तक सह नहीं पाते और उनका पतन हो जाता है। इन्हीं सब कारणों से वैतनिक रोजगार की प्राथमिकता अभी भी काफी अधिक है। एक चपरासी की नौकरी के लिए भी लाखों पढ़े-लिखे यहां तक कि पी.एचडी. किए युवा भी आवेदन करते हैं।

क्या स्वरोजगार से बेरोजगारी की समस्या का समाधान संभव है?

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए, केवल स्वरोजगार से बेरोजगारी का समाधान संभव नहीं। यहां पर बेरोजगारों की भी अनेक श्रेणियां हैं जैसे निरक्षर बेरोजगार, साक्षर बेरोजगार, अल्प पढ़े बेरोजगार, पढ़े लिखे बेरोजगार, आंशिक कुशल किंतु अनपढ़ बेरोजगार, कुशल बेरोजगार आदि। स्वरोजगार द्वारा केवल इनमें से 2 या

3 श्रेणियों के बेरोजगारों को ही रोजगार मिल सकता है। अतः सरकार को बहु-आयामी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। भारत में लोगों को उद्यमशीलता के प्रति समान और रूची का भी नितांत अभाव है। वो वैतनिक रोजगार के प्रति ही ज्यादा आकर्षित होते हैं।

भारतीय पढ़े लिखे लोग ज्यादा जोखिम उठाना भी पसंद नहीं करते। यहां तक कि व्यावसायिक शिक्षा से स्नातक और मास्टर किए हुए युवा भी नौकरी करना ही पसंद करते हैं। वैसे भी किसी भी देश में कार्य करने वाले श्रमिक और उद्यमी का अनुपात 90:10 ही होता है। अतः सरकार को अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए ज्यादा से ज्यादा रोजगार सृजित करने का प्रयास करना चाहिए।

जहां भी कामगारों की जरूरत हो वहां पर बहाली करें और कार्य केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय सरकारों को एक अभियान के तहत करना चाहिए। सरकारी विभागों में खाली पड़े रिक्त स्थानों को भरना चाहिए, ताकि कार्य भी सुचारु रूप से चले और रोजगार भी मिलता रहे।

क्रांति लाना किसी भी इंसान की ताकत के बाहर की बात है, क्रांति कभी भी अपने आप नहीं आती, बल्कि किसी विशिष्ट वातावरण, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में ही क्रांति लाई जा सकती है।

- शहीद भगत सिंह

कबीर के बीजक साखी और सबद



नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
डी-5, सूरजकुण्ड कालोनी
गोरखपुर

आठवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी के मध्य का समय वेदमत और लोकमत के समन्वय के समय के रूप में जाना जाता है। शास्त्रीय ज्ञान के धरातल का स्थान भारत का जन-मानस ले रहा था। संस्कृत का स्थान लोक भाषाएं ले रही थीं। वर्ग विशेष द्वारा फैलाई गई ऊँच-नीच की भावना से जन-जन आंदोलित था। राजनीतिक रूप से यह समय भारत के पराभव का कारण भी था क्योंकि केन्द्रीय सत्ता कमजोर होती जा रही थी। वस्तुतः पाखण्ड और संकीर्णता ने भारतीय समाज को घेर लिया था। शास्त्रीय ज्ञान के प्रति अनादर का भाव जागृत हो चला था। ऐसे समय में भारत की संत परंपरा में कबीर का अभ्युदय हुआ। संत कबीर ने समाज में व्याप्त पाखण्ड का अपनी विधा और वाणी से खण्डन किया और अपनी भिगुनियाँ भक्ति का प्रचार किया।

कबीर सच्चे अर्थों में सत्संगी संत थे। अनेक जातियों और व्यक्तियों के संपर्क में आये। यद्यपि वे काशी के निवासी थे किन्तु सुदूर-पूर्व पुरी तक उनका प्रभाव देखने को मिलता है। कबीर पंथियों का तो कहना है कि उनकी वाणी अनन्त है। कबीर के एक 'बीजक' में लिखा मिलता है :-

जेते पत्र बनसपती और गंगा की रैन।
पंडित बिचारा क्या कहै, कबीर कही मुख बैन॥

अर्थात् वनस्पति में जितने पत्ते और गंगा में जितने बालू के कण हैं, कबीर ने अपने श्रीमुख से उतना ही कहा है। कबीर ने अपने दार्शनिक सिद्धांतों को बीजक पदों के रूप में प्रस्तुत किया है। अमृतसर के गुरुद्वारे में कबीर पंथी भगत बीजक का ही पाठ करते हैं। उनका कहना है कि -

बीजक बित्त बतावई, जो बित गुप्त होय।
सबद बतावै जीव को, बूझै बिरल कोय॥

जीव के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान से ही पाया जा सकता है। कबीर का सारा साहित्य साखी, सबद, रमैनी और बीजक में ही मिलता है। बीजक आम जनता में उतना लोकप्रिय नहीं हो पाया क्योंकि कबीर पंथ के विचारक उसे परम-गोपनीय मानकर चलते हैं। इसे केवल दीक्षा अथवा गुरुमंत्र के रूप में ही प्रदान किए जाने की परंपरा चली आ रही है। बीजक को कबीर की प्रामाणिक वाणी माना जाता है। बीजक के ऊपर रीवा के राजा विश्वनाथ सिंह द्वारा रचित 'पाखंड खंडिनी' नामक टीका संवत् 1991 में प्रकाशित बताई गई है। भारतीय समाज में प्रचलित अनेक पाखंडों के विरोध स्वरूप ही यह रचना की गई है।

'साखी' संस्कृत के साक्षी शब्द का अपभ्रंश है। साक्षी का शब्दिक अर्थ गवाह है। अपनी आँखों से जो कुछ सच-सच देखे और उसका वर्णन करे वही गवाह होता है। संत

कबीर ने जिन तथाकथित सैकड़ों को देखा, उसका अनुभव किया उसे साखी के रूप में लिखा है :—

भगति भजन हरि नांव है, दूजा दुख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरन सार॥

प्रभु की शक्ति और उनके नाम का भजन (जप) यही वस्तुतः सार है और सब बातें अपार दुःख है। कबीर का कहना है कि मन, वचन और कर्म से प्रभु को याद करना ही जीवन का सार है। इसी बात पर जोर देते दूसरी साखी देखिए :—

कबीर सुमिरन सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंत सब सोधिया, दूजा देखौं काल॥

कबीर कहते हैं कि प्रभु का स्मरण ही जीवन का सार है और सब बातें बंधन में डालने वाली हैं। मैंने आदि अन्त सब कुछ छानकर देख लिया है। प्रभु के नाम के अलावा और सभी वस्तुएं विनाशकारी काल ही हैं। वे फिर कहते हैं :—

कबीर सूता क्या करै, जागि न जपै मुरारि।
इक दिन सोवन होइगा, लम्बे पाँव पसारि॥

कबीर जीव को सचेत करते हैं कि हे जीव! तू अज्ञान—निद्रा में सोते हुए क्या कर रहा है। निद्रा को त्याग कर भगवान का भजन कर। एक दिन तो तुझे पैर फैलाकर चिर निद्रा में सोना ही है।

उपनिषद ज्ञान के भण्डार है। उपनिषद में भी वर्णन आता है :—

मनस्तु द्विविधं प्रोक्तं शुद्धं च शुद्धमेव च।
अशुद्धम काम संपृक्तं शुद्धं कामविवर्जितम्॥

यह मन दो प्रकार का है एक शुद्ध और दूसरा अशुद्ध। शुद्ध मन वह है जो काम में लिप्त न हो और अशुद्ध वह है जो काम में लिप्त हो। मनुष्य का चित्त प्रवाह शुद्ध होना चाहिए। कबीर एक अद्भुत संत थे। वह कहते हैं कि

स्वच्छ रजाई होने के बावजूद मनुष्य शीत से मरा जा रहा है। स्वच्छ रजाई मनुष्य के तन की प्रतीक है। अपने पास साधन रहते हुए भी बेचारा मनुष्य जड़ता से भरा हुआ है। मानसकार गोस्वामी जी ने भी कहा है :—

जड़ता जाड़ विषम उर लागा।
गयेहु न मज्जन पाव अभागा॥

मन सदा प्रबुद्ध है, लेकिन मनुष्य उसे जड़ समझकर विषयों की ओर भागता है। फिर भी यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो जीवन में आने वाली बुराइयों को रोका जा सकता है। कबीर ने अपने एक पद में बड़े अनूठे ढंग से इस भाव को व्यक्त किया है :—

हमारे गुरु दीन्ही अजब जरी।
कहा कहौ कछु कहत न आवै अमृत रसन भरी।
याही ते मोहिं प्यारी लागै लैके गुप्त धरी।
पोंचों नाग पचीसों नागिन सूँघत तुरत मरी।
डौँइन एक सकल जग खायो सो भी देखि डरी।
कहै कबीर भया घट निरमल, सकल बियाधि टरी॥

उक्त पद द्वारा कबीर का कथन है कि गुरु द्वारा मुझको शब्द रूपी दी गयी जड़ी से मेरे सभी मानसिक और शारीरिक विकार नष्ट हो गये हैं। सारे संसार को अपने जाल में फँसाकर रखने वाली माया रूपी डायन भी गुरु द्वारा दी गई जड़ी को देखकर भयभीत होकर पीछे मुड़ गई है। इस जड़ी ने हमको निर्मल बना दिया है। कबीर का मानना था कि प्रभु का सच्चा भक्त शुद्धात्मा की स्थिति में पहुँचकर विचरण करता है। हंस की भाँति साधारण वस्तुओं को ग्रहण नहीं करता हंस केवल स्वच्छ मोती ही ग्रहण करता है। शुद्धात्मा भक्त राम के स्वच्छ नाम का ही उच्चारण करता है और उनकी कीर्ति का गुणगान करता है। प्रभु का सच्चा भक्त सदा शुभ एवं सत् में लगा रहता है, असत् और अवगुणों से उसका कोई लेना देना नहीं होता है।

महात्मा बुद्ध के मन में ज्ञान का प्रकाश फैलने पर उनके मुख से स्वयं निकल पड़ा था :—

अनेक जाति संसारं संधाविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारकं गवेसन्ती दुक्खा जाति पुनष्पुनं।
गहकारं दिट्ठोअसि पुन गेहं न काहसि।
सब्बाते फासुगा भग्गा गहकूटं बिसंखितं।
बिसंखार गतं चित्तं तडहानं खप मज्झगा।

इसका भाव है कि मैं अज्ञानवश घर बनाने वाले की खोज करता अनेक जन्मों से संसार में आता हुआ दौड़ लगाता रहा। बार—बार जन्म लेना दुखदायी है। हे प्रभु अब तुझे देख लिया हूँ। अब तू फिर घर न बना पायेगा। आपका घर टूट गया है और उसकी शहतीरें टूट गई हैं चित्त के सभी संस्कार नष्ट हो गये हैं और तृष्णा का क्षय हो गया है।

तृष्णा का क्षय हो जाना बहुत बड़ी उपलब्धि है, कबीर के बीजक साखी और सबद में भी यही भाव दृष्टिगोचर होता है। अज्ञान रूपी मकान के टूट जाने पर तृष्णा रूपी छाजन भी स्वतः गिर जाता है। दूसरे शब्दों में ज्ञानरूपी आँधी के बाद प्रेम भक्ति रूपी जल की वर्षा होती है। इस वर्षा के जल से प्रभु का भक्त नहा लेता है और फिर ज्ञान रूपी सूर्य के उदित होने पर उसके दिव्य प्रकाश से वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है।

कबीर का कहना है कि बड़े—बड़े विद्वान वेद पढ़कर और विचारकर भी अज्ञान में पड़े हुए हैं। केवल ग्रंथों के पढ़ लेने से ही कोई अपने आत्म स्वरूप को नहीं जान सकता। वेदशास्त्र का ज्ञान तो केवल वाक्य ज्ञान है। कबीर का कहना है कि —

पंडित भूले पढ़ि गुन वेदा, आयु अपनपौ जान न भेदा
संज्ञा तरपन औ लट कर्मा, ई बहुरूप करहिं अस धर्मा ...

यहाँ भाव यह है कि अधिक गर्व करने से कल्याण नहीं होता। परमात्मा सर्व—गर्व विनाशक है। वह गर्वाहारी है। विनय पत्रिका के एक सौ तेइसवें पद में गोस्वामी तुलसीदास ने भी यही कहा है :—

बिनु तव कृपा दयालु दास हित मोहन छूटै माया।
वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुन भव पार न पावै कोई।
निखि गृह मध्य दीप की बातनि, तम निवृत्ति नहिं होई।

केवल शास्त्रों की बातों से ही मोह नहीं मिटता। भेदभाव, ऊँच—नीच और जातीय मर्यादा के अभिसम को मिटाकर ही निर्वाण पद को प्राप्त किया जा सकता है। राजा जनक को देह रहते हुए भी राजवैभव होते हुए भी अभिमान नहीं था, इसलिये उन्हें विदेह कहा गया। कबीर का कहना था कि जाति सम्प्रदाय आदि के भेद केवल बनावटी हैं। आत्मा की दृष्टि से सभी एक हैं। कबीर के बीजकों, साखी और सबद का मूल भाव यह है कि सभी के भीतर जीवात्मा समान रूप से एक है। गाय पीली हो अथवा काली सबका दूध एक ही वर्ण का होता है। कबीर के उपरोक्त पदों एवं अनेक रचनाओं का निचोड़ यह है कि हे मानव, व्यर्थ में बनावटी भेदों के चक्कर में मत पड़ो। कपट और चतुराई छोड़कर भगवान का भजन करो, इसी में सबका कल्याण निहित है। इसी में मानवता का कल्याण निहित है। कबीर के सबद में अनन्यता है —

कबीरा काजर रेखहू अब तो दर्ई न जाय,
नैननि प्रीतम रमि रहा दूजा कहाँ समाय।

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है वह उन्नत हो सकता।

— डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

रावण, जानकी और पवनकुमार



बनवारी लाल सोनी
73/318-ए, टेगौर लेन,
शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर

समुद्र के तट पर शाल और तमाल वृक्षों की पंक्ति को देखते हुए अंजनि पुत्र हनुमान जी पुच्छलता को ऊपर फहराते हुए अनायास में ही नदीनाथ समुद्र को पार कर गए।

इसके अन्तर पवनकुमार ने दशरथ नंदन श्रीरामचंद्रजी की आज्ञा के अनुसार राक्षस पुरी लंका को देखकर मच्छर के समान रूप धार गणना के अयोग्य शरीर के आकार से लज्जायुक्त अशोक के वृक्ष से उतरकर उस मुद्रिका को जानकी के आगे डाल दिया। जानकी को प्रणाम करके पवनकुमार — मातः जनक नन्दिनी! जानकी — तू कौन है यहाँ? हनुमान — वानर। जानकी — यहाँ किसने भेजा है? हनुमान — तुम्हारा संदेश लेकर रघुनाथ जी ने। जानकी — यह हाथ में क्या है? हनुमान — उनकी अंगूठी है और उन्होंने तुम्हारे ही लिए दी है। जानकी — उस अंगूठी

को अपने हाथ से उठा और हृदय से लगाकर प्रेम के कारण आंसू गिराने लगीं तथा उनके अंगों पर भली प्रकार रोमांच हो आया।

हनुमान निरन्तर गिरते हुए आँसुओं से भरे नेत्र करके सुवर्ण की अंगूठी को मान देने वाली जानकी को आश्वासन देने लगे कि हे मामिनी! सुंदर रंग वाले सुंदर रामनाम वर्णों से युक्त दसमाशे सोने की यह अंगूठी हे माता जानकी! श्रीरामचंद्रजी ने तुम्हारे लिए भेजी है। जानकी (कुछेक आशा पाकर और कुछ देर में आँसुओं को पोंछकर अंगूठी के मिससे) हनुमान जी के प्रति — हे मुद्रिके! लक्ष्मण सहित श्रीरामचंद्रजी के चरण प्रसन्न हैं? यह सुनकर हनुमान जी ने कहा कि हे भगवती! तुम इस चिंता से अपने चित्त को दुःखित न करो, जनक राजकुमारी! इस मुद्रिका को तुम दूसरे नाम से पुकारो क्योंकि तुम्हारे विरह के कारण श्रीरामचंद्रजी ने अब

इसको चिरकाल के लिए कंकण का स्थान दे दिया है।

इस अंगूठी के नगीने में बड़े आदर के साथ श्रीरामचंद्र के नाम के अक्षरों को देखती हुई सीता उसमें अपना ही प्रतिबिंब देखने लगी अथवा मणि में अपना प्रतिबिंब देखकर भ्रम में पड़ गई कि इसमें तो श्रीरामचंद्रजी का चित्र था क्या प्राणनाथ मेरी चिंता से मेरा ही रूप हो गए ऐसे विचार में जनक कुमारी मूर्छित हो गई। (किसी प्रकार चेतना पाकर) पवनकुमार! यदि अंगूठी ही प्राणनाथ का कंकण हो गई तो यह बताओ कि वह किसके समान दुर्बल हो गए हैं? हनुमान — हे दुर्बलांगी! एक तो महाराज स्वभाव से ही दुर्बल थे, और तुम्हारे वियोग के कारण तो अब ऐसे दुर्बल हो गए हैं कि जैसे प्रतिपदा के दिन पढ़ने वाले विद्यार्थी की विद्या नष्ट हो जाती है अथवा क्षीण हो जाती है।

जानकी — जहाँ चन्द्रमा सूर्य की किरणों के समान, कमल अग्नि कणों के समान, कपूर, वज्र के समान, चन्द्रमा की कला बिजली के समान, वायु बड़वानल के समान, और चंदन अग्नि के समान प्रतीत होता है इस कारण हे पवनकुमार! इस संदेश को लेकर तुम शीघ्र ही यहाँ से रामचंद्रजी के समीप चले जाओ और उनको लिवाकर लाओ।

हनुमान — हे चंद्रवदनि! श्रीरामचंद्रजी के बाणों को क्या दूर है परकोटों को तोड़ने वाले वानरों को क्या दुर्गम है हे देवि! मुझे तो देव प्रसन्न सा प्रतीत होता है यदि लक्ष्मण सहित श्रीरामचंद्रजी को क्रोध आ गया तो मैं इस समय तुम से सत्य कहता हूँ कि ये राक्षस बेचारे हैं ही क्या।

इसी वार्तालाप के बीच में, जानकी से बातों ही बातों में हनुमान जी ने पूछा कि हे माता! राजा रावण की बगीची कहाँ है?

(जानकी दिखाती है) रे पुत्र। इस बगीची के पश्चिम भाग में वह बगीची है, हनुमान — (पूँछ को उठाए प्रचण्ड रूप से चल दिए) सीताजी के इस प्रकार कहने पर हनुमान जी ने रावण के लीलावन को उजाड़ कर और उस रावण के पुत्र अक्षकुमार के युद्ध करने को आने पर किसी से छीने हुए मुद्गर से उसको यमपुर पहुँचा दिया

तदंतर हनुमान के ऊपर क्रोध के कारण लाल-लाल नेत्र वाले मेघनाद के पहिले निष्फल होने के कारण निंदा किए हुए, ब्रह्माजी के अस्त्र से हनुमान जी बंध गए।

रावण — (हनुमान जी को देखकर) रे रे वानर! तू कौन है? हनुमान — अरे! मैं संग्राम में तेरे पुत्र अक्ष को मारने वाला खरदूषणादि के हंता, जगत में धनुर्विद्या के गुरु श्रीरामचंद्रजी का दूत हूँ। मेरे कठोर भुजदण्डों की झपेट में त्रिकुटा चल सुमेरु पर्वत क्या है और रावण की तो गिनती ही क्या, ऐसे करोड़ों कीड़े कुचल जाते हैं। रावण ने बड़े वेग के साथ, हनुमान जी के ऊपर चन्द्रहास नामक तलवार का प्रहार किया परन्तु सज्जन की मित्रता के समान हनुमानजी के शरीर में उससे कुछ भी चोट न लगी।

तलवार के निष्फल होने पर अपनी पूर्वोक्त चतुराई को प्रकट करने के लिए हनुमान जी ने कहा — तू मुझको भस्म करवादे, तब रावण ने उनकी पूँछ में अग्नि लगवा दी, उस समय सीताजी कहती हैं कि हे अग्निदेव! यदि श्रीरामचंद्रजी ब्राह्मणों को किसी के दुर्वचन कहने पर असंतुष्ट होते हैं, तब घृत के होमों से संतुष्ट हो, और रामचंद्रजी में मेरी भक्ति है तो राक्षसों के कौतूहल देखते में तेल से भीगे पुराने वस्त्र और बहुत से सन से लिपटी और जलती हुई पूँछ से हनुमान को कष्ट न दो, इस प्रकार सीताजी के प्रार्थना करने पर अग्नि शीतल हो गई।

वह हनुमान जी की पूँछ से उत्पन्न हुआ ऐसा प्रतीत हुआ कि — मानो रावण का प्रताप निःसंदेह रामचंद्रजी के भय से भागा जा रहा हो।



लपटें लेता हुआ अग्नि, मांस भक्षी राक्षसों का मांस भक्षण करके परम तृप्ति को प्राप्त हुआ, और ऐसी शोभा को प्राप्त हुआ कि मानो समुद्र के जल में प्रतिबिंबित हुई लपटों के बहाने से प्यासा हुआ समुद्र के जल पी रहा है।

(रावण अपने मन ही मन में) यदि ये पवनकुमार रुद्रावतार है तो मुझ रुद्रभक्त की नगरी को क्यों भस्म करे डालते हैं? ओ हो समझा गया — पिनाकधारी शिवजी दश मस्तकों से प्रसन्न हो गए परंतु ग्यारहवें रुद्र प्रसन्न न हुए इसी कारण हनुमान कोपकर लंका को भस्म कर रहे है, सो ठीक ही है — क्योंकि पंक्ति का भेद कभी मंगलदायक नहीं होता। और भी क्या बड़वानल से समुद्र शोभित हो रहा है? क्या सूर्य के बिम्ब से आकाश शोभित हो रहा है? क्या बिजलियों के समूहों से मेघमण्डल शोभित हो रहा है? क्या धधकती हुई अग्नि वाले तीसरे नेत्र से युक्त चन्द्रशेखर शिव है? क्या क्षय कारक अग्नि वाला महाकाल है? क्या इंद्रधनुषधारी मेघ है? क्या ध्रुवमण्डल युक्त सुमेरु पर्वत है? अथवा यह दहकती हुई पूँछवाले वह पवनकुमार हनुमानजी ही आकाश में विराज रहे हैं?

(लंका निवासी राक्षसगण) वानरों की फौज की रक्षा का सरकार ऊँची पूँछ वाला पताका (झण्डी) के समान

आकाश को उड़ने वाला यह अकेला पवनपुत्र ही जिस समय वानरों की सेना चलकर आवेगी उस समय फिर भी इस लंका में आवेगा इस प्रकार भय से चिंतित चकित हो लंका के रहने वाले धीरे-धीरे आपस में कहने लगे।

इसके उपरांत आकाश में स्थित हुए हनुमानजी बोले हे दशानन! मैं तो पवनपुत्र अकेला ही हूँ और तू करोड़ों का अधिपति है, मैं रण में तुझसे विजय प्राप्त कर स्वामी की पतिव्रता जानकी को ले जा सकता हूँ परंतु पहिले भगवान रामचंद्रजी ने अपनी

भुजा उठा कर दाहिने हाथ से पृथ्वी को ताड़ित कर स्वयं तेरा वध करने की सुग्रीव से प्रतिज्ञा की है। ऐसा कहकर हनुमान जी रावण की पुरी (लंका) को जलाकर अग्नि से न जली अशोक वाटिका आ जानकी को प्रणाम करके श्रीरामजी के जताने के लिए निशानी माँगने लगे।

जानकी ने कहा — शत्रु के कालरूपी सर्प की स्त्री की सदृश धूमशिखा (धूमकेतु की पूँछ) के समान अपनी चोटी को खोलकर उसमें की अपनी चूड़ामणि स्वामी रामचंद्र के निमित्त निशानी दी।



नेताजी सुभाष चन्द्र बोस



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड
एजीज लेआउट, बैंगलूर

23 जनवरी 1897 का दिन विश्व इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इस दिन स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक सुभाषचन्द्र का जन्म हुआ। कटक के प्रसिद्ध वकील जानकीनाथ तथा प्रभावती देवी उनके पिता और माता थे। स्वतंत्रता संग्राम में अहम् भूमिका निभाने वाले सुभाषचन्द्र बोस को प्यार से लोग नेताजी कहकर बुलाते थे। देशप्रेम से भरे नेताजी की जयंती हर साल 23 जनवरी को मनाई जाती है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिंद फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा, भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है।

कटक के प्रोटेस्टेण्ट स्कूल से प्राइमरी शिक्षा पूर्ण कर 1909 में उन्होंने रेवेनशा कॉलेजियेट स्कूल में दाखिला लिया। पन्द्रह वर्ष की आयु

में ही सुभाष ने विवेकानंद साहित्य का पूर्ण अध्ययन कर लिया। उन्होंने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और 1919 में बी.ए. (ऑनर्स) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कोलकाता विश्वविद्यालय में उनका द्वितीय स्थान था।

सुभाषचन्द्र बोस के दिमाग पर तो स्वामी विवेकानंद और महर्षि अरविंद घोष के आदर्शों ने कब्जा कर रखा था। सुभाष के पिता की इच्छा थी कि पुत्र आई.सी.एस. अधिकारी बने। लेकिन बोस आई.सी.एस. बनकर अंग्रेजों की गुलामी कैसे कर पाएंगे? 22 अप्रैल 1921 को आई.सी.एस. पद से त्याग पत्र दिया।

कोलकत्ता के स्वतंत्रता सेनानी देशबन्धु चितरंजन दास बाबू के साथ काम करना चाहते थे। इंग्लैंड से नेताजी ने खत लिखकर उनके साथ काम करने की इच्छा प्रकट की। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सलाह के

अनुसार भारत वापस आने पर नेताजी सर्वप्रथम मुंबई गए और गांधीजी से मिले।

बहुत जल्द ही नेताजी देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गए। उन्होंने कांग्रेस के अंतर्गत युवकों की इंडिपेंडेंस लीग शुरू की। 1927 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाए। कोलकत्ता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब ऐसा तय किया गया कि 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

26 जनवरी 1931 को कोलकत्ता में राष्ट्र ध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे, तभी पुलिस ने उन पर लाठी चलाई और उन्हें घायल कर भेज दिया।

सुभाषचन्द्र बोस (जिन्हें नेताजी के रूप में भी जाना जाता है) ने गांधीजी के कम टकराव वाले रुख और अधिक रूढ़िवादी अर्थशास्त्र के साथ तुलना में, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक अधिक उग्रवादी और समाजवादी दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित किया। 1940 के निर्वासन में रहते हुए बोस ने जापानी सहायता तथा प्रभाव के साथ पूर्वी एशिया में एक मुक्ति सेना खड़ी थी। अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल ग्यारह बार कारावास हुआ। सबसे पहले उन्हें 16 जुलाई 1921 में छह महीने का कारावास हुआ।

1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकत्ता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गई। चिकित्सकों की सलाह पर सुभाष इस बार इलाज के लिए यूरोप जाने को राजी हो गए।

सन् 1934 में जब सुभाष ऑस्ट्रिया में अपना इलाज कराने हेतु ठहरे थे, तब उन्हें अपनी पुस्तक लिखने हेतु एक अंग्रेजी जानने वाले एक टंकक की जरूरत हुई। उनके एक मित्र ने एमिली शेंकल नामक एक ऑस्ट्रियन महिला से उनकी मुलाकात करा दी। एमिली के पिता एक प्रसिद्ध पशु चिकित्सक थे। सुभाष एमिली की ओर आकर्षित हुए और उन दोनों में

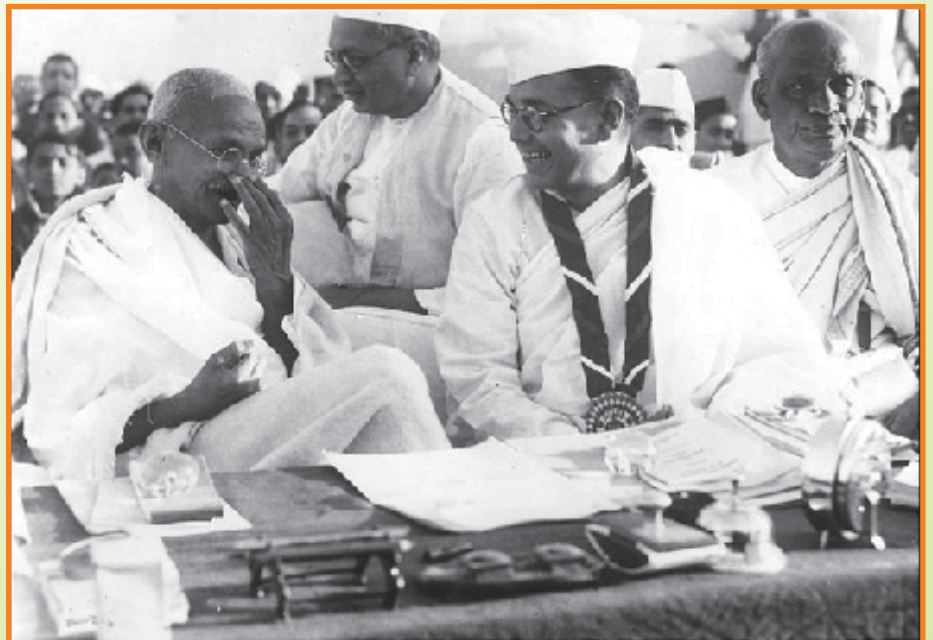
स्वाभाविक प्रेम हो गया। उन दोनों ने सन् 1942 में बाड गार्स्टिन नामक स्थान पर हिन्दू पद्धति के अनुसार विवाह किया। वियेना में एमिली ने एक पुत्री को जन्म दिया। सुभाष ने पहली बार पुत्री को तब देखा जब वह चार सप्ताह की थी। उन्होंने बेटी का नाम अनीता बोस रखा। अगस्त 1945 में हुई तथा कथित विमान दुर्घटना में, जब सुभाष जी की मौत हुई, अनीता पौने तीन साल की थी। अनीता अभी भी अपने पिता के परिवार जनों से मिलने कभी-कभी भारत आती है।

1938 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हरिपुरा में होना तय हुआ। इस अधिवेशन से पहले गांधीजी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए सुभाष को चुना। अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। अपने अध्यक्षीय काल में सुभाष

ने योजना आयोग की स्थापना की। बेंगलूर में मशहूर वैज्ञानिक सर विश्वेश्वरय्या की अध्यक्षता में विज्ञान परिषद की स्थापना भी की।

1939 का कांग्रेस अधिवेशन त्रिपुरा में हुआ इस अधिवेशन के समय तेज बुखार से इतने बीमार हो गए थे कि उन्हें स्ट्रेचर पर लिटाकर अधिवेशन में लाना पड़ा। गांधीजी और उनके साथी उपस्थित नहीं थे तथा न ही अधिवेशन में सुभाष जी को सहयोग दिया। आखिर तंग आकर 29 अप्रैल 1939 को सुभाष ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।

3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही 'फारवर्ड ब्लॉक' नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बाद में फारवर्ड



ब्लॉक अपने आप में एक स्वतंत्र पार्टी बन गई। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने से पहले ही फारवर्ड ब्लॉक ने स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक तीव्र करने के लिए जन जागृति शुरू की।

द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की हार के पश्चात, नेताजी को नया रास्ता ढूँढना था। रूस से मदद माँगने के लिए 18 अगस्त 1945 को नेताजी हवाई जहाज से मंचूरिया की तरफ जा रहे थे। इस सफर के दौरान वे लापता हो गए। उस दिन के बाद कभी किसी को दिखाई न दिए। 23 अगस्त 1945 को टोकियो रेडियो ने बताया कि हवाई अड्डे के पास नेताजी का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त दस्तावेज के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि 21.00 बजे हुई।

लेखन कार्य तथा प्रकाशन

अपने संघर्षपूर्ण एवं अत्यधिक व्यस्त जीवन के बावजूद नेताजी लेखन के प्रति भी उत्सुक रहते थे। अपनी अपूर्ण आत्मकथा एक भारतीय यात्री

के बावजूद उन्होंने दो खंडों में भारत का संघर्ष नामक पुस्तक भी लिखी। इसका प्रथम प्रकाशन लंदन में हुआ। यह पुस्तक काफी प्रसिद्ध हुई। उनकी आत्मकथा अपूर्ण ही रही लेकिन उसे पूर्ण करने की उनकी अभिलाषा रही थी, जिसका यहा मूल पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर बनाई गई योजना से स्पष्ट होता है।

नेताजी ने अपने बहुआयामी स्वतंत्रता संघर्ष के संदर्भ में अगणित पत्र लिखे, भाषण दिये एवं रेडियो के माध्यम से भी उनके भाषण प्रसारित हुए। पत्रों की एक बड़ी मात्रा उनके निजी

जीवन से भी संबंधित है।

समग्र वाङ्मय के प्रथम खंड में उनकी आत्मकथा के साथ कुछ पत्रों का प्रकाशन हुआ है। अन्य खंडों में उनके द्वारा लिखित पत्रों, टिप्पणियाँ तथा भाषण आदि समग्र उपलब्ध साहित्य का क्रमबद्ध प्रकाशन हुआ है।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसे एक महान देशभक्त का स्मरण करना ही पुण्य कार्य है। आइए, हम सब उनसे प्रेरित होकर देश की प्रगति में क्रियाशील रहें।



हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिसके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

पादरी की अंगूठी



बी.एस. चौहान

1809, महागुन मेपल, प्लाट एफ-26,
सेक्टर-50, नोएडा (उ.प्र.)

रोजी ने जब से होश संभाला है आज उसने पहली बार अपने से बड़ों का अनादर किया था, या यूँ समझिए कि आदर नहीं किया था या चाहते हुए भी आदर करने का शिष्टाचार नहीं कर पायी थी। स्कूल में रंगोली की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जब रोजी रंगोली बना रही थी तब डेविड के माता-पिता और उसका बड़ा भाई स्कूल में आए तो रोजी ने उन्हें देखकर बैठे-बैठे ही 'नमस्ते' कह दिया। रोजी का इस तरह का व्यवहार डेविड के पिता रोक्सी डेविड, माता रीना डेविड और भाई विलियम डेविड की समझ से बाहर था। स्कूल की सबसे सुशील और सभ्य बालिका जो दूर से अपने से बड़ों को देखते ही उठकर नतमस्तक होकर प्रणाम करती थी, आज बैठे-बैठे ही नमस्ते किया और फिर भी बैठी रही।

'क्या बना रही हो बेटी?' रीना डेविड ने पूछा और हर रंग के चुनाव का

कारण भी पूछ लिया। अब भी रोजी ने बिना उठे ही बताया कि किस तरह उसने रंगोली के माध्यम से समझाया है कि प्रकृति की हर रचना मानव को क्या-क्या संदेश देते हैं और अगर मानव उन्हें ठीक से समझे तो कैसे जीवन को उद्देश्यपूर्ण बना सकता है। तीनों रोजी के वर्णन से बहुत प्रभावित हुए। रोक्सी समझने का प्रयत्न कर रही थी कि रोजी इतनी कम उम्र में इतनी दार्शनिकता व गहराई की बातें कैसे कर रही है? वह नौवीं क्लास की छात्रा है, दर्शनशास्त्र की स्नातक नहीं। लेकिन न उठने की बात उनके लिए एक पहेली बन कर रह गई।

रोजी उठकर नमस्ते करती भी कैसे? उसकी झोली में पानामा सिगरेट का पैकेट जो था। अगर वह उठती तो उसका सारा भेद खुल जाता। तब उसकी और डेविड की शामत आ जाती। रोजी ऐसा नहीं होने देना चाहती थी। डेविड वैसे तो बहुत ही भला और होनहार लड़का था, लेकिन

चार साल से उसे सिगरेट पीने की लत लग गई थी। उसके चरित्र की दूसरी नकारात्मक विशेषता थी उसका जिद्दीपन। अच्छा या बुरा जो भी वह जुबान से निकाल देता, उसे पूरा करके ही रहता था। डेविड ने अपने माता-पिता व भाई को गेट से ही स्कूल में प्रवेश करते समय देख लिया था। चोरी पकड़े जाने के डर से उसने अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर झट से रोजी के हाथ में पकड़ा दिया। इससे पहले कि रोजी उसका विरोध करती, डेविड वहां से खिसक गया था। रोजी ने उसे अपनी झोली में रखकर छिपा लिया था।

डेविड बंगलौर के सेंट मार्टिन पब्लिक स्कूल में 10वीं कक्षा का छात्र था। रोजी भी इसी स्कूल में पढ़ती थी। यूँ तो उसका नाम डेनियल डेविड था, लेकिन छात्र उसे डीडी के निकनेम से पुकारते थे, जिसका आशय था डेयर डेविल। रोजी और

डेविड दोनों ही अपनी-अपनी कक्षा में पढ़ाई में तो सर्वोत्तम थे ही, अन्य विधाओं में भी उनका बोल-बाला रहता था। डेविड पेंटिंग व संगीत में स्कूल में नम्बर वन था। इधर रोजी गाने और चित्रकला में सर्वप्रथम आती थी।

रोजी को अभी याद है, जब वह तीसरी क्लास में थी तो डेविड के माता-पिता उसे अपने घर ले गए थे। बालक डेविड जिद करके बैठ गया था कि जब तक उसकी बर्थडे पार्टी में रोजी को नहीं बुलाया जाएगा, वह बर्थडे केक नहीं काटेगा। रोजी की माँ मरियम को, जो कभी किसी के घर नहीं जाती थी, रोजी को लेकर डेविड के घर जाना पड़ा था।

जैसे ही रोजी छठी क्लास में पहुँची उसे प्रेयर सोंग के लिए चुन लिया गया। दूसरी लड़की थी दीक्षा और तीसरी थी सातवीं क्लास की शबनम। ये केवल एक महत इत्तेफाक था कि प्रेयर सोंग की तीनों सदस्य भारत के तीनों बड़े धर्मों से संबंध रखती थीं। हालांकि कुछ अभिभावक इसे प्रिंसिपल का प्लान समझते थे। हारमोनियम पर प्रेयर सोंग की धुन बजाता था डेविड।

एक दिन अचानक राज्य के शिक्षा मंत्री का निधन हो गया। राज्य के सभी शैक्षणिक संस्थाओं में छुट्टी घोषित कर दी गई। स्कूल के बच्चों

ने खुशियां मनाई। इस अचानक अतिरिक्त अवकाश का आनन्द लेने के लिए लेकिन डेविड इससे खुश नहीं हुआ। उसने प्रकृति पर एक चित्र बनाया था जिसमें अपने मन-पसंद रंग भरे थे। चित्र में नदी के किनारे विभिन्न पक्षियों को नाचते दिखाया गया था और पानी की झील के किनारे लाल गुलाब के पौधों में फूल उगाए थे। इस पेंटिंग को वह आज स्कूल में रोजी को दिखाने वाला था। इसलिए ही वह उदास था।

इसके पश्चात् डेविड अपने माता-पिता के साथ फिल्म देखने चला गया। फिल्म में नायक-नायिका की शादी होने से पहले नायिका की मृत्यु हो जाती है। इसको देखने के बाद उसका दिल और खिन्न-सा हो गया था। सिनेमा घर से लौटते समय रीना डेविड ने एक प्रसाधन की दुकान से

कुछ सौन्दर्य सामग्री खरीदी और आभूषणों के एक शो रूम से एक कीमती अंगूठी। डेविड ने इस अंगूठी को अपनी माँ से लेने की जिद की। जब रॉक्सी ने उसकी बात नहीं मानी तो डेविड ने घर से भाग जाने की धमकी दे डाली। वह अंगूठी कीमती थी इसलिए रॉक्सी ने डेविड को दूसरी अंगूठी दिलाने के लिए हामी भर दी। डेविड इस बात के लिए बिल्कुल नहीं माना और उसने जिद कर डाली कि उसे वही अंगूठी ही चाहिए। आखिर रॉक्सी ने पुत्र के प्यार के सामने घुटने टेक दिए और उसकी पसंद की अंगूठी बिना कोई प्रश्न किए हुए उसे दिलवा दी। डेविड ने इस अंगूठी को अपने बाएं हाथ की तर्जनी उंगली में डाल लिया। जब माँ ने उसे समझाने की कोशिश की कि उसे दाएं हाथ में



डाला जाता है, तो डेविड ने अनसुना कर दिया। इसके बाद लाख कोशिश करने के बाद भी डेविड ने वह अंगूठी अपनी माँ को नहीं लौटाई। शाम को चर्च में उसने गॉड से प्रार्थना की कि वह किसी बड़े राजनीतिक नेता की छुट्टी के दिन ही अपने पास बुलाया करे।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था। स्कूल के 12 विद्यार्थी ऐसे थे जो स्कूल के दक्षिण में गंगा कालोनी में रहते थे और उनमें से पांच उस कालोनी की एक ही गली में। रोजी का घर सबसे बाद में आता था। उससे भी आगे डेविड गणित में ट्यूशन पढ़ने जाता था। अतः रोजी और डेविड 3-4 मिनट साथ-साथ चलते। कभी-कभी सर्दियों में जब कक्षा देर से छूटती तो अंधेरा भी हो जाता था। स्कूल का समय वैसे तो 10 से 4 बजे तक होता था।

अगले दिन शाम को घर लौटते समय डेविड ने देखा कि उसके साथी इधर-उधर हो गए हैं और केवल रोजी ही उसके साथ चल रही है। काफी दिनों से डेविड रोजी के सामने अपने दिल में उठते हुए विचारों का खुलासा करना चाहता था। आज उचित अवसर पाकर डेविड रोजी के सामने आकर खड़ा हो गया और पूछ बैठा — 'क्या तुम मुझसे प्यार करती हो?'

‘धत्! यह भी कोई पूछने वाली बात है और वो भी इस उम्र में। यह सब तो शादी के बाद होता है। हमारी तुम्हारी शादी थोड़े ही हो गई है? यह प्रश्न पूछने का सवाल तुम्हारे मन में कैसे पैदा हुआ।’

‘तो फिर शादी कर लो।’ डेविड ने प्रस्ताव कर डाला।

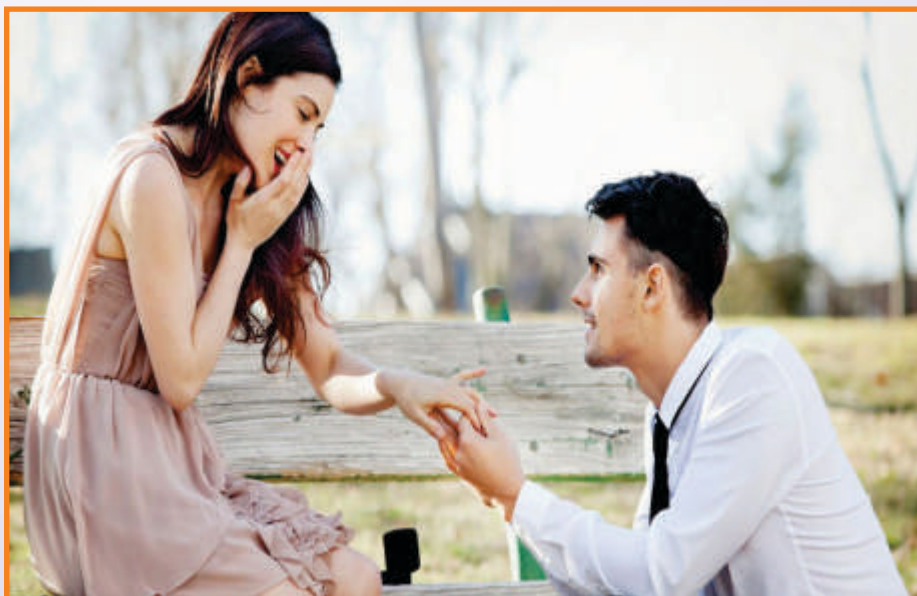
इस पर रोजी ने अपनी नाराजगी प्रकट की। ‘धत्! यह भी कोई शादी करने की उम्र है? अभी तो हम स्कूल में पढ़ रहे हैं? उसके बाद नौकरी करेंगे, बड़े होंगे, तभी तो शादी करने लायक उम्र होगी। आगे से ऐसे विचार भी तुम अपने मन में मत लाना। ध्यान से अपनी पढ़ाई करते रहो। तुम्हें मालूम होना चाहिए इस साल तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा है। ध्यान से मन लगाकर पढ़ाई किया करो, अन्यथा परीक्षा में तुम्हारा

खिवीजन बिगड़ जायेगा।’ रोजी ने नानी-अम्मा के परिपक्व दिमाग से डेविड को समझाया।

डेविड ने हार नहीं मानी। वो रोजी के साथ-साथ चलते हुए उसके घर पहुंच गया। घर में रोजी की माँ मरियम और उसका भाई विल्सन विद्यमान थे। डेविड ने सहज भाव से रोजी की माँ को कहा।

‘आंटी मैं रोजी को यह अंगूठी पहनाना चाहता हूँ। रोजी है कि मान ही नहीं रही। आप इसे समझाओ ना कि वह मुझ से यह अंगूठी पहन ले। इसमें हर्ज ही क्या है?’ डेविड ने अपने सहज और थोड़े से भावुक मन से रोजी की माँ से यह प्रार्थना की।

मरियम ने बालक की जिद को देखते हुए रोजी को अंगूठी पहनने के लिए बोल दिया। डेविड रोजी को अंगूठी पहनाकर बहुत ही इठला रहा था।



मानो जैसे उसकी खुशी की कोई सीमा ही नहीं रही। जाते-जाते वह रोजी को कह गया। 'इस अंगूठी में मेरी जान बसी हुई है। इसको कभी भी अपनी उंगली से मत निकालना। अगर ऐसा हुआ तो मैं अपनी जान दे दूंगा।' रोजी ने जब अपनी माँ को इस घटना के लिए अपनी नाराजगी जताई तो मरियम ने यह कहकर उसे चुप करा दिया कि 'यह सब केवल बालक का मन रखने के लिए है। यह कोई शादी की अंगूठी थोड़े ही है, जिसे तुम इतनी गंभीरता से ले रही हो।'

डेविड का कुछ हौंसला बढ़ा उसने एक और अंगूठी खरीदी और उसे रोजी को देते हुए कहा, 'यह अंगूठी तुम मेरी उंगली में पहना दो।' रोजी इसके लिए बिल्कुल नहीं मानी। अगले दिन स्कूल में रोजी ने देखा कि डेविड के हाथ में पट्टी बंधी हुई थी। रोजी ने पूछा, 'क्या हुआ?' डेविड ने सहजता से उत्तर दिया — 'जिस उंगली में शादी की अंगूठी पहनाई जाती है, मैंने उसे कल शाम तुम्हारे घर से जाने के बाद सदा के लिए काट डाला। न उंगली होगी और न कभी मुझे तुम्हें इसमें अंगूठी पहनाने के लिए प्रार्थना करनी पड़ेगी।' रोजी को डेविड के भाई से पता चला कि यह बात बिल्कुल सत्य थी। डेविड को अस्पताल ले जाया गया था और

उसकी उंगली में चार टांके आए थे। रोजी ने केवल इतना ही सोचा कि शायद डेविड मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं था। तब से स्कूल में कुछ बच्चे डेविड को चार उंगला कहकर बुलाने लगे थे।

डेविड ने 10वीं कक्षा की परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान पाया। रोजी ने भी ढेर सारे मैडल जीते। ये दोनों छात्र अपने स्कूल का गौरव थे। हर दृष्टि से स्कूल का प्रिंसिपल और स्टाफ इन पर गर्व करते थे। कब दो वर्ष बीत गए इसका रोजी और डेविड को पता ही नहीं चला।

दो वर्ष पश्चात फिर एक दिन कुछ ऐसे क्षण आए जब डेविड ने रोजी के घर जाकर मरियम से रोजी का हाथ मांग डाला। मरियम को यह बड़ा विचित्र लगा। उसको मालूम था डेविड रोजी को चाहता है, उसे पसंद करता है। अगर रोजी उसकी जीवन साथी बनेगी तो डेविड उसे खुश भी रखेगा। लेकिन मरियम यह भी भली-भांति जानती थी और रोजी भी इस बात से अनभिग नहीं थी कि डेविड और रोजी की आयु और हालात अभी शादी करने के उपयुक्त नहीं थे। मरियम ने डेविड को समझाया कि अभी तुम दोनों की आयु शादी के लायक नहीं है। डेविड ने, जैसे कि पहले से ही सोचकर रखा

हुआ हो, कहा, 'अगर रोजी शादी के लिए हॉ कर दे तो इसके लिए वह जितने भी वर्ष चाहे इंतजार करने के लिए तैयार है। केवल वह रोजी से हॉ शब्द सुनना चाहता था। मरियम ने इस बात का फैसला रोजी पर ही छोड़ दिया। विल्सन ने भी यही कह दिया कि उसे भी इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि रोजी और डेविड की शादी हो जाए, लेकिन तब जब दोनों ही अपनी पढ़ाई पूरी कर लें और दोनों ही आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी हो जाएं।

एक दिन जब डेविड रोजी से स्पष्ट शब्दों में इस बात का उत्तर चाहा तो रोजी ने तपाक से बोल दिया, 'नहीं, नहीं और बिल्कुल नहीं। मुझे यह प्रस्ताव बिल्कुल भी मंजूर नहीं है।' रोजी ने जैसे ही अपनी उंगली से डेविड की दी हुई अंगूठी उतारने के लिए हाथ बढ़ाया। डेविड ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोला।

'अगर तुमने इस अंगूठी को उतारा तो मैं अपने प्राण दे दूंगा। इस बात को सदैव याद रखना।' इतना कह कर डेविड उदास होकर वहां से चला गया।

कुछ माह पश्चात् आखिर वह बेला आ ही गई जब डेविड को सेन्ट मार्टिन पब्लिक स्कूल से आखिरी विदा लेनी थी। स्कूल की 11वीं कक्षा

के छात्र-छात्राओं ने 12वीं कक्षा के छात्रों का विदाई समारोह का आयोजन किया था। डेविड का मन कुछ उदास और भारी-भारी हो रहा था। उसको विशेष गम था रोजी को छोड़ने का। यूँ तो डेविड और रोजी अपनी-अपनी कक्षा में अब्बल आते थे। विद्यालय की विविध कलाओं में भी दोनों ने अनेक पदक और इनाम जीते थे। सभी छात्र आपस में बात कर रहे थे कि भविष्य में जाकर कौन क्या कोर्स अपनाएगा। इंजीनियरिंग करेगा या मेडिकल में जाएगा। अर्थशास्त्री बनेगा या बिजनेस करेगा या खाली बी.ए., एम.ए. करके सरकारी या प्राइवेट सेक्टर में नौकरी करेगा। विद्यार्थी अपने-अपने समूह बनाकर लॉन में घूम रहे थे। डेविड रोजी के पास गया, जो विदाई भाषण पढ़ने का अभ्यास लॉन के एक कोने में बैठकर कर रही थी। डेविड ने प्रश्न किया, 'क्या तुम मुझसे शादी नहीं करोगी?' अभी भी रोजी ने वही जवाब दिया — 'नहीं!' यह सुनकर डेविड ने रोजी के सामने एक शपथ कर डाली। 'अगर तुम मेरे से शादी नहीं करोगी तो मैं ज़िन्दगी भर शादी नहीं करूँगा। वैसे तो 12वीं कक्षा पास करके मेरा विचार बी.कॉम. ऑनर्स करने का है और उसके बाद एम.बी.ए. करने का इरादा है। लेकिन तुमने अगर शादी के लिए हाँ नहीं कि तो

वह पादरी का कोर्स करेगा और आजीवन भर अविवाहित रहकर चर्च में सेवा करेगा। इतना कहकर डेविड गंभीर हो गया। रोजी के चेहरे पर भी अब पूरी गंभीरता झलक रही थी। फिर भी उसने कहा, 'इसका जवाब वो बोर्ड की परीक्षा के बाद देगी।'

12वीं कक्षा की परीक्षा देने के पश्चात् डेविड रोजी से एक बार फिर एकांत में मिला और रोजी का अंतिम फैसला जानना चाहा। रोजी ने अभी भी शादी से इंकार कर दिया। रोजी को आज भी डेविड के अंतिम शब्द याद हैं, 'मैं कभी ज़िन्दगी में शादी नहीं करूँगा। इस दुनिया का त्याग करके पादरी बनूँगा। मैं तब तक जिन्दा रहूँगा, जब तक मेरी पहनाई हुई अंगूठी तुम्हारी उंगली में रहेगी। जब भी तुम यह अंगूठी उतारोगी, समझो उसी दिन मैं मौत को गले लगा लूँगा। तुम्हारे अंगूठी उतारने की जानकारी मुझे स्वतः मिल जाएगी।'

धीरे-धीरे आठ साल बीत गए। डेविड और रोजी की बाद में कभी मुलाकात नहीं हुई। डेविड से विदा होने के चार साल बाद रोजी की शादी बम्बई में एक व्यापारी से हो गई, जो शेयर मार्केट के व्यवसाय से जुड़ा हुआ था। रोजी को यह शादी रास नहीं आई। उसके पति ने सारी जमा पूंजी शेयरों में लगाकर चौपट कर दी। पति ने

धीरे-धीरे रोजी की शादी के आभूषण भी बेच डाले। पति रोजी के साथ मार-पिट्टाई भी करने लगा। पति की शारीरिक और मानसिक प्रताड़नाओं से रोजी बेहद परेशान थी। वह अपने जीवन का कभी से अन्त कर डालती अगर उसके पास दो फूल से बच्चे — एक पुत्र और एक पुत्री न होते।

जो धरोहर रोजी के पास शेष बची थी, वह थी डेविड द्वारा पहनाई गई एक कीमती अंगूठी। पति जब भी रोजी को उस अंगूठी को उतारने के लिए बोलता, तो रोजी साफ मना कर देती। 'शायद यह अंगूठी तुम्हारे किसी यार की है, तभी तुम इसको एक क्षण के लिए भी नहीं उतारती हो और न ही मुझे देती हो। आखिर यह अंगूठी किसकी है, जिसे तुम अपने शरीर से एक पल के लिए भी अलग नहीं करती।' पति यह कहकर रोजी को बार-बार ताना देता रहता था। एक दिन पति ने चेतावनी दे दी कि अगले दिन उसे वह अंगूठी नहीं मिली तो वह रोजी की उंगली काट कर उस अंगूठी को उतार देगा। इस बात से रोजी इतनी दुःखी हुई कि शाम होते ही वह सब कुछ छोड़कर दिल्ली में अपनी बहन स्वीटी के पास जाने के लिए रवाना हो गई।

दिल्ली पहुँचकर रोजी ने अपने जीवन की पूरी दास्तान स्वीटी को सुना

डाली। स्वीटी बाल्यकाल से ही होस्टल में पढ़ी थी, अपने घर पर माता-पिता के साथ बहुत ही कम रही थी। स्वीटी ने रोजी को सांत्वना दी। स्वीटी ने कहा कि इस अंगूठी से और पति की प्रताड़ना से छुटकारा पाने का एक ही सरल उपाय है। इसे चर्च के पादरी को सौंप दिया जाये। अगले दिन चर्च में कन्फेशन का दिन था। स्वीटी और रोजी दोनों चर्च में चली गईं। स्वीटी ने रोजी को पादरी के सामने कन्फेशन करने के लिए भेज दिया। साथ में यह भी कह दिया कि इस अंगूठी का क्या निदान हो, यह प्रश्न भी पादरी के सामने ही रख देना।

रोजी ने हिम्मत जुटाई और सारी दास्तान पादरी को सुना डाली। आखिर में रोजी ने कहा, 'मैं अपने पति से तलाक लेने की योजना बना रही हूँ और फिर बोली, 'अगर मैं ये अंगूठी अपनी उंगली में पहने रखती हूँ तो मेरा पति मुझे जीने नहीं देता और इसे मैं उंगली से निकालती हूँ तो मुझे डर है कि इससे डेविड के जीवन का अन्त न हो जाए। मैं नहीं चाहती कि डेविड जैसा एक नेक दिल और

आदर्श व्यक्ति मेरे कारण इस दुनिया से चला जाए। वह जहां भी है, मुझे पूरा विश्वास है कि वह तन-मन-धन से मानवता की सेवा में अपना जीवन बिता रहा होगा। ऐसे में मेरा यह कदम मानवता के लिए बहुत बड़ी हानि होगी।'

पादरी ने रोजी की सभी बातों को पूरे ध्यान से सुना। आखिर में बोला – 'तुम यह अंगूठी मुझे उतार कर दे सकती हो। मैं तुम्हें पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि डेविड का कुछ नहीं बिगड़ेगा और यह अंगूठी उसको मिल जाएगी। इसका डेविड को कोई शिकवा भी नहीं रहेगा।'

कन्फेशन के समय पर पादरी पर्दे के पीछे रहता है और कन्फेशन करने वाला व पादरी एक दूसरे को देख नहीं पाते हैं। रोजी ने काफी प्रयत्न करके अपनी उंगली से अंगूठी उतारी और उसे देने के लिए पादरी की तरफ हाथ बढ़ाया। पादरी ने अंगूठी लेने के लिए अपना हाथ आले से बाहर निकाला। रोजी को पादरी के हाथ में अंगूठी रखते हुए आश्चर्य हुआ कि उस पादरी के हाथ में केवल चार ही उंगलियां थी। रोजी ने अंगूठी तो पादरी के हाथ में रख दी लेकिन वहीं पर बेहोश होकर वह गिर पड़ी।



उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिंदी।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिटलर बाबू



संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
चेन्नई

पात्र परिचय

हिटलर बाबू उर्फ अवधेश नारायण
तिवारी — ऑफिस का बॉस (चीफ
इंजीनियर)

सुनीता — हिटलर की पत्नी

राधा — हिटलर की माँ

रोहित — हिटलर का बेटा

पूजा — हिटलर की बेटी

पुटीराम — हिटलर का नौकर

राधेकांत मिश्रा — हिटलर के दफ्तर
का बाबू

संतोष शुक्ला — हिटलर के दफ्तर
का क्लर्क

सुशांत — हिटलर के दफ्तर का
अकाउंटेंट

लल्लू लाल — हिटलर का नौकर

बल्लू बाल — लल्लू लाल का भाई

रोशन लाल — भ्रष्ट नेता

मोतीलाल — ऑफिस का चपरासी

बांकेलाल — हिटलर का साला

मुकेश खन्ना — सीबीआई का
इंस्पेक्टर

अब्दुल, विकास, सुधीर और सुजीत—
हिटलर के ऑफिस के बाकी कर्मचारी

* * * * *

एक सरकारी महकमा। महकमे में एक बड़ा सा कमरा जिसमें छह टेबल और कुर्सियाँ पड़ी हैं। टेबलों पर फाइल अस्त-व्यस्त तरीके से इधर-उधर पड़ी है। एक टेबल के सामने 45 वर्षीय राधेकांत मिश्रा कुर्सी पर बैठे अपनी पत्नी से बात कर रहे हैं। धीरे-धीरे स्टेज पर उजाला होता है। मिश्रा जी स्वभाव से बहुत ही प्रेमी और भावुक हैं और 45 साल की उम्र में उनकी शादी हुई है। मिश्रा जी वीडियो कॉल के जरिए अपनी पत्नी से बात कर रहे हैं।

दृश्य — 1

राधेकांत मिश्रा : अरे तुमसे मिली नज़र कि मेरे होश उड़ गए।

ऐसा हुआ असर कि मेरे होश उड़ गए।

(ऊँचे स्वर और भर्राई आवाज में गाना गाते हैं)

पीछे से उनके बॉस अवधनारायण बाबू उर्फ हिटलर बाबू का प्रवेश। अवधनारायण बाबू को हिटलर बाबू नाम उनके स्वभाव के कारण मिला है। वह दूसरों को बेवकूफ और खुद को तीसमारखाँ समझते हैं। उनके कक्ष में कुल 6 कर्मचारी हैं और सभी पर वह अपनी धोंस जमाते रहते हैं। हिटलर बाबू उनको गाना गाते हुए देखते हैं और फाइल उठाकर मिश्रा के सर पर मारते हैं। इस बात पर ऑफिस के बाकी कर्मचारी हँसते हैं।

हिटलर बाबू : बहुत होश उड़ रहे हैं मिश्रा। काम में ध्यान दो। अगले हफ्ते हेडक्वार्टर से लोग इंसपेक्शन के लिए आ रहे हैं। अगर फाइलों में कुछ भी गड़बड़ निकला तो होश के साथ-साथ शरीर का गोस्त भी उड़ जाएगा। जब देखो गाना। ऑफिस छोड़कर इंडियन आइडल में क्यों

नहीं चले जाते? अनु मल्लिक की जगह तुमको ही मिलेगी। बुढ़ापे में शादी करने का यही साइड इफेक्ट होता है। अच्छा चलो, कल जो नोट दिया था उसका क्या हुआ?

(मिश्रा जी जेब से 100 रुपये के 5 नोट निकालते हैं)

हिटलर बाबू : अरे मूर्ख कालिदास। यह नोट नहीं, ऑफिस का नोट। ऑफिस के नोट से ऑफिस चलता है। इस नोट से तो दुनिया चलती है।

मिश्रा : अरे आप ही ने तो कल 500 का नोट दिया था छुट्टा लाने के लिए।

हिटलर बाबू : अरे गोबर गणेश (हिटलर बाबू फाईल से मिश्रा को मारने जा रहे हैं)। पीछे से संतोष शुक्ला का प्रवेश। संतोष शुक्ला हिटलर बाबू का मुँह लगा है और ऑफिस का क्लर्क है। वह देवानंद का फैन है और उसी के हाव-भाव को अपनाकर बात करता है।

शुक्ला : अरे छोड़िये सर मिश्रा जी को। यह देखिये आज का अखबार। बहुत बड़ा टेंडर निकला है। नेताजी बार-बार फोन कर रहे हैं कि यह टेंडर उनके भतीजे को ही मिलना चाहिए। सर लगता है कि इस बार हम दोनों का फैमिली के साथ स्विट्ज़रलैंड जाना पक्का।

(दोनों खुलकर हँसते हैं)

हिटलर बाबू : (मिश्रा की ओर देखकर) नोट डालो। हँसो मत। और सुनो सब कोई (इस बार उनका संबोधन ऑफिस के बाकी स्टाफ की तरफ है) अपनी फाइलों को मजबूत बनाओ। मजबूती से मेरा मतलब है कि फाईल भली ही फटी हो मगर उसमें बेईमानी का एक भी सुराग बड़े अधिकारियों को नहीं दिखना चाहिए। अगर हम फाइलों में मजबूत हैं तो हमें डॉनल्ड ट्रंप भी नहीं पकड़ पाएगा।

दृश्य - 2

ऑफिस में चश्मा पहने सुशांत बनर्जी का प्रवेश। सुशांत को बतौर अकाउंटेंट हिटलर बाबू के ऑफिस को ज्वाइन करना है। सुशांत जाकर हिटलर बाबू के टेबल के सामने खड़ा हो जाता है। सुशांत को एक बीमारी है। जैसे ही कोई उसकी तरफ हाथ बढ़ाता है उसे गुदगुदी होने लगती है।

सुशांत : जी, माफ़ कीजिएगा।

हिटलर बाबू : कर दिया।

सुशांत : सर। यह मेरा ज्वाइनिंग लेटर है। आज अकाउंटेंट के पोस्ट पर मुझे ज्वाइन करना है।

हिटलर बाबू : क्या नाम है जनाब का?

सुशांत : जी सुशांतो।

हिटलर बाबू : (गौर से ज्वाइनिंग लेटर को देखते हैं) यहां तो आपके लेटर में सुशांत लिखा है और आप सुशांतो बोल रहे हैं।

सुशांत : जी सर हम बंगाली लोग नाम के आगे ओ लगाते हैं। जैसे सुशांत को सुशांतो, अरविन्द को औरोबिन्दो।

हिटलर बाबू : तो आप लोग बांग्ला में अवध को क्या बोलते हैं?

(चश्मे को नीचे झुकाकर हल्की मुस्कुराहट के साथ बोलते हैं।)

मिश्रा : हाँ हाँ बताओ — बताओ।

शुक्ला : बताओ — बताओ? क्या सवाल पूछा है सर?

सुशांत : अवध को तो अवध ही कहते हैं सर।

हिटलर बाबू : मैं तो मज़ाक कर रहा था। अच्छा हमारे लिए कोलकाता से रोसोगुल्लो लाये हैं।

(ठहाका मारकर हंसना, सारे हँसते हैं, हिटलर बाबू अपने चेयर से उठकर सुशांत को उस पर बिठाते हैं)

(हिटलर बाबू की तरफ हाथ बढ़ाता है। सुशांत हँसते हुए पीछे हट जाता है)

हिटलर बाबू : क्या हुआ भाई?

सुशांत : सर मुझे बीमारी है। जब भी कोई मेरी तरफ हाथ बढ़ाता है तो मुझे गुदगुदी होने लगती है।

हिटलर बाबू : बड़ी अजीब बीमारी है यार। आज से इस चेयर को अपनी चेयर ही समझिए और इस टेबल पर रखी हर चीज़ को अपनी ही समझिए। सिवाय उस मेज़ के अंदर रखी मेरी बीवी की तस्वीर को, उसको अपनी मत समझना।

(हिटलर बाबू के हाथ के इशारे पर शुक्ला और मिश्रा भी सुशांत की टेबल पर अपनी फाइल लाकर रख देते हैं)

हिटलर बाबू : खूब मन लगाकर काम करो सुशांतो। अगर ऐसे ही काम करते रहोगे तो मैं तुम्हें ऑफिस का इंचार्ज बना दूंगा।

सूत्रधार : इस तरह दिन पर दिन बीतते गए। हिटलर बाबू ने अपना ही नहीं मिश्रा और शुक्ला का भी काम सुशांत को दे दिया। यहां तक कि हिटलर बाबू पानी की बोतल भी सुशांत से ही भरवाते। इस तरह 6 महीने बीत गए।

दृश्य — 3

ऑफिस के चपरासी मोतीलाल की एंट्री। मोतीलाल एक नंबर का निकम्मा और नालायक कर्मचारी है। ऑफिस के टाईम पर भी मोबाइल में फिल्में देखता रहता है।

मोतीलाल : नमस्कार सर। भाभी जी ठीक हैं ना?

हिटलर बाबू : बहुत भाभी जी को याद करते हो मोतीलाल। कभी कभार अपना काम भी कर लिया करो।

तुमको फोन करते हैं तो पता चलता है कि हर दिन ऑफिस टाइम पर फिल्म देखने गए हो। संभल जाओ वरना यहां के लोग शिकायत कर देंगे।

मोतीलाल : अरे कौन शिकायत करेगा हमारी सर? जो हमारी शिकायत करेगा उसका हम शिकायत करेंगे। और काम करने के लिए आपका वह बंगाली है न उससे काम करवाइए। और वैसे भी जब हम पैदा हुए थे तो ज्योतिषि ने कहा था यह लड़का छोटा-मोटा काम नहीं करेगा, कोई बड़ा ही काम करेगा।

(नेता रोशनलाल दोमुखिया की एंट्री)

रोशनलाल : जैसा कि बड़ा काम हम करते हैं।

हिटलर बाबू : अरे नेताजी आपने क्यों तकलीफ की। हमें फोन कर दिए होते।

मोतीलाल : परनाम नेताती। परनाम — परनाम। भाभी जी ठीक हैं न?

रोशनलाल : अरे क्या बताए मोती बाबू। भाभी जी का तो पिछले ही हफ्ते स्वर्गवास हो गया।

(पीछे से थके हारे सुशांत का प्रवेश। वह फाइलें ढोते-ढोते थक गया है। धड़ाम से सुशांत अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है)



रोशनलाल : आना ही पड़ा अवध बाबू। आपका जूनियर इंजीनियर बात समझता ही नहीं। उसे ईमानदारी का रोग लगा है। इसलिए सोचा कि आपसे ही बात कर लें। समझा दीजिए इंजीनियर बाबू को कि मेरा टेंडर पास कर दे वरना थोड़ी बहुत ईमानदारी हमें भी आती है।

(धीरे-धीरे चलकर सुशांत हिटलर बाबू की टेबल के पास जाता है)

सुशांत : सर मुझे छुट्टी चाहिए। मैं घर जाना चाहता हूँ।

हिटलर : अरे 6 महीने पहले ही तो तुम्हारी ज्वाइनिंग हुई है। इतनी जल्दी छुट्टी क्यों चाहिए।

सुशांत : सर मेरी तबीयत ठीक नहीं रहती। आपने मुझसे इतना काम करवाया। आपकी फाइलें ढोना, एंट्री करना, यहां तक कि आपकी पानी की बोतल भी मैं ही भरता हूँ। और आपका चपरासी मोतीलाल हर दिन लोगों को भाभी जी कैसी हैं बोलता रहता है। इससे काम निकलवाइए ना।

हिटलर : ऊँगली नीचे करके बात करो। मैं आज भी तुम्हारा बॉस हूँ। छुट्टी तुमको नहीं मिलेगी। जाओ जाकर एंट्री करो।

सुशांत : कैसे नहीं देंगे छुट्टी मुझे। मैं आज ही हेडक्वार्टर को लिख दूंगा

कि आपने फाइलों में क्या गड़बड़ घोटाला किया है। इस नेता को फायदा पहुँचाने के चक्कर में आपने देश के साथ गद्दारी की है। यह देखिए आपके काले कारनामों की फाईल मेरे पास है।

रोशनलाल : ऐसा नहीं कहते बेटा। नेता तो देश का ही होता है। देश की भलाई के लिए वह संविधान की शपथ लेता है।

हिटलर : तुम्हारा इलाज़ तो करना पड़ेगा। तुम ऐसे नहीं मानोगे।

(हिटलर बाबू सुशांत को मारने के लिए ऑफिस की रॉड उठाते हैं लेकिन नेता रोशनलाल उनकी बाँह पकड़ लेता है)

रोशनलाल : रुकिए अवध बाबू। यह वही लड़का है न जो आपने बताया था कि जिसके पेट में गुदगुदी होती है। तो अवध बाबू इसको ऐसे मारिये कि कोई सबूत न मिले। कानून हाथ में मत लीजिये अवध बाबू। हाथ में ग्लव्स लीजिये। ये तुम लोग बैठे-बैठे क्या देख रहे हो। हाथों में सब ग्लव्स पहनो और इस बंगाली को गुदगुदी करके मारो।

(सारे लोग हाथों में ग्लव्स पहन लेते हैं और सुशांत की तरफ बढ़ते हैं। सुशांत घबरा जाता है)

सुशांत : नहीं रुक जाओ तुम लोग। हाहाहाहा हीहीहीहीही हाहाहाहाहा हाहाहाहाहा हीहीहीहीही

(सुशांत हँसते-हँसते बेहोश हो जाता है और स्टेज पर गिर जाता है। पर्दा गिर जाता है।)

दृश्य - 4

पर्दा उठता है। हिटलर का आलीशान घर। हॉल में सोफा सेट, रेफ्रिजरेटर, एसी वगैरह सब कुछ लगा हुआ है। सोफा पर हिटलर की बेटी पूजा टीवी देख रही है। वहीं नीचे बैठा घर का नौकर पुटीराम आटा गूँथ रहा है। घर में हिटलर की 65 वर्षीय माँ राधा भी है जो रसोई में काम कर रही है। घर के बाकी लोगों में हिटलर की पत्नी सुनीता और साला बाँकेलाल है। बाँकेलाल स्वभाव से सीधा है और पूरे दिन हॉफ पेंट में घूमता रहता है। बाँकेलाल तोतला है और अपने टी-शर्ट के नीचे जनेऊ पहन कर रखता है जिसमें घर की तिजोरी की चाबी रहती है। हिटलर जो भी काला धन कमाता है, उसे अपनी तिजोरी में रखता है और उसकी चाबी अपने साले के पास रखता है क्योंकि हिटलर अपने साले को अपने लिए बहुत सौभाग्यशाली मानता है। वहीं डाइनिंग रूम में पूजा टी.वी. पर फिल्म देखते-देखते भावुक हो जाती है और रौने लगती है।

पुटीराम : क्या हुआ पूजा दीदी। लोगों को प्यास काटने पर रोते देखा था। आप आटा गूँथने पर रोने लगी।

पूजा : अरे पुटीराम। मैं प्याज पर नहीं रो रही हूँ। इस फिल्म में छोटी बच्ची की माँ मर जाती है। उसे ही देखकर रो रही हूँ। वैसे पुटीराम तुमने कभी बताया नहीं कि तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं?

पुटीराम : क्या बताऊँ पूजा दीदी। जब मरी मुनिया 2 साल की थी तो धनिया चल बसी।

पूजा : कौन मुनिया और कौन धनिया?

पुटीराम : मुनिया मेरी बेटी दीदी और धनिया मेरी जोरु (कहकर रोने लगता है। पूजा उसे चुप कराती है)

पूजा : तो पुटीराम तुम दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेते?

पुटीराम : नहीं पूजा दीदी हम सौतेली माँ नहीं लाएँगे घर में। और वैसे भी इस जमाने में आपके जैसी लड़की कहाँ मिलेगी। हम तभी शादी करेंगे जब हमें आप जैसी कोई लड़की मिल जाए।

पूजा : (शर्माते हुए) धत्त पागल कहीं का।

अचानक से दरवाजे की घंटी बजती है।

राधा : पूजा दरवाजा खोल। पापा आए हैं।

पूजा दरवाजा खोलती है। हिटलर की अपने घर में एंट्री। उसका माँ

आरती के साथ उसका स्वागत करती है। पीछे-पीछे सुनीता और बाँकेलाल भी खड़े हैं। राधा हिटलर को तिलक लगाती है।

राधा : चंदा है तू। मेरा सूरज है तू।

हिटलर बाबू : यह ले माँ आज की कमाई। इसे अलमारी में रख दे माँ। पूरे दस लाख हैं।

राधा : जुग-जुग जियो मेरे लाल। ऐसे ही तू पैसे कमाता रह और अपने परिवार का नाम रोशन करता रहे। तेरे पिताजी दरोगा थे। मजाल है कि बिना पैसे लिए कोई केस सुलझाया हो। तेरे दादाजी भी एक नंबर के रिश्वतखोर थे। जब तक उनके जेब में पैसों के बंडल नहीं पहुँचते थे तब तक पेंशन की कोई फाईल नहीं बढ़ती थी।

बाँके : जीजाजी आ गए। जीजाजी आ गए। मेले लिए क्या लाए जीजाजी। अले वाह डेयली मिल्क। मेलेडी है चॉकलेटी।

हिटलर बाबू : आइए साले साहब और थोड़ा तिजोरी तो खोलिए।

बाँके अपने जनेउ में बँधे चाबी से तिजोरी खोलता है। उस विशाल तिजोरी में अरबों के हीरे जवाहरात भरे पड़े हैं और करोड़ों रुपये के नोट पड़े हैं। वहाँ पर शुक्ला और मिश्रा पहले से ही मौजूद हैं। ऑफिस के



काम के बाद दोनों हिटलर के घर पर घरेलू काम भी करते हैं।

शुक्ला : आलू छील दिए हैं भाभीजी।

मिश्रा : टमाटर भी काट दिए हैं भाभीजी।

सुनीता : अजी सुनिए ना यह लोग सुबह से खाना बनाने में सहायता कर रहे हैं। इस बार इनको प्रमोशन जरूर दीजिएगा।

मिश्रा : भाभीजी अगर थोड़ा आलुदम मिल जाता तो अच्छा रहता। घर में पत्नी के लिए लेकर जाऊँगा।

हिटलर बाबू : भागोगे की नहीं यहाँ से। बहुत आलुदम खाने आए हैं। तुम खाना निकालो सुनीता। आज बहुत दिन बाद घर में आलुदम खाने को मिलेगा।

हिटलर बाथरूम से नहाकर वापस लौटता है। वहाँ वह देखता है कि हिटलर का बेटा रोहित आकर सोफा पर लेटा हुआ है। रोहित अपनी प्रेमिका से बात कर रहा है।

रोहित : बताओ न पहली बार जब तुमने मुझे देखा तो कैसा लगा था?

(पीछे से हिटलर बाबू की कमरे में एंट्री। अपने बेटे को बात करते हुए देख कर तकिये से मारते हैं)

हिटलर बाबू : जब तू पैदा हुआ था और पहली बार तूने मुझे देखा था तो

कैसा लगा था। जब देखो लड़कियों से बातें। सीख अपनी बहन से और पढ़ाई में मन लगा। नहीं तो तुझे गाँव भेज दूँगा।

सुनीता : हाय। हाय क्यों मेरे हीरे जैसे बेटे को डांट रहे हो।

हिटलर बाबू : तुम्हारा हीरा जैसा बेटा आजकल ज्यादा हीरोगिरी दिखा रहा है। पढ़ाई में मन नहीं लगता इसका। इसके मोबाइल में चेक करो सिर्फ लड़कियों के नंबर मिलेंगे।

सुनीता : जाने दीजिये। एक दिन देखिएगा, मेरा बेटा आपसे बड़ा अफसर बनेगा और आपको कितनी बार बोल चुकी हूँ कि नौकरों का इंतज़ाम कीजिये। यह निकम्मा

पुटीराम तो किसी काम का नहीं। यह इतना सुस्त है कि 24 घंटे सिर्फ खाता है और काम करने में इसकी नानी मर जाती है।

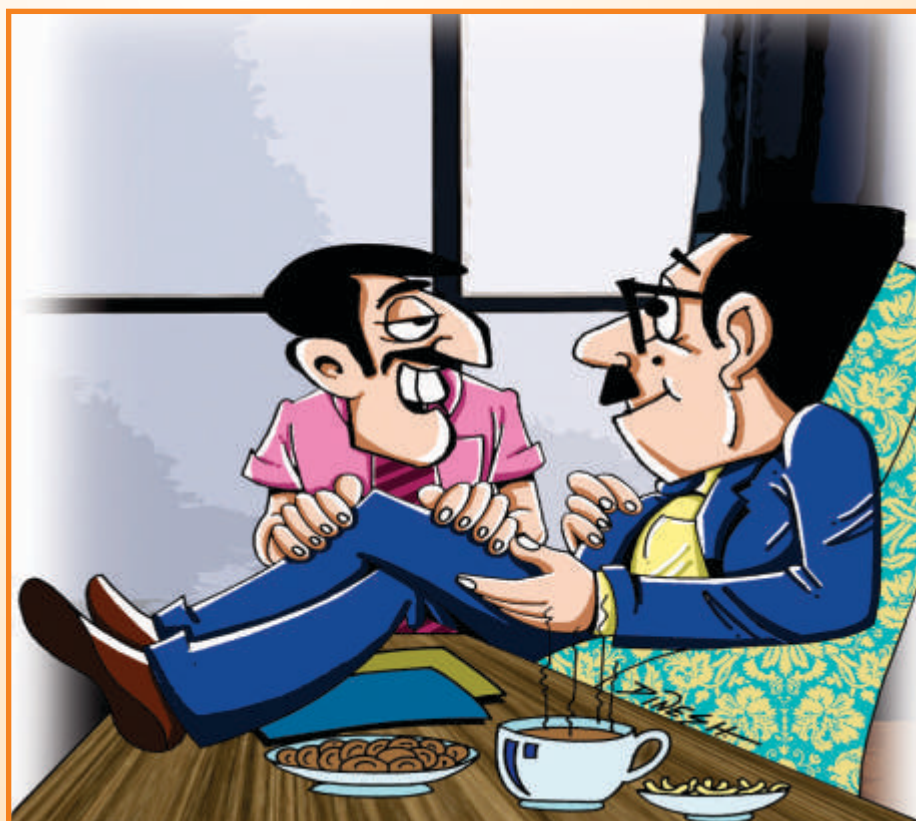
पुटीराम : मेरी नानी को मरे तो 10 साल हो गए।

सुनीता : चुप कर जुबान लड़ाता है।

(अचानक से दरवाज़े पर दस्तक। दो देहाती गंवार जैसा कपड़ा पहने दरवाज़े पर दस्तक देते हैं)

दोनों भाई : हम अंदर आ सकते हैं का।

पूजा : इतना अंदर तो आ गए हो और कितना अंदर आना है।



दोनों : जी मालिक हम हैं लल्लू लाल और ई हैं हमारे बड़े भाई बल्लू लाल। हमें त्रिपाठी जी ने भेजा है।

हिटलर बाबू : कौन? अजयनाथ त्रिपाठी। हाँ हाँ, मैंने उन्हें कहा था कि मुझे दो नौकर चाहिए। और त्रिपाठी जी कैसे हैं? कुछ बोल रहे थे मेरे बारे में?

बल्लू बाल : जी बोल रहे थे कि आप बड़े कुत्ते आदमी हैं। जी मेरा मतलब है कि आपको कुत्तों का बड़ा शौक है।

लल्लू लाल : आप चिंता मत कीजिए आपके घर को हम स्वर्ग और घरवालों को स्वर्गवासी बना देंगे।

दृश्य - 5

बल्लू बाल हिटलर को मसाज दे रहा है।

बल्लू बाल : वाह मालिक क्या बॉडी है आपकी। जवानी में तो आप टॉम क्रूज से कम नहीं लगते होंगे। और वाह पेट में अब भी 8 पैक बीच-बीच में दिख जाता है।

हिटलर : अरे जब मैं जवान था तो लोग कहते थे कि एक दिन मैं अमिताभ बच्चन की जगह लूँगा। लेकिन बीच में मेरे पिताजी का देहांत हो गया और मुझे गवर्नमेंट जॉब में आना पड़ा। आज भी जब मैं घर से बाहर निकलता हूँ तो कई लड़कियाँ छत से नीचे छलांग मारती हैं।

लल्लू : हाँ सोचती होंगी कि किस मनहूस का चेहरा सुबह-सुबह देख लिया?

हिटलर बाबू : तुमने कुछ कहा क्या?

सुनीता : सुनिए मैं किट्टी पार्टी में जा रही हूँ। खाना पुटीराम से गरम करवा लीजिएगा।

बल्लू बाल : छोटे अब अपना प्लान बी चालू करते हैं।

(हॉल में राधा को छोड़कर कोई भी नहीं है। पूजा और रोहित कॉलेज गए हैं और हिटलर ऑफिस। लल्लू और बल्लू अकेले में कुछ खिचड़ी पकाते हुए दिख पड़ते हैं। बाँकेलाल चाचा चौधरी का कॉमिक्स पढ़ रहा है। फोन की घंटी बजती है। हिटलर की माँ राधा फोन उठाती है। पीछे से बल्लू बूढ़े के आवाज़ में बात करता है और लल्लू लाल पीछे से दरवाजे से निकल जाता है)

बल्लू : जी राधा जी बात कर रही हैं क्या?

राधा : जी मैं राधा ही बोल रही हूँ। आप कौन?

बल्लू : जी मैं दामोदर दास बोल रहा हूँ। भूल गई दीदी। मैं आपके दूर के रिश्ते का भाई। मैं आपके नाना के चाचा के मामा के बुआ का पोता हूँ।

राधा : (दिमाग पर जोर देते हुए) अरे दामू भैया कैसे हैं। कैसे याद किया?

दामोदर दास : अरे दीदी मुझे भी एक बड़ा टेंडर लेना है। बड़ी रकम दूंगा दीदी। 5 करोड़। मैंने सुना था कि दीदी मेरे भतीजे का अकाउंट आप ही देखती हैं।

राधा : हाँ हाँ भैया, बचपन से पाल पोस कर इन्हीं हाथों से अवध को पैसा कमाना सिखाया है मैंने।

बल्लू : तो दीदी ठीक है मैं आज ही अपने चाचाजी के हाथों आपको पेशगी पाँच लाख रुपये भेज रहा हूँ।

राधा : आपके चाचाजी?

बल्लू : हाँ मेरे चाचा वीरुभाई मंदानी। बहुत ही भले आदमी हैं दीदी। जब से अनिल ने उन्हें जायदाद से बेदखल किया वह यहीं रहते हैं।

राधा : अनिल, कौन अनिल?

बल्लू : अरे दीदी उनका बेटा।

(अचानक से डोर बेल बजती है)

राधा : लगता है भईया आपके चाचाजी आ गए।

बल्लू : ठीक है दीदी पायें लागूँ।

(राधा जाकर दरवाजा खोलती है और वहाँ एक अर्धे उम्र के व्यक्ति को खड़ा पाती है। असल में यह और कोई नहीं लल्लू लाल ही है जो बूढ़ा बनकर पहुंचा है।)

वीरुभाई : जी नमस्ते। मैं वीरुभाई।

राधा : आइए आइए। बाहर क्यों खड़े हैं। अंदर आइए।

वीरुभाई : भैया घर पर हैं क्या?

राधा : भैया मतलब। मेरा कोई भाई नहीं है।

वीरुभाई : जी मैं अवध जी की बात कर रहा हूँ।

राधा : जी आपको कुछ गलतफहमी हुई है। मैं अवध की माँ हूँ।

वीरुभाई : मैं मान नहीं सकता कि आप अवध की माँ हैं। आप तो मुश्किल से 25 साल की लगती हैं।

राधा : जी आप मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं।

वीरुभाई : नहीं नहीं। मैं सच कह रहा हूँ। आपको देखकर कोई नहीं कहेगा कि आप एक अर्धे उम्र के इंसान की माँ हैं। बहरहाल यह लीजिए पाँच लाख रुपये जो दामोदर दास ने आपको देने के लिए दिए थे। राधा जी, क्या मैं आपको आपके मोबाईल पर फोन कर सकता हूँ।

राधा : (सकपकाते हुए) जी मैं मोबाईल का इस्तेमाल नहीं करती। आप, आप मेरे घर के नंबर पर फोन कीजिए। नमस्ते।

वीरुभाई : जी नमस्ते।

(वीरुभाई के जाने के बाद राधा शर्मने लगती है। दो घंटे बीत जाते

हैं। राधा एकटक फोन की तरफ देख रही है। अचानक से फोन की घंटी बजती है। लल्लू पीछे से वीरुभाई की आवाज निकालकर राधा से बात करता है)

वीरुभाई : राधा जी। आज आपको देखकर दिल को एक अजीब सुकून मिला। उफफफ! कितनी सादगी थी आपके चेहरे पर। राधा जी एक बात कहूँ, बुरा तो नहीं मानिएगा। मुझे आप जैसे जीवनसाथी की तलाश है। जब से मुकेश और अनिल विदेश में सेटल हुए हैं, मैं यहाँ अकेला ही रहता हूँ। राधा जी क्या आप मुझसे मिलना चाहेंगी। बोल राधा बोल संगम होगा कि नहीं।

राधा : (शर्मते हुए) होगा, होगा।

(राधा फोन काटने के बाद आईने में अपने आप को देखती है और शर्मा कर गीत गुनगुनाती है)

राधा : आज मैं जवान हो गई हूँ। गुल से गुलिस्तान हो गई हूँ।

(पर्दे की पीछे लल्लू और बल्लू मुस्कुराते हैं और हाथ मिलाते हैं)

दृश्य - 6

झाड़ंग रूप में पुटीराम व्यायाम कर रहा है। लल्लू बल्लू पीछे से आते हैं।

लल्लू : वाह रे मेरे हृदयक रोशन। क्या बॉडी बनाई है भैया?

बल्लू : तुम पर तो कोई भी लड़की फिदा हो जायेगी।

लल्लू : अच्छा तनिक ई बताओ तुमको पूजा मेमसाब कैसी लगती हैं।



(पूजा का नाम सुनकर पुटीराम मुस्कुरा देता है)

पुटीराम : पूजा दीदी तो हमें शुरू से ही अच्छी लगती हैं।

बल्लू : फिर दीदी। पसंद भी करते हो और दीदी भी कहते हो। मारेंगे खींच के।

लल्लू : पूजा मेमसाब भी तुमको बहुत पसंद करती हैं। बोल रही थी पुटीराम असली हीरो है। घर का सारा काम संभालता है। मेरी शादी तो पुटीराम से ही होगी।

पुटीराम : हम तुमसे शादी नहीं करेंगे

लल्लू : अरे हम अपनी नहीं पूजा दीदी की बात कर रहे हैं। बोलो तो बात आगे बढ़ायें।

बल्लू : अरे तनिक ई तो बताओ भैया कि मालिक अपना सारा ज़रूरी सामान कहाँ रखते हैं?

पुटीराम : मालिक तो अपना सारा सामान अलमारी में ही रखते हैं और अलमारी की चाबी उनके साले के पास रहती है।

(लल्लू-बल्लू एक दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं। दोपहर को 2 बजे फोन की घंटी बजती है। राधा दौड़कर फोन के पास जाती है और फोन उठाती है। पीछे से सुनीता आती है और राधा की बातें सुनती है)

राधा : जी मैं आपके फोन का ही इंतजार कर रही थी। हाँ-हाँ सब अच्छे हैं। मैं जरूर आऊँगी। बाय वीरु।

सुनीता : मम्मी जी किससे बात कर रही थी आप?

राधा : (घबराकर) कोई नहीं मेरे दूर के रिश्ते का भाई था।

दृश्य - 7

(झाड़ंगरूम में पूजा आती है और दूसरी तरफ से पुटीराम आता है। पुटीराम के हाथ में गोभी का फूल है)

पुटीराम : पूजा दीदी। हम आपको बहुत पसंद करते हैं और शादी भी आप से ही करेंगे।

पूजा : दीदी (चौंककर)

पुटीराम : सॉरी लेकिन इतने दिनों तक आपको दीदी बोलने की आदत सी हो गई है। दीदी यह लीजिए गोभी का फूल। गुलाब मुझे मिला नहीं। यह गोभी आपके ज्यादा काम आएगा। इसकी सब्जी बना लीजिएगा।

पूजा : यह तो अच्छा हो लल्लू और बल्लू का जिन्होंने हमें मिला दिया।

पुटीराम : कल मैं दोपहर 2 बजे आपको फोन करूंगा। बाँय दीदी। सॉरी बाँय पूजा।

(पीछे से लल्लू और बल्लू स्टेज पर आकर हँसते हैं)

लल्लू : भाई यह कामतो हो गया। अब दूसरा काम करते हैं।

बल्लू : हाँ भाई जल्दी से अपने दूसरे काम को अंजाम दिया जाए।

(दोपहर 2 बजे लल्लू वापस से वीरुभाई बनकर राधा को फोन करता है।)

राधा : जी मैं आपके फोन का ही इंतजार कर रही थी।

लल्लू : राधारानी मेरी दिली तमन्ना है कि मैं तुमको साड़ी और गहनों से लदा हुआ देखना चाहता हूँ। राधा मेरी यह तमन्ना पूरी करोगी ना। कल मुझसे हनुमानजी के मंदिर में मिलो पूरे गहने पहनकर। मैं तुम्हें वहीं मिलूंगा।

राधा : मैं पूरे गहने पहनकर आऊँगी। मुझे कोई देख लेगा तो।

लल्लू : राधा तुम साड़ी के ऊपर शॉल ओढ़ लेना किसी को पता नहीं चलेगा। वादा करो कि कल तुम आओगी।

राधा : हाँ हाँ पागल। कल मैं जरूर आऊँगी।

(राधा मुस्कुराते हुए अपने कमरे में चली जाती है। फिर लौट कर कमरे में बाँकेलाल को आवाज देती है)

राधा : बाँके ओ बाँके। इधर सुन। थोड़ा तिजोरी की चाबी खोल ना भय्ये जरूरी काम है।

बाँके : क्या जलूली काम है अम्मा। जीजाजी को पता चला तो बहुत डाँटेंगे। मैं नहीं खोलूंगा।

राधा : अरे सुन ना बिटुआ हम तुमको डेयरी मिल्क देंगे। खोल ना भय्या।

बाँके : ठीक है खोल देता हूँ। पल मुझे आज ही डेयली मिल्क चाहिए।

(बाँके अपने जनेउ से तिजोरी खोलता है। तिजोरी के खुलते ही अचानक से थोड़ी देर के लिए इलेक्ट्रिसिटी चली जाती है)

राधा : अरे क्या हुआ इस कम्बख्त लाइन को। बाँके देखना बेटा घबड़ाना मत।

बाँके : भूत पिशाच निकट नहीं आवे। महाबली जब नाम सुनावै।

(थोड़ी देर बाद इलेक्ट्रिसिटी आ जाती है)

राधा : हाँ अब ठीक है। कितना सुंदर लगेगा यह हार मेरे पर।

दृश्य — 8

(हॉल में हिटलर बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा है। अचानक से उसका बेटा रोहित दौड़ते हुआ आता है)

रोहित : पापा, पूजा दीदी पुटीराम के

साथ घर छोड़ कर चली गयी। यह चिट्ठी छोड़ गई है।

हिटलर बाबू : क्या?

सुनीता : अजी सुनते हो अलमारी में रखे मेरे गहने नहीं मिल रहे हैं। अलमारी भी खुली हुई है?

हिटलर : अरे पहलवान। तुझे अपने गहनों की पड़ी है। तेरी लाड़ली पूजा उस पुटीराम के साथ चली गयी।

सुनीता : क्या (कहकर धड़ाम से सोफे पर बैठ जाती है)

हिटलर : अगर अलमारी खुली है तो मेरे फाइलों को तुमने देखा क्या?

सुनीता : नहीं जी मैंने फाइलों की तरफ ध्यान नहीं दिया।

(हिटलर दौड़कर कमरे में जाता है और तिजोरी में फाइलों को ना देखकर गिर जाता है)

हिटलर : गए—गए। मेरे सारे फाइल गए। उनमें मेरे सारे काले कारनामों के सबूत थे जो मैंने नेता रोशनलाल दोमुखिया के साथ किये थे।

(अचानक से सुनीता की नजर अपनी सास राधा पर पड़ती है जिन्होंने इतनी गर्मी में भी शॉल ओढ़ रखा है)

सुनीता : मम्मी जी आपने शॉल क्यों ओढ़ रखा है इतनी गर्मी में।

(राधा यह सुनकर घबरा जाती है।

और पीछे हटने लगती है। सुनीता आगे बढ़ कर राधा का शॉल खींच लेती है। शॉल के अंदर राधा के शरीर पर इतने सारे गहने देखकर सारे लोग चौंक जाते हैं।)

सुनीता : मैंने कहा था ना कि ऐसे कुछ होने वाला है। ऐ जी सुनते हो, आपकी माँ का कहीं अफेयर चल रहा है। हर रोज मैं इन्हें दो—दो घंटे किसी से बात करते सुनती थी।

राधा : ऐ! बहू होकर मुझसे जबान लड़ाती है। मुझ पर इल्जाम लगाती है।

हिटलर : ऐ तुम दोनों, क्योंकि सास भी कभी बहू थी। बंद करो अपना ड्रामा। पहले यह पता करो कि मेरी फाइल कहाँ है और तुम दोनों ही लाड़ली पूजा कहाँ गई?

(अचानक से डोर बेल की घंटी बजती है। सुनीता जाकर दरवाजा खोलती है। अंदर पति—पत्नी के रूप में पूजा और पुटीराम एंट्री करते हैं)

पुटीराम : हेला फादर इन लॉ। हमें आशीर्वाद दीजिए।

हिटलर : फादर इन लॉ। यानी कानून का पिता। बेटा, जब तू नौकर था तो तेरे गले से सही से हिंदी तक नहीं निकलती थी। अब बड़ा अंग्रेजी झाड़ रहा है। जी तो चाहता है कि तेरा गला दबा दूँ।

सुनीता : अब छोड़िये भी। बेटी और दामाद को आशीर्वाद दीजिये।

हिटलर : पहलवान वह तो ठीक है। मगर मेरी फाइलें कहाँ हैं उसमें मेरे सारे सबूत थे। अगर वह फाइल किसी के हाथ लग गई तो तुम्हारा पति जेल चला जाएगा।

(एक शख्स की एंट्री जिसके हाथों में फाइल हैं)

मुकेश : फाइलें मेरे पास हैं।

हिटलर : तुम कौन हो और फाइल तुम्हारे पास कहाँ से आयी?

मुकेश : मैं मुकेश खन्ना हूँ। नाम तो सुना ही होगा।

हिटलर : कौन मुकेश खन्ना? शक्तिमान वाला। तुम्हारी शकल को क्या हुआ?

मुकेश : हाँ शक्तिमान भी कह सकते हो मुझे। मैं सीबीआई इन्स्पेक्टर मुकेश खन्ना हूँ। तुम्हारे नौकर लल्लू लाल और बल्लू लाल ने तुम्हारी यह फाइल हमें दी।

हिटलर : लल्लू-बल्लू तुमको तो मैंने अपना दोस्त समझा। तुमने मेरे साथ इतना बड़ा धोख किया। आखिर क्यों?

(रूम में संशांत की एंट्री)

सुशांत : इसका कारण मैं बताता हूँ।

यह लल्लू-बल्लू नहीं है। यह मेरे दोस्त मयन और मोहित हैं। तुम लोगों से बदला लेने के लिए ही इन्होंने नौकर का रूप धरा था।

बल्लू : तुम लोगों ने इसकी ऐसी हालत कर दी थी कि यह दो महीनों तक लगातार हँसता रहा। हमने उसी दिन कसम खाई थी कि हम तुमसे इसका बदला जरूर लेंगे।

लल्लू : हम तुम्हारे घर में नौकर बनकर आए थे ताकि तुम्हारे गुनाहों के सारे सबूत हथिया सकें। हमने ना सिर्फ तुम्हारी फाइल चुराई जिसमें तुम्हारे काले कारनामों के सबूत थे बल्कि तुम्हारी तिजोरी में रखे सारे गहनों और काले पैसों के सबूत भी पुलिस तक पहुँचा दिए।

मुकेश : चलिए अवध बाबू। जेल में शुक्ला और नेता रौशनलाल आपका इंतजार कर रहे हैं। और माताजी, अवध बाबू को बेईमान बनाने में आपका बहुत बड़ा हाथ है। अगर आप बचपन से अवध बाबू को रिश्तत वगैरह लेने के लिए प्रोत्साहित ना करतीं तो आज अवध बाबू ऐसे ना होते। एक जीजाबाई जैसी माँ थी जिन्होंने वीर शिवाजी का निर्माण किया और एक आप हैं।

(सुनीता, पूजा, बाँकेलाल, रोहित सब हिटलर बाबू को पकड़कर रोने लगते हैं और पुलिस हिटलर को लेकर

चली जाती है। अकेले कमरे में राधा अकेली बैठी है। अचानक से पीछे से लल्लू उर्फ मयन वापस से वीरुभाई की आवाज में बात करता है। फोन की घंटी बजते ही राधा फोन उठाती है।)

राधा : जी मैं आपके फोन का ही इंतजार कर रही थी। पता है अवध को पुलिस पकड़कर ले गई। मैं बहुत उदास हूँ।

वीरुभाई : राधा मुझे माफ करना। मेरे दोनों बेटे मुकेश और अनिल लौट आए। दोनों के बीच अब सुलह भी हो गई है। मैं अब उन दोनों के पास जा रहा हूँ। हो सके तो मुझे माफ करना इस जन्म में तो हम नहीं मिल पाए लेकिन आगे आने वाले हर जन्म में भगवान मुझे तुम्हारा पति बनाए।

राधा उदास होकर सोफे पर गिर जाती है और फिर यह गाना गुनगुनाती है।

*'दिल के अरमान आँसुओं में बह गए।
हम वफा करके भी तन्हा रह गए।'*

सूत्रधार : तो देखा आप लोगों को भी कभी बेईमानी और लालच का साथ नहीं देना चाहिए वरना आपका भी हिटलर बाबू जैसा हाल करने के लिए कोई ना कोई लल्लू और बल्लू जरूर बैठा होगा।

(पर्दा गिरता है)

जीवन की साँझ



तजिन्द्र सचदेवा
वरिष्ठ निजी सचिव

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

"डिंग...डांग...डिंग...डांग।" स्विच पर ऊंगली रखते ही बेल बज उठी, लेकिन प्रतीक्षा करने के उपरान्त भी, जब कोई हलचल सुनाई नहीं दी तो, मैंने पुनः बेल का स्विच दबाया।

"डिंग...डांग...डिंग...डांग।" बेल पुनः बज उठी। परन्तु किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं। फिर मैंने अपना पर्स खोल कर देखा, शायद उसी में चाबी हो जबकि मैं जानती थी कि चाबी पर्स में नहीं होगी, परन्तु व्यर्थ।

जब से "माँ" गाँव से घर आई थी, मैं चाबी अपने साथ नहीं ले कर जाती थी, क्योंकि मुझे मालूम था कि "माँ" शाम को घर पर ही मिलेगी और आठ-दस दिनों से ऐसा कभी हुआ भी नहीं था कि "माँ" दरवाजे पर मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रही हो। मैंने माँ से बोला भी था कि मैं कभी कभार लेट हो जाती हूँ, तुम मेरी प्रतीक्षा ना

करना, चाय पी लिया करो, परन्तु माँ ने कहा –

"सारा दिन तो अकेली बीत जावे है, शाम को भी तेरे साथ चाय का प्याला ना पीऊँ। ना छोरी जब तक तू घर ना आवेगी मैं चाय तो ना पीऊंगी।" माँ चाहती थी कि सायं की चाय हम दोनों साथ-साथ पीये और बातचीत करें। परन्तु आज..... आज क्या हो गया माँ दरवाजा ही नहीं खोल रही थी।

मैंने आवाज लगाई – "माँ...माँ।" कोई उत्तर न पाकर, मैं खिड़की की तरफ मुड़ी। खिड़की से अन्दर झांकने का प्रयास करने लगी। शायद कुछ दिखाई दे जाए, परन्तु मुझे ऐसा कुछ भी आभास नहीं हुआ कि माँ अन्दर है।

बेचैनी बढ़ती जा रही थी। कई बार माँ को आवाज दे चुकी थी। अनेक

बार बेल बजा चुकी थी परन्तु सब व्यर्थ। नेगेटिव विचार मन में आने लगे थे – "कहीं माँ को किसी ने ... कुछ कर तो नहीं दिया। कोई आया हो और माँ ने बिना कुछ पूछे दरवाजा खोल दिया होगा और अन्दर आकर उसने माँ को" लेकिन घर के अन्दर कोई आया हो ऐसा भी कुछ प्रतीत हो नहीं रहा था। माँ को समझाया भी था – "माँ किसी अजनबी के लिये दरवाजा मत खोलना। चाहे कोई भी हो। कुछ भी कहे" माँ की वही आत्म विश्वास से भरपूर आवाज –

"हाँ-हाँ सब समझती हूँ ... ये बाल यूँही धूप में सफेद ना किये मैंने।" मैं हंस दी थी। माँ भी हंस पड़ी थी। परन्तु अब क्या करूँ मैं। मन में विचार आया – क्यों न सिक्योरिटी गार्ड से पूछा जाए शायद उसे कुछ मालूम हो। जैसे ही मैं सीढ़ियाँ उतरने के

लिए मुड़ी, सामने वाले प्लैट से एक नौजवाद महिला ने मुझे रोका —

“सुनिये, यह आपके घर की चाबी। शायद आपकी “मदर” थी, उन्होंने आपको देने के लिए कहा था।”

मैं हतप्रभ “माँ ने चाबी दी थी?.....”

“माँ कहां हैं?”

“मुझे नहीं मालूम,”

“प्लीज, कीज।” मैं उसे देखती रही। अनमने ही मैंने चाबी उसके हाथ से ले ली थी।

“माँ ने बताया नहीं कहाँ जा रही है?”

“नहीं।”

उस महिला ने अपने प्लैट का दरवाजा खोलते हुए उत्तर दिया और अन्दर जाते ही दरवाजा बन्द कर लिया।

मैं परेशान तो थी ही अब हैरान होने की बारी थी। मुम्बई जैसे महानगर में यही परेशानी है कि कोई किसी को नहीं पहचानता। मैंने भी इस महिला को पहले कभी नहीं देखा। यहां पड़ोसी-पड़ोसी को नहीं जानता और रिश्तेदार, जान पहचान वालों से तो कभी मोबाइल पर ‘हैलो’ हो जाए तो ठीक वरना वह भी नहीं। मालूम नहीं सामने वाले प्लैट में कितने किरायेदार आए और चले गए। यह

भी होगी कोई नई किरायेदार। परन्तु इस समय मुझे इसकी सहायता की आवश्यकता महसूस हो रही थी। इस समय मुझे एहसास हो रहा था कि हमारे गांव का वरतावरण कितना अच्छा था। इस परिस्थिति में दस लोग आ कर खड़े हो जाते और मिनटों में माँ का पता चल जाता कि माँ है कहां? और इस पड़ोसन ने जानने की काशिश भी नहीं कि कि मैं कितनी परेशान हूँ? एक बुजुर्ग महिला घर से गायब है और मैं कार्यालय से अभी-अभी छुट्टी करके घर लौटी हूँ। मुझे कुछ पानी वगैरह ही पूछ लेती पर नहीं, उसे तो चाबी लौटानी थी, जो उसने लौटाई उसका कार्य सम्पन्न। उसे अब किसी से कोई मतलब नहीं था। मालूम नहीं माँ से चाबी कैसे ली होगी? माँ ने भी दस बार डोर बेल बजाई होगी तब कहीं जाकर इसने दरवाजा खोला होगा। चाबी लेने के लिए भी इसने दस बहाने बनाए होंगे।

खैर, मैंने चाबी से लॉक खोला और अन्दर दाखिल हुई।

“माँ ... माँ” बच्चों की तरह चिल्लाते हुए मैंने कुछ ही सेकंड्स में सारे कमरे छान लिए परन्तु माँ को घर में नहीं होना था, सो कहीं दिखाई नहीं दी। अब तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा

था, जैसे मेरे शरीर से रक्त की बूंदें धार बन कर बह गई हो और मैं निढाल होकर बैड पर गिर पड़ी। ध्यान तो माँ की तरफ ही था।

माँ को दस दिन पहले ही बहुत मनाने के उपरान्त हम लोग गाँव से अपने घर मुम्बई लेकर आए थे। दोनों बड़े भाइयों को माँ ने उनके यहाँ जाने के लिए मनाही कर दी थी। माँ किसी के साथ भी रहने के लिये तैयार नहीं थी। उसको अपना घर, अपना गांव, गांव के लोग ही अच्छे लगते थे। शहर की बेरुखी उन्हें पसन्द नहीं थी।

जब मैंने कहा — “माँ वहां भी तो अपने लोग हैं, वहां हम सब भी हैं। दीपू भी है। तुम्हें बोर नहीं होने देगा।”

तब माँ ने कहा — “जाणु हूँ री — वो तेरा छोटा तो अपने मोबाइल और वो क्या कहे हैं मुआ ... कमपुटर में घुसा रहेगा और तुम दोनों को अपने दफ्तर से फुर्सत न मिलने वाली ... बात किस से करूँगी दीवारों से के? बाकी गई थी मैं बड़े के यहां, देखा शहर के लोगों ने ... किसी को देखे ही न ... राम-राम बोलो तो ऐसे देखे हैं जैसे उनको गोली मार दी है। सुन ले छोरी मैं ना जाने वाली थारी मुम्बई।”

माँ के दोनों भाइयों के यहाँ जाना बिलकुल पसंद नहीं था। दोनों

भाभियाँ भी उन्हें रखना तो चाहती, परन्तु माँ को शहर के कमरों में सारा दिन अन्दर घुस के रहना कतई अच्छा नहीं लगता। उनको चाहिये बहुत सारे लोगों का घर में आना जाना। घर के समीप मंदिर। सुबह-शाम मंदिर में जाना। परन्तु मुम्बई जैसे शहर में यह सब कहाँ। और सबसे अधिक बुरा लगता है, अगर उन्हें टोक दे। कोई उन्हें टोक दे यह तो उन्हें बिलकुल गवारा नहीं, परन्तु मैं चाहती थी कि माँ हममें से किसी के पास रहे। इस बुढ़ापे में कहीं कुछ हो गया तो हम सभी भाई बहनों को लोग तो बुरा-भला कहेंगे ही, मुझे भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए मैं दिल से चाहती थी कि माँ मेरे साथ रहे।

“माँ, ऐसे क्यों बोले हो ... अगर पसन्द नहीं आया तो मत रहना वहाँ। कोई जोर जबरदस्ती तो ना है ना ... देख लियो कुछ दिन रहके नहीं मन लगेगा तो ... छोड़ जावेगे आके।” मैंने माँ को मनाने का असफल प्रयास जारी रखा। जानती थी माँ को अपनी बात से सहमत कराना टेढ़ी खीर थी। “बच्चा बूढ़ा एक समान” मुझे आज उस भले आदमी की कही यह बात ठीक प्रतीत हो रही थी। आज मुझे एहसास हसे रहा था कि जैसे बच्चे को किसी बात के लिए सहमत

कराना आसान नहीं होता, वैसे ही बुजुर्ग से भी अपनी बात मनवाना आसान नहीं।

“न, छोरी मैं तो न जाने वाली।” उन्होंने मुँह फेर लिया।

मैंने इन्हें “माँ” को मनाने का इशारा किया – “माँ जी, मैं हूँ न, अगर शहर पसन्द न आया, तो ऐसे ही छोड़ जाऊँगा जैसे लेकर जा रहा हूँ।”

पहली बार माँ थोड़ा नरम पड़ती दिखाई दी – “देखो, दामाद जी थारी बात तो मैं मोड़ न सकूँ सू ... पर आप भी अपणी बात का मान रखियो, जब मैं कहूँ तब छोड़ के जाणा होगा ... हों।”

“ठीक, जब आप कहोगी, छोड़ कर जाऊँगा।” तब कहीं जा कर माँ मुम्बई आने के लिये तैयार हुई थी।

मैं जानती हूँ, माँ का मन अभी तक हमारे घर में नहीं लग पाया था। मैं कोशिश भी करती हूँ, लेकिन मुझे मालूम है कि हम तीनों की सोच अलग-अलग है, जिन्दगी को जीने की। दीपू को मोबाइल और कंप्यूटर से फुर्सत नहीं। वह तो घर हो कर भी घर नहीं होता। पढ़ाई करता रहेगा या फिर मोबाइल पर दोस्तों से गप्पे या फिर कंप्यूटर, उसे नानी माँ से कुछ लेना-देना नहीं। कहो तो बोलेगा नानी माँ अभी यहीं तो हैं, कर लूँगा बात, अभी बहुत इम्पोर्टेंट काम कर रहा हूँ। मम्मी प्लीज, अभी डिस्टर्ब मत करो।

इनका तो कहना ही क्या? मेरा मन रखने के लिए माँ को ले तो आए पर समय? समय कहाँ इनके पास? ऑफिस से लेट आ कर बात करने का मन ही नहीं करता। माँ का भी



सोने का समय हो जाता है। माँ भी कई बार शिकायत कर चुकी है।

“अरी छोरी यहाँ तो मेरे साथ कोई बोले ही ना है, सारा दिन घर यूँ ही पड़ी रही हूँ। मेरी तो किसी को परवाह ही ना है।”

परन्तु मैं क्या करूँ? कितनी बार दोनों को समझा चुकी हूँ कि माँ का दिल रखने के लिए थोड़ी बातचीत कर लिया करो ... परन्तु सब व्यर्थ। इतना ही नहीं माँ को हर बात पे टोकने में दोनों कोई अवसर नहीं चूकते। वैसे ये लोग भी अपनी जगह ठीक होते हैं, परन्तु माँ को यूँ लगता है जैसे हमें उनकी परवाह नहीं है। और कुछ ही दिनों में हम लोग उनसे बोर हो गए हैं।

अभी दस दिन पहले की ही बात है जब हम माँ को लेने के लिये गांव गये थे। हमारी गाड़ी जैसे ही हमारे घर के गेट के सामने खड़ी हुई, माँ की आवाज सुनाई दी। देखा तो, माँ पन्द्रह-बीस औरतों को कथा सुना रही थी। मैंने इन्हें संकेत से गाड़ी से न उतरने को कहा। माँ की आवाज काफी ऊँची थी। बचपन में जब कभी हमें माँ को ढूँढना होता था तो हम गाँव की गली में खड़े हो जाते थे। माँ जिस किसी के घर में होती थी हमें माँ की आवाज सुनाई दे जाती थी और हम माँ तक पहुँच जाते थे।

माँ की आवाज हमें साफ सुनाई दे रही थी – “एक घुड़सवार खेतां के रास्ते ते अपनी मंजिल की तरफ जावे था। उसका घोड़ा अकदम तै ठिठक गया। पैर ऊपर उठाकर जोर-जोर ते हिनहिणाने लाग्या। घुड़सवार समझ गया कि घोड़े ने सामने ट्यूबवेल के बहते पाणी को देख लिया है। उसनै प्यास लागी है, और वह पाणी पीणा चाहवे है। घुड़सवार नीचे उतर कै घोड़े ते पाणी पिलाणे खातर ट्यूबवेल के पास ले गया और जैसे-जैसे घोड़ा पाणी के पास पहुँचै था। वह डरण लाग्या। घुड़सवार ने कोशिश की, पर घोड़ा अड़ग्या। वो डरग्या था। अपने पैर ऊपर उठाकर नीचे जमीन पर मारण लाग्या कुछ सोचण के बाद घुड़सवार समझ गया कि इंजन की जो जोर-जोर तै ठक... ठक... की आवाज आवे सै, उसे ते घोड़ा डरै सै, इसलिये पाणी नहीं पी रहा। घोड़ा पीछे भी ना हटै था। इसका मतलब यह था कि घोड़ा पाणी भी पीणा चाहवे है और डरै भी है।”

घुड़सवार ने ट्यूबवेल के मालिक से कहा – “भाई जरा इंजन बन्द कर दो, इसकी ठक...ठक की जोर की आवाज तै मेरा घोड़ा डरै है। पाणी ना पी रहा। इसनै प्यास भी लाग्यी है।”

“अरे भाई, जो मैं यूँ इंजन बन्द कर द्यूंगा तो तेरा घोड़ा के, कोई भी

पाणी कोना पी सकेगा। ट्यूबवेल ही बन्द हो जागा। जै तेरे घोड़े ने पाणी पीणा सै तो ठक...ठक... की आवाज तो सहणी पड़ेगी। ठक...ठक... की आवाज के साथ ही पाणी पीणा पड़ेगा।” घुड़सवार सोच में पड़ गया।

मेरी बहनों सोच थम भी लो। अगर ते राम का नाम लेणा से तो दुनियादारी की ठक...ठक... का शोर ते सुणते होए लेणा पेणागा। यू ठक...ठक... का शोर ते कदे बन्द न होगा ... जिन्दगी भर चलता रहेगा। कदे अपने बच्चां की ... कदे बच्चां के बच्चां की। ये ता चलती ही रहेगी। वा देखो मेरी ठक...ठक... भी आगी। मने देख ली थी ... परन्तु मने सोचया जै मैं ही बीच में छोड़कै चली जांगी तो थाम के सोचोगी। चलो बहनों अच्छा राम...राम। मैं देखूँ आपणी ठक...ठक... ने। पर तम भी ठक...ठक... सुणती रहियो। डरियो मति। और पाणी पीती रही ओ। आई समझ मैं। माँ को तो बस ऐसा माहौल पसंद है।

हमारा जीवन बिलकुल भिन्न। घर का सामान इधर से उधर हो जाये तो एक-दूसरे को टोकते रहेंगे ... यह बुक यहाँ ड्राइंग रूम में क्या कर रही है? दीपू इसे अपने रूम में रखो तुम हमेशा ऐसा ही करते हो, तुम नहीं सुधरोगे। इसे बेडरूम में रखो ... ओ हो, ये कभी समझोंगे नहीं, इनकी टाई

तो हमेशा डाईनिंग टेबल पर ही मिलेगी। बस इसी आदत का शिकार मैंने माँ को भी टोक दिया। हालांकि मेरी मंशा माँ को नीचा दिखाने की कतई नहीं थी।

“अरे माँ, यह क्या कर दिया? सारा कारपेट गन्दर कर दिया आपने।” मैं जैसे ही किचन से डाईनिंग रूम में आई, देखा कि माँ ने सब्जी छीलते हुए छिलके कार्पेट पर फैंक दिये। मैंने जल्दी से किचन में जाकर एक बर्तन लाकर माँ को दिया ताकि माँ छिलके उसमें डाल सके।

“अरी ... क्या हो गया छोरी। इतनी परेशान क्यों हो गई। छिलके ही तो हैं, मैंने पहले कभी सब्जी ना काटी। हम तो गांव में ऐसे ही काटे हैं, बाद में कर दूंगी साफ।” माँ ने बड़ी बेफिक्री से कहा और सब्जी काटनी जारी रखी।

मैंने माँ को कई बार समझाया था कि छिलके नीचे मत फैंका करो, छिलके डालने के लिए कोई बर्तन या कपड़ा रख लिया करो। परन्तु माँ अपनी आदतें बदलने के लिये तैयार ही नहीं। मैंने तो यहाँ तक भी कह दिया था कि — “माँ आपको कोई भी काम करने की जरूरत ना है। आप तो बस मुझे काम बता दिया करो। मैं कर दूंगी।”

“ना छोरी ये तो ना हो सके, काम के बिना मैं तो ना रह सकूँ।” माँ का उत्तर था।

मेरी किस्मत देखो कि जैसे ही मैंने छिलकों के बारे में माँ को टोका और अन्दर किचन में चली गई। तभी ‘ये’ बाहर डाईनिंग रूम में आ गये ... “अरे माँ ये क्या कर दिया। सारा कार्पेट गन्दा कर दिया। रश्मि देखो, माँ ने क्या कर दिया। माँ आप रहने दो।” इन्होंने सब्जी वाला बर्तन ले लिया।

बस, माँ बहुत ही गुस्सा हो गई। माँ को लगा जैसे मैंने उन्हें इस बारे में शिकायत लगाई है। बस धमकी देने लगी गाँव वापिस जाने की। मैंने बहुत समझाया कि ऐसा कुछ नहीं है। आप जैसा करना चाहती हैं वैसा ही करो, हम नहीं रोकेंगे। लेकिन माँ का पारा जैसे सातवें आसमान पर था।

“अरी छोरी, मेरी तो टिकट कटा दे बस। बड़ा तो बड़ा वो छोटा भी कम न है। उस दिन कपड़े क्या धो दिये आसमान सर पे उठा लिया। थारा ही काम करूँ सूँ ... अपना ना ...।” माँ रूँआसी हो कर बोल रही थी उनका गला रुंध—सा गया था।

एक के बाद एक ऐसी कुछ बातें हो गई थी जो माँ के स्वाभिमान पर चोट कर गई थी। कल ही दीपू के धुले हुए कपड़े माँ ने ये समझ कर धो दिये कि

मैले हैं। परन्तु दीपू ने जो कोहराम मचाया कि मैं हैरान रह गई। कभी दीपू को समझाती तो कभी माँ को। माँ ने दीपू से माफी भी मांगी चूँकि दीपू को वही कपड़े पहन कर जाने थे तो उसका मूड सारा दिन ऑफ रहा। माँ से बात भी नहीं कर रहा था।

हाँ, उससे पहले भी दो—तीन दिन से दीपू और माँ की तू—तू मैं—मैं हो रही थी। माँ प्रत्येक बात पर दीपू को टोकती जो रहती थी।

“मम्मी, नानी माँ को कह दो सुबह जल्दी उठना है तो ऊँचे—ऊँचे भजन ना बोला करे।”

“क्यों ना लू राम का नाम? अरी छोरी समझा इसको, सुबह जल्दी उठ कर सैर किया करे। ये आजकल के छोरे पता नहीं क्या करे हैं, रातभर सोवे ना है और सुबह उठे ना हैं मने तो अच्छा ना लागे ये सब ...।”

माँ का नियम था कि सुबह जल्दी उठकर ऊँची—ऊँची आवाज में भजन करना ... माँ की आवाज इतनी ऊँची थी की सारी सोसाइटी सुन ले ... धूप बती करनी, आरती करनी कम से कम एक घंटे का समय तो लगाती थी। और इस दौरान दीपू और इनका जो हाल होता है वह मैं ही जानती हूँ। और फिर बर्तन साफ करने। बर्तनों की आवाज से दीपू को तो चिढ़ थी ही

इन्हें भी बहुत चिढ़ थी। और माँ का बर्तन साफ करने का ढंग ऐसा था कि बर्तनों की आवाज बहुत आती थी। नींद डिस्टर्ब हो जाती थी। इसलिए मैंने माँ को डरते-डरते एक दिन कहा – “माँ तुम बर्तन मत धोया करो। थोड़ी देर बार कामवाली तो आ ही जाती है। तुम बर्तन साफ करती हो ... कपड़े धोती हो तो, इन्हें अच्छा नहीं लगता।”

“तुम सब ने तो मेरे हर काम पे रोक लगा देनी है। यूँ तो मैं निडली हो जाऊँगी इससे तो मैं अपने घर ही अच्छी थी।”

प्रतिदिन परेशानी बढ़ती जा रही थी। एक-दूसरे के प्रति कड़वाहट बढ़ रही थी और अब ... अब यह सब कुछ घटित हो गया था। जिसमें कसूरवार कोई नहीं था अपितु जेनरेशन गैप था। माँ आज जो अपनाने को तैयार नहीं और हम कल से निकलकर आज में जीवन जीने के आदि हो गये थे।

मन की गति इतनी तेज होती है कि चंद लम्हों में ही न जाने कितना कुछ सोच लेता है। किसी ने ठीक ही कहा है, ‘मन आंख के पलक झपकने जितने समय में पूरे जीवन भर की बातें सोच सकता है।’

अब जब थोड़ा होश-हवास में आई तो विचार आया, क्यों ना इनको फोन

करके बताऊँ तभी बेल बजी, सोचा माँ होगी – माँ ..., परन्तु माँ नहीं थी।

“क्या हुआ रश्मि तुम इतनी डरी सहमी सी क्यों हो?”

“माँ?”

“क्या हुआ माँ को?” ... कहाँ है माँ?

मैंने सारी बात इन्हें बताई एक बार तो यह परेशान हो गए लेकिन अगले ही पल इन्होंने फैसला लिया कि पुलिस को शिकायत की जाये।

पहले आना-कानी और फिर ढेरों सवाल जवाब करने के पश्चात पुलिस वालों ने सुझाव दिया कि पहले अपने रिश्तेदारों और गांव में पता करें कि वहां तो नहीं चली गई मां। अड़तालीस घंटों से पहले तो वे डीडीआर भी नहीं लिखते मिसिंग की, यदि किसी बड़ी घटना का अंदेशा सबूत ना हो तो। अब उन्हें कौन समझाता कि मां को ना तो गांव लौटाने के लिए बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन की जानकारी थी और ना ही घर में कुछ इस प्रकार का घटित हुआ था कि मां इस तरह बिना बताए कहीं जाए। उन्हें गांव जाना ही होता तो वे आसानी से अपनी गांव लौटने की जिद मनवा सकती थी। अगर एक बात पर वे अड़ जाती तो उसे पूरी करवा कर ही दम लेती थी, यह बात हमें पता थी। लौटते हुए हम दोनों ही

निःशब्द थे। दोनों ही खुद को अपराधी महसूस कर रहे थे। सोच रहे थे कि क्यों मां को छोटी-छोटी बातों के लिए टोका। उन्होंने कौन-सा हमेशा के लिए साथ रहना था। दो-तीन महीनों बाद तो वो वैसे भी चली जाती।

घर पहुंचे तो दीपू दरवाजे पर खड़ा मिला। हम दोनों के साथ मां को ना देख कर उसका भी पहला प्रश्न यही था –

“अम्मा कहाँ है?”

मैं बिफर पड़ी और अंदर का सारा आक्रोश दीपू पर निकाल दिया। “तूने ही हंगामा किया था न, अम्मा के कपड़े धोने पर?” इन्होंने बीच-बचाव किया तो वो गुस्सा इन पर भी निकल गया –

“जब मैंने एक बार इस प्रकार अम्मा को सब्जी काटने पर टोक दिया था तो तुम्हें दोबारा अम्मा को टोकने की क्या जरूरत थी?”

फिर आत्मग्लानि के अतिरेक में फूट-फूट रो दी।

दीपू और ये मुझे सांत्वना देने की स्थिति में भी नहीं थे। दोनों ही ये कहकर बाहर निकल गये कि वे आसपास देखकर आते हैं। कहीं मंदिर या पार्क में जाने के लिए

निकली हों और रास्ता भूल गई हों।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं मां को कहां ढूँढ़ूँ? मुम्बई शहर का कल्चर ही ये नहीं है कि आस-पड़ोस में जाकर आप कहीं बैठ सकें। और मां को तो कोई जानता ही नहीं है, तो कोई भी उन्हें घर में घुसने ही नहीं देगा। ... और मां किसी के यहां कहीं जाएगी ही क्यों? यहां आसपास कोई मंदिर भी नहीं है, पार्क भी काफी दूर है तो मां के लिए पैदल इतनी दूर जाना संभव नहीं है। ऑटो रिक्शा वह कर सकती हैं पर ऑटो वाले को पता कौन से मंदिर का बताएं। ऑटो वाला तो पूछेगा — कौन से मंदिर जाना है? — ढेरों प्रश्न मन में आ रहे थे और उनके उत्तर भी खुद ही दिए जा रही थी। फिर अचानक मन में कौंधा कि जब हम पुलिस स्टेशन गए थे तब वाचमैन गेट पर नहीं था। लौटते हुए भी वो नहीं दिखा तो हम उससे पूछना ही भूल गए। अगर मां सोसायटी के बाहर निकली होगी तो उसने जरूर देखा होगा।

आशा की एक किरण मन में कौंधी —

“हां, उससे पूछा जाए। जरूर उसे कुछ पता होगा।”

गेट पर पहुंची तो वाचमैन गेट की पीली-पीली उदास जली बत्तियों के बीच रजिस्टर में झांकता मिला। मेरे

पूछने से पहले ही वह पूछ बैठा —

“अम्मा मिली?”

“नहीं, कुछ पता नहीं चल रहा।” मैंने रूआंसे होते हुए उत्तर दिया।

“साहब ने ही बताया अभी कुछ देर पहले ही अम्मा कहीं चली गई हैं। पर मैंने उन्हें जाते हुए नहीं देखा।”

“तुम गेट पर हमेशा रहते ही कब हो? जो उन्हें जाते हुए देखते?” मैंने तैश में जवाब दिया।

“मैडम, इतनी बड़ी सोसाइटी है, कभी कोई किसी काम से, मेटेनेंस की शिकायत नोट कराने बुला लेता है और दिन में दो-तीन बार पूरी सोसायटी में घूम कर भी तो मुझे देखना होता है। तो हमेशा तो गेट पर नहीं हो सकता। गेट को बंद करके भी नहीं जा सकता कि आने-जाने वाले को परेशानी ना हो। हां, आज का मुझे याद है पांच से छह बजे के बीच में दस मिनट के लिए गेट से गया हूँ चक्कर लगाने सोसायटी में। इसके अलावा कहीं नहीं गया। इन दस मिनटों में ही अगर वो बाहर निकल गई हों तो कह नहीं सकता।”

मैं सोचने लगी कि मेरे फ्लैट से गेट तक पहुंचने में भी मां को कम से कम पांच मिनट लगेंगे क्योंकि वो बहुत धीरे-धीरे चलती हैं। अगर ये वाचमैन केवल दस मिनट के लिए ही गया है

तो सिर्फ वो पांच मिनट ही रहे होंगे जिनमें मां बाहर निकल गई। या मां सोसायटी के बाहर गई ही नहीं? सोसायटी में ही है? क्या दूसरे फ्लैट में किसी के घर बैठी हैं? पर यदि किसी दूसरे के घर गई भी होती तो क्या उसे नहीं पता कि हम सब इस समय तक आ जाते हैं? क्या वो मेजबान ही याद नहीं दिला देता कि आपकी बेटी-दामाद आ गये होंगे, अब आप जाओ। उन्हें चिता होगी। ढेरों प्रश्न दिमाग में कौंधने लगे। “क्या कहीं कोई अनहोनी तो नहीं हो गई मां के साथ?” — मैंने लौटते हुए लिफ्ट में घुसते हुए सोचा। मां के कानों में सोने की बालियां और हाथों में सोने की चूड़ियां तो हैं ही। हम कहां जानते हैं सारे फ्लैट वालों को। दस मंजिली इस इमारत में लगभग एक सौ बीस फ्लैट हैं। हो सकता है, कोई अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति इसी इमारत की किसी और मंजिल पर रहता हो जिसने ये ‘रेकी’ कर रखी हो कि पूरे दोपहर ये बूढ़ी औरत घर में अकेली रहती है और कम से कम लाख का सोना तो पहने ही रहती है। सोचते ही डर की एक लहर सी दिमाग से होते हुए पूरे शरीर में दौड़ गई।

मेरा फ्लैट चौथी मंजिल पर है। लेकिन जब लिफ्ट रुकी तो मैंने देखा कि मैं दसवीं मंजिल पर हूँ। मतिभ्रम

की स्थिति में ही मैं लिफ्ट से बाहर निकल आई। जब तक समझ पाऊं — लिफ्ट बंद होकर नीचे की ओर सरक गई। मैंने लिफ्ट काल का बटन दबाया और लिफ्ट के आने का इंतजार करने लगी। इस फ्लोर पर मैं कभी नहीं आई थी, जबकि दो साल से हम यहां हैं सारे फ्लैट्स के दरवाजे बंद थे। जहाँ फ्लैट्स की कतारें खत्म होती थीं वहां सीढ़ियां थी। शायद छत पर जाने के लिए बनी थी। सारे फ्लैट के 'ओवरहेड' छत पर ही थे जो नीचे से दिखाई देते थे। अचानक ही मन में आया कि सीढ़ियां चढ़कर छत पर जाकर देखूं. .. कहीं गलती से अम्मा मेरी तरह ही लिफ्ट से ऊपर यहां तक तो नहीं आ गई। मैं सीढ़ियां चढ़कर छत पर आ गई। कतारों में छत पर वाटर टैंक रखे हुए हैं। ऊपर लाइट की कोई व्यवस्था ना होने से अंधेरा था। लेकिन चांदनी रात होने से इतना अवश्य दिखाई दे रहा था कि आसानी से चल सकूं और चीजों को पहचान सकूं।

अचानक मेरी नजर छत पर बनी पत्थर की बेंच पर बैठी एक आकृति पर पड़ी —

“अम्मा — मैं चीख पड़ी —

तुम यहां क्या कर रही हो? कब से बैठी हो यहां?”

अम्मा कुछ नहीं बोली जैसे किसी दूसरी दुनिया में हो। “चलो, नीचे चलो” — मैंने उन्हें कंधे से पकड़कर उठाया। वो जैसे नींद से जागी — “अरे इतनी रात हो गई? बहुत दिनों के बाद ये चांद-सितारे आसमान दिखा रहे हैं, जब गांव में थी तब।”

मेरी सांस में सांस आई। जैसे मुझे दुनिया की सारी दौलत मिल गई हो और अब मुझे किसी प्रकार का काम-काज करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है।

“हां अम्मा”, मैं वहीं बैठ गई —

“ये चांद सितारे आसमान तो वही हैं, बस हम बदल जाते हैं। उम्र के साथ. जगह के साथ। जब मैं गांव में थी तो पता है अम्मा ... तुमसे पूछा करती थी ये तारे कितने हैं? चांद घटता-बढ़ता क्यों है? और तुम हमेशा टाल जाया करती थी ... मुझे कौन सी गिनती आवे है पूरी, जब तू पढ़-लिख जावे तो गिन लियो कितने तारे हैं। और अम्मा पढ़-लिख तो मैं गई। गिनती भी सीख गई ... पर तारे गिनना भूल गई। कभी मन में आया ही नहीं कि खुले आसमान के नीचे रात की चांदनी में बैठ कर तारे गिनूं और फिर तुम्हें बताऊं कि अम्मा इतने तारे हैं ... इतने सारे ...।” — मैंने

अपनी दोनों बाजू फैला कर अम्मा को बताया और उन्हें अपने अंक में भर लिया। वो एक गठरी की तरह मेरी दोनों बांहों में समा गई। “तुझे पता है, बचपन में तुझे अंधेरे से बहुत डर लगता था तब भी तू मुझे इसी तरह बांहों में भर लेती थी?” — अम्मा पुरानी यादों की गलियों में भटकने लगी। मैं भावुक हो उठी — “डर तो अम्मा, अब भी बहुत लगता है। अब भी लगता है, इसी तरह तुम्हारी बांहों में सिमटी रहूं।” अम्मा ने अपनी दोनों बाजूओं में मुझे और कस लिया — “तो बैठा तो कर मेरे पास ... बचपन में तो मेरा पल्लू ही नहीं छोड़ती थी।”

“हां, बैठा करो अम्मा के पास तुम” — ये भी मुझे तलाशते हुए ऊपर आ गए।

“और हम बाप-बेटे तुम दोनों मां-बेटी को पूरे शहर में ढूंढते फिर रहे हैं।” फिर अम्मा के पास बैठते हुए बोले —

“बताओ अम्मा, कितने तारे गिने? शाम से बैठी हो यहां रात होने आई।”

“या तो जीवन की साँझ है दामाद जी, पता नहीं कितनी लम्बी चालेगी पर मने तो लागे है अब तो बस जल्दी ही रात हो जावेगी और पता नहीं कब आंखें मुंद जावेगी और फिर जीवन का सवेरा ना देख सकूंगी।”

सलमा सितारों वाली



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'

सहायक लेखा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

खुदा की नेमत का वह एक मुख्तलिफ कलाम थी और उसी के मुताबिक था नाम ... सलमा। अल्लाह ने उसे भौतिक दौलत बख्शने में भले ही गुरेज़ किया हो पर नैसर्गिक सौन्दर्य अदा करने में कोई कोर कसर भी ना छोड़ी थी। शायरों की शायरी की पूरी सौगात थी वह। रंग उसका सोने सा सुनहरा, लब गुलाब की पंखुड़ियां और गाल कश्मीर के सेब सरीखे। उस नूरानी चेहरे को नजर से बचाने वाले बाल घटाओं से उमड़ते-घुमड़ते रहते। ... और खुदा बचाए इन सबसे चार कदम आगे थे दो आफताब जो ठीक उसके माथे के नीचे चमकते थे। जिनकी किरणें जब फूटतीं तभी सवेरा हुआ जान पड़ता था। किसी को नजर भर देख लें तो खुदा कसम नींद रकीब बन जाए। किसी भी अदब का कोई शायर उन आंखों से चार होते ही यकीनन कहना ना भूले कि

शेरों का ईजाद इन्हीं को देखकर हुआ होगा। दुनिया की सारी भाषाओं को अपने भीतर समेटने का खम रखने वाली वे आंखें जब बोलती होंगी तो शायर मिसरे लिखना भूल जाते होंगे। पलकें झुकने के बाद ही उठती होंगी कलम और वो भी नीमबेहोशी में।

परवरदिगार की बख्शी इतनी दौलत के बाद भी इस जहां के हिसाब से बेचारी थी बड़ी बदकिस्मत। अब्बाजान उसकी पैदाइश के पन्द्रह साल बाद एक सड़क हादसे में खुदा को प्यारे हो गए थे और अम्मीजान अपने खाविंद के गुजरने के तीन साल बाद जुदाई के गम की अजीमतों को झेलते-झेलते। अम्मी-अब्बू की अकेली दौलत इतने बड़े जहान में और अकेली हो गई थी। खुदा खैर करे! इतने बड़े जहान में एक अदना सा मकान जरूर पीछे छोड़ गए थे अम्मी-अब्बू जो उसकी

अस्मत छुपाने में काफी था या नाकाफी ये तो वक्त ही बेहतर जानता है कि उस अकेली दिलनशीं दौलत पर हाथ साफ करने के फिराक में कई-कई निगाहें जब तक संध मारती फिरती थीं। बर अक्स इसके नजर की चिलमन थी बड़ी मजबूत कि उसे छूना तो दूर उस पार कोई झांक तक नहीं सकता था। छोटा ही सही घर ना होता तो कहां जाती वो? बेदयार होकर कहां भटकती? कौन शुमार करता उसे अपनी जिन्दगी में? कौन रखता रब्त? रिश्तेदारों ने तो इस ख्याल से ही मुंह फेर लिया था कि कहीं गले ना पड़ जाए। क्या फूफियां, क्या मौसियां। क्या चाचियां, क्या मामियां।

हां, मामूजान उससे बहुत मुहब्बत करते थे। इसलिए अब वे ही उसका ख्याल रखने, हालचाल पूछने जब-तक आते रहते थे। मामू तो उसे अपने संग ही ले जाना चाहते थे।

उसी मोहल्ले में तो था उनका घर। पर मामी...? उसके ताने, उपहार, तंज कैसे बर्दाश्त करती वह। मामी जो वाजेह तौर पर उसे मनहूस कहते ना अघाती थी, कैसे अपनी बाहें पसारती उसके लिए। ममेरे भाई—बहन भी मां के कलह के डर से चोरी—छिपे ही मिलने आते थे। जितनी देर रुकते, डरे—सहमे ही रहते। ऐसा कौन था जिसके अंधे पर सिर रखकर गम हल्का कर सकती वो। बस यही एक टूटा—फूटा मकान। उसके अब्बाजान, अम्मीजान की निशाली। जिसमें उनकी यादों के तौर पर कई—कई चीजें मौजूद थी। मसलन लोहे की एक बड़ी सी पेटी जिसमें रजाइयां, दरी, चादरें, अम्मी के साटन के गरारों—शरारों समेत अब्बाजान की बड़े—बड़े बटनों वाली नई अचकन जो उन्होंने मामूजान के बड़े बेटे के निकाह में पहनने के लिए सिलवाई थी पर पहन कहां जाए थे। निकाह से चार रोज पहले ही तो हादसा हो गया था और पांच बजे रोज बाद मौत। एक खाट थी जो खाविंद की मौत के बाद अम्मीजान ने ऐसी पकड़ी की छूटी तब जब ...! इसके अलावा एक डबल बेड, बेंत की चार कुर्सियां, मेज, अलमारी और रसोई की भूख मिटाते कुछ भांडे—टिंडे। यही चीजें थीं जिनकी अब वह खुदमुख्तार थी। जिनके चेहरों में अपने अम्मी—अब्बू के चेहरे टटोलती कि अब्बू ने ये तब

खरीदा था और अम्मी ने तब। उनकी यादों से जुड़े वाक्यों को याद कर उसकी आंखों में सारा समंदर भर आता। यादों की लहरें शोर मचातीं तो सुनामी गालों तक बह—बह आती। फिर कितनी देर तक वह उस सुनामी में बह चुकी चीजों को टटोलती रहती। सदाकत तो यही थी कि एक फूल जैसी नाजुक जां लड़की के साथ खुदा का ऐसा नाइंसाफ कतई—कतई जायज नहीं था।

इस जायज—नाजायज को एक दूसरे से जुदा करने का वक्त अब था किसके पास। अब तो जकावत इसी में थी कि उस खलिश को कम कैसे किया जाए कि कुछ आफियत नसीब हो। जान बेशक अकेली थी पर अकेली जान के पेट को भी भूख तो उतनी ही लगती है। गनीमत रही कि अम्मीजान के जिन्दा रहते जैसे—तैसे करके उसने बारहवीं पास कर ली थी। आगे भी पढ़ना चाहती थी वह। हौसले भी बुलन्द थे। बात अटकती तो बस आर्थिक तंगी पर। पेट भरे या किताबें खरीदे। भूखे पेट पढ़ाई हो भी जाती है तब जब अपनों का साथ हो। अपनों के सहारे दुख बंट जाते हैं। अब जब अपने ही नहीं रहे थे तो सारे दुख सलमा की झोली में ही तो आ गिरे थे।

अम्मी जब सेहतमंत थीं तो सलमा ने उन्हें घर—बार चलाने के लिए हमेशा

दूसरों के कपड़ों में कढ़ाई करते देखा था ताकि अब्बू के कंधे आर्थिक बोझ से झुक ना जाएं। वे कढ़ाई के डिजाइन अपने हिसाब से तैयार करती थीं। किसी में मोती टांकतीं, किसी में गोटा—किनारी सजातीं तो किसी में सीपियां लगातीं। कहीं रेशम के रंग—बिरंगे धागों में सलमा—सितारे पिनो—पिनोकर कढ़ाई की चमक बढ़ातीं। अभ्यस्त होने की वजह से हस्त इतने हुनरमंद हो गए थे कि जो भी उनके द्वारा डिजाइन की गई पोशाकें देखता...देखता ही रह जाता। फिर तो अपनी मुख्तसर सी जुस्तजू भी अम्मी के पास रहिन रख बार—बार उन्हीं के पास लौटता। ताबीर यह होती कि लोग दूर—दूर से निकाह की, जन्मदिन की, ईद की खुशनुमा पोशाकों पर कढ़ाई करवाने के लिए उन्हीं के दर पर दस्तक देते। चमकती पोशाकें देखकर लोगों के चेहरे खिल उठते और अम्मीजान की नर्म—नाजुक उंगलियों में चुभी सुइयों की पीड़ा कुछ रूपए मिलने से कम हो जाती। पर खुदा को कुछ और ही मंजूर था। खाविंद की मौत के बाद सब कुछ छूटता चला गया। मोतियों, गोटा—किनारियों, लेसों, सलमा—सितारों, सीपियों की डिब्बियां अलमारी में कैद होकर रह गईं।

एक रोज सलमा ने अलमारी खोली तो रंग—बिरंगे मोती और सलमा—

सितारे झिलमिला उठे। अम्मी का चेहरा नजरों के आगे क्या घूमा कि गुजरा वक्त चुगलियां खाने पर उतारु हो गया – “मेरी सलमा नहीं करेगी ये सब काम। एक ही तो औलाद बख्शी है खुदा ने जिसे खूब पढ़ना है। आफताब की तरह चमकना है। अपने इल्म से दुनिया को रोशनी बांटनी है। इन नकली सितारों से तेरा क्या वास्ता। तुझे तो असली सितारा बनना है। इसके लिए तेरी अम्मी जो है। इसी बहाने खाली वक्त भी कट जाता है और चार पैसे भी हाथ आ जाते हैं।”

“...पर अम्मी, मैं भी सीखूंगी यह सब आपका हाथ बंटाना मुझे अच्छा लगता है। कोई काम बुरा नहीं होता। आपका थोड़ा-सा बोझ हल्का करने की तदबीर भी नहीं कर सकती क्या मैं?” उस मासूम सवाल के दौरान अम्मी के हाथ से कढ़ाई वाला फ्रेम खींचते हुए सुई हाथ में चुभी तो उस रोज थी पर उसके खून की कसक आज महसूसी थी सलमा ने। अम्मी की बातों में दर्ज इन्तेबाह रह-रहकर उसे सताने लगीं पर इस बार वह रोई नहीं। मजबूत दिल में एक अज्म लिए सीधा रशीदा बी की हवेली पर दस्तक दी।

“कैसी है सलमा ... आज मुद्दतों बाद दिखी है?” सलमा के मासूम से चेहरे की संजीदगी देखकर रशीदा बी के

दिल में मुहब्बत उमड़ आई – “अरी, ओ शहाना! जा ताजी लस्सी में मक्खन डालकर ले आ। और हां, भाईजान के घर से जो शक्करपारे आए थे ना वो भी सजा ला तश्तरी में . .. हमारी सलमा आई है आज।” बुलंद आवाज में उन्होंने अपनी घरेलू नौकरानी को हुक्म बजाया।

“रहने दो बी ... अभी चाय पीकर ही निकली थी।” सलमा अपने हाथ चटखाते हुए सोचती जा रही थी कि बड़े लोगों के अपने तौर-तरीके हैं। भला उस जैसी गरीब की उनके आगे क्या बिसात। फिर भी इतना मान-सम्मान ...? भरा पेट जुबान की मिठास जरूर बढ़ा देता है और ये बड़े लोग कभी किसी के हुए हैं क्या?

“अरी छोड़ ... चाय क्या अभी तक तेरे पेट में बैठी है। और सुना आज इधर का रुख कैसे किया? अपनी बड़ी बी

की याद कैसे खींच लाई तुझे हवेली में?” रशीदा बी ने अपनी गोरी-गोरी गुदाज़ कलाइयों में फंसे सोने के मोटे-मोटे कंगन आगे की ओर खिसकाते हुए चिहुल सी की।

रशीदा बी की बुलंद आवाज और असर-रसूख देख सलमा कुछ ज्यादा ही सिमट गई। बाहर आने को उतावले बोल उसके हलक में दबकर रह गए। उसके अन्तरुनी खल्फशार से गाफिल रशीदा बी ने दोबारा पूछा – “तू इतनी चुप्प सी कब से हो गई री सलमा? क्या बात है? तेरी अम्मी नहीं आई साथ? भई, उसने तो हमारा काम ही छोड़ दिया...”

“अम्मी अब काम नहीं करतीं ...।”

“काम नहीं करती ...! हां, अब तो अपनी बन्नो के लहंगे, गरारे सजा रही होगी मोतियों वाली।”



“अम्मी गुजर गई ...” दो बूंद आंसू छलककर सलमा के गिरेबान को जलाने लगे।

“अच्छा! मोतियों वाली गुजर गई? या अल्लाह! कैसे ...? मुझे तो कुछ मालूमात नहीं।” एक आह सी भरते हुए रशीदा बी ने आसमान की तरफ दोनों हाथ दुआ के लिए फैला दिए।

सलमा की दुख भरी दास्तान सुनकर रशीदा बी को दिली दुख हुआ। वे सलमा की अम्मी को हमेशा मोतियों वाली के नाम से पुकारती थीं। उस मोतियों वाली के हुनर और एखलाक—ओ—आदात का जिक्र करते वक्त सलमा को देख-देख वे कई बार भावुक होती रहीं। साथ ही सलमा के चेहरे पर उतर आए सवालियों का जवाब तलाशने की कोशिश भी की उन्होंने।

“किसी काम से आई लगती है तू। बोल दे जो मन में है। पैसे—धेले की जरूरत हो तो भी बता। नाहक शरमाने की कतई जरूरत नहीं, लाडो।”

“तबस्सुम आपा और आपके सूटों में अब मैं सितारे टांक दिया करूंगी। मुझे सब आता है, बड़ी बी। वो आपके फिरोजी रंग के गरारे में मैंने भी कसीदाकारी की थी। अम्मी ने ही सिखाया था मुझे...” काम हासिल करने की चाह में सलमा ने सारे जुगाड़ लगा दिए।

घुटनों पर हाथ रखे रशीदा बी यकायक बड़ी हो आई सलमा को चुपचाप सुनती रहीं।

“कुछ काम करूंगी तो चार पैसे पल्ले पड़ेंगे ... गुजर—बसर हो जाएगी मेरी भी। जितना देना हो दे देना बी। आपसे ज्यादा का तकाजा थोड़े ना करूंगी।” सलमा ने पहली दफा महसूस कि इस तरह की इल्तजा उसने किसी से पहली दफा की है। आखिर पेट की भूख का तकाजा था।

रशीदा बी ने भी दुनिया देखी थी। अपनी नकचढ़ी बेटी तबस्सुम को जितने नाज—ओ—अंदाज से पाला था उन्होंने उससे भी बड़े थे उसके नखरे। रूपए—पैसे को तो कुछ समझती ही नहीं थी। जमींदार बाप ने इस तरह सिर पर बिठाकर रखा था कि जब तक हवेली में है तब तक जिन्दगी की सारी खुशियां बख्श दो उसे। निकाह के बाद शौहर के घर में मुकद्दर का ऊंट किस तरह करवट बदले, किसे पता। पर लड़की को इतनी आजादी देना रशीदा बी को कभी रास नहीं आया था। जैसी बेटी वे चाहती थीं वैसी वह बिल्कुल नहीं थी। इस बात की उन्हें बेहद कसक थी। बाप ने लड़की पर अपनी सोच का रंग चढ़ाया तो उन्होंने भी इरफान को अपने ढंग से तौर—तरीके सिखाए। दुनियादारी की तालीम दी, ऊंच—नीच सिखाई, संस्कार बख्शे।

और आज उनका शहजादा लखनऊ के एक बैंक में अफसर लग गया है। उसी का घर—बार जमाने वे पिछले चार महीने से लखनऊ में थीं। जभी तो पता नहीं चला कि मोतियों वाली नहीं रही। लस्सी से भरा गिलास सलमा के हाथ में थमाते हुए वे बोलीं — “पहले तू कुछ खा ले, मैं अभी आती हूँ...”।

तिल्लेदार पंजाबी जुत्ती में दब गई अपनी साटन की सुत्थन निकाल वे दूसरे कमरे की ओर मुड़ गई। काफी देर बाद जब लौटीं तो हाथों में महंगी सिल्क का गुलाबी रंग का सूट का कपड़ा था।

“ये ले, इस सूट पर लगा दे सलमा—सितारे...”।

“ये तो बहुत महंगा कपड़ा लगता है ... कहीं खराब ...?”

“नहीं होगा खराब ... तेरी अम्मी के हाथों में हुनर था तो तू तो उसकी कोखजाई है।” रशीदा बी ने उसके अन्दर के डर को तकसीम करने की भरपूर कोशिश की — “जैसे तुझे पसन्द हो अपने हाथ से बना दे। जैसा भी बनाएगी, अच्छा ही बनाएगी। और ज्यादा अच्छा बनाया तो ईनाम अलग से मिलेगा।” उदास से हो आए माहौल को चहकाने की कोशिश में रशीदा बी हंसीं।

“तबस्सुम आपा इसमें बहुत जंचेंगी...।” सलमा के चेहरे पर खुशी क्या छलकी कि रशीदा बी उसके चेहरे की मासूमियत देखती रह गई। आंखों के जरिए दिल में बहुत कुछ उतर गया।

“कब तक पूरा कर देगी सलमा तू इसे ...?”

“कम अज कम तीन महीने तो लग ही जाएंगे बी ... बारीक काम करना पड़ेगा।” कपड़े की मुलामियत सहलाते हुए सलमा बोली।

“जैसी तेरी मर्जी ...।” रशीदा बी ने कंधा थपथपाकर हौसला दिया।

सलमा ने रात-दिन एक कर दिया रशीदा बी का सूट चमकाने में। भूख-प्यास सब भूल गई। याद रहा तो बस अपना काम जिसकी बदौलत उसे चार पैसे कमाने थे।

और एक दिन तय समय सीमा से पहले ही पहुंच गई रशीदा बी सलमा के घर। घर क्या था खामोशी का पर्याय था। कहीं कोई चिड़िया तक नहीं चहक रही थी। उन्होंने एक नजर शिकस्ता से मकान पर डाली और दूसरी पलंग पर बैठी, सितारे जड़ती सलमा पर। कुछ ही पलों में उनकी अनुभवी नजरों ने पूरे घर का जायजा ले लिया। मन फिर बड़ा दुखी हुआ कि इस नाजुक जान के अम्मी-अबू खुदा को प्यारे हो गए। और इससे भी ज्यादा उस मकान की

गली में हो-हल्ला मचाते, फब्तियां कसते मुहल्ले के आवारा लड़कों को उन्हें आता देख तीतर-बीतर होते देखकर। उन्होंने गला खंगारा तो सलमा चौंक गई — “सलाम आलेकुम बी ... मुझे रुक्का भिजवा दिया होता। तशरीफ रखिए ... नहींSSनहींSS... यहां नहीं ...।” फुर्ती से उठकर कोने में एक तरफ पड़ी कुर्सी पर रखे कुशन को उसने एक बार फिर हाथ से फटकारकर रशीदा बी के आगे सरका दिया।

“बड़ी बी, बस ये थोड़ा सा काम पल्ले पर रह गया है। बाकी मैंने रात-दिन मेहनत कर पूरा कर दिया। अच्छी लग रही है ना कुर्ती...?” अपनी पहली कामयाबी पर उसके चेहरे पर कई दिनों बाद उत्साह की मुस्कान खिली थी।

“हां, सुन्दर तो लग रही है पर तेरे हाथों में चुभीं सुइयां बिल्कुल अच्छी नहीं लग रहीं ...।” रशीदा बी ने सलमा का हाथ पकड़ लिया।

“गुलों के साथ खार तो होते ही हैं बी .. इसमें घबराना कैसा। अम्मी हमेशा यही कहती थी कि अपने पैरों पर खड़े होने के लिए चाहे कितनी भी मुसीबतों से गुजरना पड़े, उसका अंजाम हमेशा अच्छा होता है।”

रशीदा बी ने एक ठंडी आह भरी और खालिस शिफॉन का दुपट्टा सिर पर

दुरुस्त करते हुए उठ खड़ी हुई।

“दो पल बैठो बी ... मैं दो मिनट में चाय बनाकर लाई।” कहते हुए सलमा झेंप सी गई। पर बी ने सिर्फ ठंडा पानी ही पीया और हवेली की ओर रुखसत हो गई।

सलमा आज बहुत खुश थी। रशीदा बी के घर जाने को उतावली। कुछ पैसे मिलेंगे और उम्दा काम देखकर बी अलग से बख्शीश तो देंगी ही देंगी। बहुत बड़ा दिल है उनका। एक बार अम्मी के रहते जब वे आई थीं तो चुपचाप उसके हाथ में पचास का पत्ता पकड़ा दिया था। अम्मी ने देखा तो लेने से इंकार कर दिया था पर बी ने पुचकारा था कि लाडो को कुछ मीठा खिला देना। तभी से रशीदा बी के प्रति सलमा के मन में भी मीठा... मीठा सा इज्जत-मान का अहसास पैदा हो गया था और वह उन्हें बड़ी बी कहने लगी थी। उसके बाद कई बार अम्मी के साथ आई थी वह इस हवेली में। स्कूल से लौटते वक्त प्यास लगने पर हवेली के बार रखे मटके से बहुत बार ठंडा पानी पीया था उसने। ... पर आज हालात अलग थे।

रशीदा बी की हवेली पर कदम रखा तो सामने आंगन में ही दिखीं बी। किसी अफसानानिगार के अफसाने में मशरूफ। इशारा पाकर पास पड़े बेंत के मूढ़े पर ही बैठ गई सलमा। झोले

से अपना हुनर बाहर निकाला तो सितारों की चमक चेहरे तक दौड़ गई। रशीदा बी ने मोती, सलमा, सितारे, सीपीयां सबको एक-एक कर छूकर देखा। फिर मरी सी आवाज में बोलीं – “अच्छा है।”

“बस अच्छा ...!” सलमा ने मन ही मन सोचा।

“कितने पैसे दे दूँ री सलमा तेरी पहली कमाई के?”

“बड़ी बी आपसे क्या हिसाब-किताब। जो चाहे दे दो। सर माथे पर रखूंगी। इनायत होगी अगर कुछ और काम भी दिला देतीं चाहो तो शहाना के साथ मुझे भी नौकर रख लो हवेली में। शिकायत का कोई मौका नहीं दूंगी।”

“ये ले बहुत हैं ...।” रशीदा बी ने सलमा की जुस्तजू की तरफ बिना कोई तवज्जो दिए विलायती बहुए से सौ-सौ के तीन नोट निकालकर हाथ पर रख दिए।

दिमाग सुन्न हो गया सलमा का। सैंकड़ों सुइयाँ एक साथ दिल-दिमाग में चुभ गईं। दो हजार के काम की कीमत सिर्फ तीन सौ रूपए। बड़ी बी क्या समझती हैं कि मैं बच्ची हूँ। अम्मी नहीं रहीं तो क्या हुआ। मुझे भी तो अपनी मेहनत का पूरा सिला मिलना चाहिए। कशमकश से उसकी आंखों से आंसू बह निकले

पर रशीदा बी ने रोका नहीं।

“रो ले ... जी भरकर रो ले। मन हल्का हो जाएगा। मुझे पता है आज तुझे अपनी अम्मी की बहुत याद आ रही होगी। मोतियों वाली जिन्दा होती तो कभी तुझे ये काम ना करने देती।”

किस्मत की सताई सलमा सचमुच देर तक सुबकती रही। रशीदा बी चुपचाप उसे रोते देखती रही। थोड़ी देर बाद जब सलमा उठने को हुई तो उन्होंने एक और बेशकीमती सूट उसे थमा दिया। सलमा को लगा जैसे उसकी मुफलिसी का मजाक उड़ाया जा रहा है। मजबूरियों की चादर में लिपटी-जकड़ी लड़की चाहकर भी कुछ ना कह पाई। बड़ी बी के घर से ही तो उसके काम की शुरुआत हुई थी। और फिर बी के कहने से आसपास के इलाके से भी उसे काम मिल सकता था। रशीदा बी के रसूख को कौन नहीं जानता। खैर! घिसी पीली सूती सलवार का बोझ उठाए उस गरीब के पैर अपने घर की ओर घिसटने लगे।

घर पहुंची तो मामी तानों, उलाहनों की गठरी उठाए पहले से ही दरवाजे पर खड़ी मिली।

“सारा दिन कहां दीदे लड़ाती फिरती है तू? अरी करमजली! शरीफ लड़कियां ऐसे गली-गली नहीं भटकती फिरतीं। अपने मामू की

आबरू का भी कोई ख्याल है तुझे ...?”

“दीदे लड़ाने नहीं गई थी मामी ... दीदे फोड़ने गई थी ताकि इज्जत के दो पैसे नसीब हों।” सलमा ने गुस्से में सांकल खोल जोर से दरवाजे को धक्का दिया तो मामी ने भी जहरीली नागिन की तरह एक बार फिर जहर उगला – “हम क्या तुझे खाने को नहीं देते जो गली-गली भीख मांगती फिरती है। जभी तो आवारा लौंडे तेरे दरवाजे के आगे जुमले कसते डोलते हैं। यूं ही नहीं कह रही मैं। पूरे मोहल्ले से किस्से सुनने को मिलते हैं तेरे बारे में। यही हाल रहा तो कौन करेगा तुझ जैसी से निकाह ...?”

“बस करो मामी ... खुदा के लिए बस करो। रहम खाओ मुझ पर।” मामी की जली-कटी बातें सुनकर हमेशा चुप लगा जाने वाली सलमा आज फट पड़ी थी। उसके बदले तेवर देखकर मामी भी पड़ोसियों के डर से देहरी से ही लौट गई थी।

कमरे में घुसते ही सबसे पहले सलमा ने रशीदा बी का दिया सूट पेटी के ऊपर फेंका। फिर दुपट्टे की गांठ खोलकर रूपए शेल्व पर बिछे पोश के नीचे सरका दिए। अंदर बहुत कुछ चल रहा था जिसकी वजह से सिर फटने लगा था। वो तो अच्छा हुआ कि पड़ोस में रहने वाली रजिया पहुंच गई। हाथ में खाने-पीने के सामान

का थाल भी था। बहुत देर तक पूछती रही कि तेरी मामी क्यों तुझ पर इतना बरस रही थी। रजिया की तसल्लीबख्श बातों से जब मन कुछ हल्का हुआ तो रशीदा बी की खुदगर्जी से लेकर मामी के तानों—उलाहनों तक का सारा किस्सा कह सुनाया उसने।

“तू ही बता रजिया, लोग अल्लाह से क्यों नहीं डरते? उसके नाम की नमाज तो अता करते हैं पर ...। ये देख सिर्फ तीन सौ रूपए मिली है आंखें फोड़ने की कीमत। ऊपर से मामी कहती है कि तू तो दीदे लड़ाती फिरती है। अम्मी—अब्बू क्यों चले गए रजिया, मुझे अकेला छोड़कर।” सलमा का जी किया कि वह दहाड़ें मार—मारकर रोए।

रजिया का मन भी भारी हो गया। सलमा को बाहों में भरकर देर तक सहलाती रही वह। मटके से ठंडे पानी का गिलास भरकर जबरदस्ती पिलाया उसे। जब कुछ शांत हुई सलमा तो उसने थालपोश हटाकर खाने का थाल आगे कर दिया — “आज हम दोनों इकट्ठे मिलकर खाना खाएंगे।” और सलमा के ना—ना करते भी एक कौर तोड़कर जबरदस्ती उसके मुंह में ठूस दिया।

सलमा के उदास शब्दों ने मुंह खोला — “तू मेरी इतनी फिक्र क्यों करती है?”

“मुझे नहीं पता। आजकल तेरे बारे में मैं कुछ ज्यादा ही सोचने लगी हूं। रोज अल्लाह से इल्तज़ा करती हूं कि तेरे ऊपर और कुफ्र ना करे। बस एक अर्ज है तुझसे कि तू कभी खुद को अकेला मत समझना। मुझे अपना मोतबर मान।” कहते हुए रजिया की आंखें भीग गई।

अदावत से भरी इस दुनिया में अपनी हमउम्र से जब खुलूस के दो बोल नसीब हुए तो मन की सारी पीड़ा एक वाक्य में बयां हो गई — “सारे कुफ्र अल्लाह नहीं करता रजिया ...”

दो कमउम्र मासूम लड़कियां ज़िन्दगी के फलसफे की बड़ी—बड़ी बातें करती रहीं। रोती रहीं ... हंसती रहीं ... खाती रहीं ... पीती रहीं। इन्हीं पलों में और मजबूत होती रही सलमा। बहुत हौंसला मिला रजिया से उसे।

दिल से ना चाहते हुए भी अगले दिल सलमा रशीदा बी का दूसरा सूट लेकर बैठ गई। अम्मी की यादों के बीच कुछ नीले—पीले सितारे और सुनहरी मोती बेमन से टंकते रहे। जब फूलों भरी छोटी सी बेल पूरी बनकर तैयार हुई तो अपना हुनर देखकर एक ताकत पैदा हुई अंदर। ऐसा महसूस हुआ जैसे साक्षात अम्मी उसके हाथों में समा गई हों। अब हारेगी नहीं जिन्दगी से। हिम्मत से मुकाबला करेगी हर मुश्किल का। मुलाकात पर बी से भी जरूर कह देगी कि दो हजार नहीं तो कम अज कम पन्द्रह सौ तो उन्हें देने ही पड़ेंगे। और इस दूसरे सूट के भी हजार रूपए से कम नहीं लेगी वह। बकरा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या। इन अमीरजादों का कुछ पता नहीं। कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं और



दिखते कुछ हैं। जेहनी सोच जिंदगी की व्यवहारिकता को तसल्ली देती रही।

अभी दस-बारह दिन ही हुए थे सलमा को कसीदाकारी शुरू किए कि रशीदा बी आ पहुंची घर। साथ में उनकी नौकरानी शहाना भी थी, हाथ में एक बड़ा सा बैग लिए। बैग फर्श पर रखवाकर बी ने उसे वापिस हवेली भेज दिया। सलमा को बड़ी तसल्ली मिली कि रजिया पास ही बैठी थी। रजिया जल्दी से चाय बना लाई और कप रशीदा बी के हाथ में थमा दिया। बी कुछ नहीं बोलीं। चुपचाप चाय सुड़कती रहीं।

“बी...?”

“हां...!”

“मैं ये कहना चाह रही।” शब्द गले में ही फंसकर रह गए। हिम्मत जुटाने के लिए पहले अपना गला खंगारा फिर बात का रुख दूसरी ओर मोड़कर पूछा – “बैग में और सूट हैं क्या कढ़ाई के लिए ...?”

रशीदा बी ने कोई जवाब नहीं दिया। उल्टे पूछ बैठीं – “तू पढ़ना चाहती है ना सलमा?”

“चाहती थी, बड़ी बी...” एक बार फिर सुई चुभी तो आह निकल गई। सलमा फटाफट उंगली मुंह में डालकर चूसने लगी। दर्द का लहू

पीते वक्त कढ़ाई का फ्रेम गोद से सरककर एक ओर लुढ़क गया।

“इस बैग में कॉपी-किताबें हैं।”

“अब इनके बदले पता नहीं क्या वसूल लें?” सलमा की सोच दौड़ लगाती रही।

“दाखिले का फार्म और फीस के पांच हजार रुपए भी रखे हैं। कल ही जाकर दाखिला ले लेना। रजिया को भी साथ ले जाना, सहूलियत रहेगी।”

सलमा सन्न रह गई। रजिया भी टुकुर-टुकुर रशीदा बी का चेहरा देखने लगी।

“बहुत-बहुत शुक्रिया बड़ी बी ... पर मेरे ऐसे नसीब कहां। आज आप मदद कर रही हैं पर कल...? कल को मैं रुपए कहां से लाऊंगी? मन पक्का कर उसने कह तो दिया पर अंदर ही अंदर शर्म भी महसूस हो रही थी कि बड़ी बी के बारे में नाहक ऐसा ओछा सोचा उसने।

“मजबूत बन सलमा ... मजबूत बन। नसीब ऊपर से लिखकर नहीं आता। खुद बनाया जाता है। और तुझमें वो काबिलियत है, ताकत है, हिम्मत है।”

आंखों से आंसू फिसलने को हुए ही थे कि सलमा उठने को हुई ताकि अपनी कमजोरी सबके सामने जाहिर ना हो। और बी के सामने तो बिल्कुल नहीं। बड़े लोग गरीबों के इन्हीं

आंसुओं का तो फायदा उठाते हैं। पर बड़ी बी ने तो उसका हाथ ही पकड़ लिया – “बैठ अभी, ईनाम नहीं लेना क्या...?”

“अब ईनाम की कसर रह गई है क्या बड़ी बी ...?” आंखें झुकाए सलमा नीचे चटाई पर बैठकर दीवार से टिक गई।

रशीदा बी ने बैग में डाथ डाला – “ले, ये गुलाबी सूट भी तू ही रख ले अपनी सगाई के लिए। देख, तो कितना खिल रहा है तेरे ऊपर...।”

“ये क्या कह रही हैं बड़ी बी आप? इतना कीमती सूट...।” सलमा को कंपकंपी हो आई। और रजिया...? वह मुंह बाय कभी सलमा को तो कभी बड़ी बी को देखने लगी।

“कीमत कपड़े की नहीं, पहनने वाले की होती है री सलमा ... और फिर हर शख्स को हीरे की परख कहां होती है ...।” कमरे में छाई खमोशी के बीच कुछ देर वे संजीदगी से उसे निहारती रहीं। फिर पता नहीं क्या सूझा कि यकायक पूछ बैठीं – “हमारे इरफान की बेगम बनोगी...?”

सलमा को तो जैसे काठ मार गया।

रशीदा बी के दिल में उतरे मुहब्बत के समंदर ने बुत बनी बैठी सलमा के कंधे प्यार से भिगो दिए – “बोलो सलमा ... चमकाओगी मेरे घर को? बोलो सलमा सितारे वाली ...?”

सुनो अख्तर.....।



अनिल कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

सूरज का गोला पश्चिमी छोर में डूब चुका था और उसकी सिंदूरी किरणें सिमटकर ना जाने कहां चली गई थी। सांझ का सुरमई उजाला धीरे-धीरे रात की स्याही में परिवर्तित होता जा रहा था। नीचे दूर किसी महानगर की बत्तियाँ जुगनू की तरह चमक रही थी। तभी एयर-होस्टेस की मधुर आवाज गूँज उठी – “कुछ ही देर में हम दिल्ली के ‘इंदिरा गांधी एयरपोर्ट’ पर ‘लैण्ड’ करने जा रहे हैं। सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी ‘सैफटीबैल्ट’ कस लें।”

‘अनु’ ने पहलू बदला। विचारों की आंधी का क्रम टूटा। एयरलाइन्स का बोइंग एक तिरछा चक्कर लगाकर नीचे की ओर झुक चला। नीचे एयरोड्रम पर पीली-पीली उदास बत्ती जल रही थी। उसके चारों ओर मरे हुए मच्छरों का काला गुच्छा पड़ा

था। उसे ऊँचाई से नीचे देखने पर हमेशा पहली इच्छा आत्महत्या की होती है। लगता है आत्महत्या की भावना को हमेशा दबाये रहता है हर इंसान, और मौके की जगह जाने पर वह भावना स्वतः ही जाग जाती है।

एक वर्ष का छोटा सा अंतराल। इस एक वर्ष को विश्लेषित करती है अनु, तो लगता है जैसे इस एक वर्ष में सम्पूर्ण जीवन ‘जी’ लिया हो उसने। सच ही तो कहती है ‘एन्नी’ – “अमेरिका में गति है जीवन में ... यानि ‘स्पीड’ ... और तुम्हारा इंडिया ...? जो व्यवस्था जड़ता का रूप ले ले उससे विद्रोह करने में ही भलाई है।”

“कई बार बाहरी गतियाँ भीतर की सारी गतियों को जड़ कर देती हैं ... मुझे लगता है अमेरिका जाकर तुम्हारे अंदर भी एक बिखराव आने लगा है, अपने आप को समेट लो अनु ...।” अख्तर ने पिछले नववर्ष बधाई संदेश

में लिखा था। एक पल के लिए भी तो नहीं भूल पायी है वह ‘अख्तर’ का दहशत से भरा खून सना चेहरा ... भीगी हुई पलकें और गले में फंस से गये शब्द – “मैं जीना चाहता हूँ अनु. .. इसी देश में ... अपने इसी मादरे वतन में ... आत्मसम्मान से ... किसी भी दूसरे हिन्दुस्तानी की तरह ... फिर क्यों समझा जाता है हमें देशद्रोही ... क्या कसूर है मेरा ... सिर्फ यही कि मैं एक मुसलमान हूँ ... बोलो?”

बोइंग रनवे पर दौड़ने लगा। साथ बैठी ‘एन्नी थॉमस’ आश्चर्यजनक रूप से चुप है। पिछले पांच दिनों से वे दोनों ही ठीक तरह सो नहीं पाये हैं। अहमदाबाद की घटनाओं की रिपोर्टिंग के ‘एसाइनमेन्ट’ पर अमेरिकन टी.वी. न्यूज एजेन्सी की प्रतिनिधि के तौर पर वे दोनों पांच दिनों से अहमदाबाद में थे। ‘एन्नी’ उसकी साथी ‘कैमरामैन’ है। बड़ी ही

‘क्यूरियस’ और ‘इनर्जेटिक’। हर व्यक्ति, हर वस्तु को वह कैमरे के एंगिल से देखती है। “कितना ‘सैड़ी’ लग रहा था न, तुम्हारा वो ‘दोस्त’ अख्तर तनवीर ... क्लोजअप में” — अख्तर को याद कर उसने कहा था। “लग नहीं रहा था ... — था वो दुखी ... उसके परिवार के चार सदस्यों को उसकी आंखों के सामने जिंदा जला दिया गया था।” मैं तमतमा गई। “हां—हां वही, वही मतलब था मेरा। आय एम वेरी एक्साइटेड अनु ... बड़ी ही एक्सीलेन्ट फोटोज आयेगी ... यहीं दिल्ली में ही ‘डेवलेप’ करा लेते हैं। वो तो अच्छा हुआ अख्तर साथ ही था वरना वह पुलिसवाला तो तोड़ ही देता दोनों कैमरे मैंने चुपके से उस पुलिसवाले की भी फोटोज ली हैं। किस तरह ‘कुटिलता’ से मुस्करा रहा था, दुकानों—मकानों को जलता देखकर इट्स द इमेजिंग वर्क ऑव माइन सच अनु क्या कमाल की तस्वीरें होंगी एकदम लाइव सड़क पर जलती हुई बसें, कारें दुकानें, मकान लहुलुहान जान बचाने को भागते लोग औरतें, बच्चे और उनके पीछे लाठी, नंगी तलवारें, बंदूकें लिए पीछा करती दंगाईयों की भीड़, मूक दर्शक बनी पुलिस और अनु वो सीन घायल बेटे को सीने से लगाये अस्पताल—अस्पताल चिल्लाती खून से लथपथ दौड़ती माँ और पीछे

दंगाईयों की भीड़ मैं जहां खड़ी थी न ... दी बेस्ट एंगल था कैमरे का। ‘शूट’ करते हुए कैमरा बिल्कुल उसके चेहरे पर ‘जूम’ हुआ ...। उसके चेहरे को देखकर एक बार तो मैं डर ही गई। यू विल सी ... इट विल बी द अवार्ड विनिंग कवरेज ...।” — वह बड़े उत्साह में बोलती जा रही थी। “ओह यू शट अप” — मैं अपने दोनों कानों को हाथों से ढाँप कर चीख पड़ी। “वाट्स रांग विद यू ... अनु?” — वह सहम गई। और तब से हम दोनों ही पूरी यात्रा में एक दूसरे से बिल्कुल नहीं बोले थे।

‘बोइंग एक झटके से अचानक रुक गया। मन ही मन मैंने सोचा, रात होटल में ही ‘ड्राफ्ट’ तैयार कर सुबह ‘फैक्स’ कर दूंगी। कल सुबह ही उन्हें दिल्ली से ‘लांस ऐजिल्स’ की वापसी की फ्लाइट पकड़नी थी। सारी औपचारिकताएं पूरी कर वे जल्दी ही होटल के लिए निकल पड़े। “ताज” में उनका ‘सुइट’ बुका था। रास्ते भर एन्नी अपने कैमरे से खेलती चुपचाप टैक्सी में बैठी रही। मैं जानती हूँ जब तक मैं उसे ‘सॉरी’ नहीं कहूंगी वह मुझसे बात नहीं करेगी। डिनर के लिए उसे मना करके मैं अपने ‘सुइट’ में सामान एक तरफ पटककर बिना चेंज किये पलंग पर पसर गई। आंखें बंद की तो अख्तर का खून से लथपथ चेहरा मेरी आंखों के आगे जीवंत हो

उठा — “मैं जीना चाहता हूँ अनु ... इसी देश में ... पूरे आत्मसम्मान के साथ।”

“कुछ भी तो नहीं बदला है इस एक वर्ष में” — अनु कमरे की खिड़की से बाहर सड़क देखने लगी। ‘वही सड़कों पर अलग अलग दिशाओं में भागते लोग ... गगनचुम्बी इमारतें, नियेनलाइट्स में रंगे पुते चेहरे ... फुटपाथ पर बसेरा करते फटेहाल लोग। “बदल गई है तो केवल वह खुद ... बाकी सब कुछ वैसा का वैसा ही है ... इंडियागेट, लाल किला ... चांदनी चौक ... जामा मस्जिद ...। वह चहलकदमी करते हुए याद करने लगी ...। ‘भारतीय विद्या भवन को जाने वाला बस रूट ... शायद 57 नं. था और बसें ... 71 नं. 63 नं.।’ एक अजीब सी खुशी हुई उसे। सारी बातें उसे अब भी याद है ...? उसके बाद उसका अमेरिका जाना। एक लम्बी एकाकी यात्रा ... कितने बीहड़, कितने सन्नाटे, कितने मोड़ ... और वर्तमान का यह पड़ाव ...। साथ जिये ... भोगे अंतरंग क्षणों का दस्तावेज यादों के झरोखों में बैठकर पढ़ने लगती है अनु ...। एक चेहरा वह कभी नहीं भूल पाई थी ... कभी नहीं — अख्तर ... अख्तर तनवीर। आंखें मूंदकर अतीत की भूमि में छाती तक धंस जाती हैं वह। संवेदनाओं का एक सतरंगा इन्द्रधनुष अपनी बाहें पसार उसे अपने ‘अंक’ में

समेट लेता है। सोच का एक क्रम चल निकलता है।

भारतीय विद्या भवन में वह पत्रकारिता के अंतिम वर्ष में थी। रोज बस से विद्या भवन जाते रास्ते में एक आकर्षक व्यक्तित्व का युवक बस में चढ़ता और दो स्टाप आगे 'मंडी हाउस' उतर जाता। शुरू-शुरू में उसने उसकी ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। एक दिन अखबार में एक नाटक का तस्वीर सहित 'रिव्यू' देखा तो उसे लगा कि जिस अभिनेता, निर्देशक की प्रशंसा के पुल बांधे गये हैं उसका चेहरा कहीं देखा हुआ है। अचानक उसे लगा संभवतः उसने उसे बस में देखा है, वही लड़का। लेकिन बस में उसे देखकर उसे कभी भी नहीं लगा था कि वह लड़का मशहूर रंगकर्मी तनवीर अख्तर होगा। अगले दिन उसने उसे गौर से देखा था — खिलता हुआ गोरा रंग, मजबूत शरीर, लम्बा कद ... आकर्षक व्यक्तित्व। उसके चेहरे पर जो बात सबसे ज्यादा आकर्षित करती थी वो थी, उसकी उदास आंखें ...। उसकी आंखें गहरी काली और बेहद खूबसूरत थी लेकिन उनमें एक विशेष बात थी — 'उदासी की एक गहरी परछाई'। मैं उससे पूछना चाहती थी कि क्या वही तनवीर अख्तर है। पूरे रास्ते मैं इस उम्मीद में उसके चेहरे पर आंखें गड़ाये रही कि वह मेरी

तरफ देखे, लेकिन वह सामने देखता चुपचाप खड़ा रहा। उसका स्टॉप आने वाला था तो वह दरवाजे के पास आकर खड़ा हो गया, मेरे बिल्कुल निकट। एक झटके में बस रुकी और वह सड़क पर पैर रखने ही वाला था कि मैंने आवाज दे दी — "सुनिये ... मुझे आपसे कुछ पूछना है।" वह रुक गया। उसकी प्रश्नवाचक बड़ी-बड़ी आंखें उसे आज तक याद हैं। "कहिए?" वह दरवाजे से ऊपर आ मेरे निकट खड़ा हो गया। मैं घबराकर चुप ...। वह मेरा चेहरा देखने लगा। अचानक बस चल पड़ी। वह मुस्करा दिया — "इत्मीनान से सोच लीजिये ... अब अगले स्टॉप पर ही उतरूंगा।" "आपने यहीं उतरना था?" जानते हुए भी मेरे मुंह से निकल पड़ा। "बस ... यही पूछना था? ... तो मैडम, सचमुच मुझे यहीं उतरना था।" वह खुलकर हँस पड़ा — "आपका मजाक मुझे अच्छा लगा।" मैं झेंप गई — "सॉरी, मेरा मतलब था अब आपको अगली बस से लौटकर आना पड़ेगा।" "हाँ, वह तो आना ही पड़ेगा ... फिर भी यदि आप कुछ और पूछना चाहती हैं तो जल्दी पूछ लीजिए क्योंकि अगर अगला स्टॉप भी निकल गया तो मुझे उसके अगले 'स्टॉपेज' से लौटकर आना पड़ेगा।" "दरअसल कल अखबार में एक नाटक का रिव्यू ..." मैं रुकते रुकते

बोली "वो आपकी ही तस्वीर थी?" अरे नहीं नहीं ... वो तो 'अस्लम' था। 'सफेद खून' — नाटक का एक दिशाहीन नवयुवक। हां, वो रोल मैंने ही किया था।" वह मुस्कुराने लगा। "यानि कि आप तनवीर अख्तर?" मैं उत्साह में बोली। "आप तो ऐसे कह रही हैं जैसे मैं कोई फिल्मी स्टार होऊँ।" — वह संजीदा हो गया। "नहीं, काफी लोग जानते हैं आपको, मेरा मतलब जानते होंगे। आप एक मशहूर रंगकर्मी ...।" अनु बात का सिरा पकड़ते हुए बोली। "कितने लोग जानते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है। किस रूप में जानते हैं, यह ज्यादा महत्वपूर्ण है इसमें जानने वालों की संख्या ज्यादा अहमियत नहीं रखती। हम रंगमंच के कलाकारों को कोई ज्यादा अच्छे रूप में नहीं जाना जाता।" अचानक बस रुकी तो चार पांच लोग उसे धकियाते हुए दरवाजे की ओर लपके — "यार उतरना है तो उतर नहीं तो दरवाजा छोड़।" वह उन्हें रास्ता देता हुआ मेरी तरफ देख उदास सी हँसी हँसा — "देखा! कितने लोग जानते हैं? कितना सम्मान करते हैं?"

उसके साथ एक स्टाप पहले मैं भी उतर गई। "आपके साथ मैं अपनी मंजिल से भी आगे निकल आया।" वह फुटपाथ पर चढ़ते हुए बोला — "अब पीछे लौटना होगा" मैं उसकी

बात का अर्थ समझ मन ही मन मुस्करा दी – “आपको पता है और मैं अपनी मंजिल से पहले ही उतर गई।” “सच...?” उसकी आंखों में खुशी की एक अजीब सी चमक आ गई। “अच्छा, आपको मैं किस नाम से पुकारूँ” – वह मेरी आंखों में झांकता हुआ बोला। “मैं, अनुभूति शर्मा ... अंग्रेजी लिटरेचर में एम.ए. करने के पश्चात् पत्रकारिता में डिग्री ले रही हूँ। चण्डीगढ़ से हूँ और यहां दिल्ली में अकेली रहती हूँ। मयूर विहार में।” वह थोड़ी देर असमंजस की स्थिति में मेरे चेहरे को देखता रहा। वह मुस्कुराता था तब भी उसकी आंखों में छाया उदासी की परछाई कम गहरी नहीं होती थी। उसकी आंखें थी ही ऐसी। मौन की एक बर्फानी नदी हम दोनों के बीच फैल गई। अचानक बस आ जाने से उसकी तंद्रा भंग हुई। मुझे लगा वह कुछ कहने या ना कहने की दुविधा में है। मैंने ही उस नदी को पिघलाने की कोशिश की – “आपकी बस तो उस दूसरी तरफ से आयेगी ... मैं छोड़ दू आपको ...।” अचानक ही उसने कहने या ना कहने की दुविधा से स्वयं को बाहर झटक लिया – “अनुभूति जी ... वैसे तो यह बात मैंने पहले भी कई बार, कई लोगों से औपचारितावश कही है। परन्तु आज आपसे औपचारिकता नहीं निभा रहा। आपसे मिलकर मुझे वाकई बहुत खुशी हुई है ... आय कांट एक्सप्रेस

मायसेल्फ ...।” वह एक झटके से मुड़ गया और चेहरे के भावों को छुपाता। कहीं मैं पढ़ ना लूँ। लेकिन मेरे चेहरे के भाव ...? लगा कि मेरे अंदर सैंकड़ों गुलमोहर के फूल खिल आये हों। मन की संवेदनाओं पर प्यार का प्रथम स्पर्श मेरे चेहरे पर खुशी बनकर नाचने लगा। जीन में कई बार कुछ बातें समझ नहीं आती। और जो बातें समझ ना आयें उन्हें कोई अपना कहे तो वह कितनी प्यारी लगती है। मन स्वयं ही उनके अर्थ खोजने लगता है।

उसके बाद की कहानी बहुत बड़ी है और बहुत छोटी भी। जैसे कि जिंदगी होती है लम्हों, क्षणों, पलों, दिनों, वर्षों में विस्तार पाती बहुत लम्बी, और सिमट जाये तो शून्य भर। हमारी मुलाकातों का सिलसिला बस स्टॉप से शुरू होकर दिल्ली की तमाम सड़कों को नापता हुआ कॉफी हाऊस की टेबिल तक जा पहुंचा था। जहां हम घंटों बैठे दुनिया भर की खबरों पर हँसते, नाटकों के मंचन की रूपरेखा बनाते, अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर ‘वर्बल जगलरी’ करते। कब अनुभूति जी से मैं उसके लिए ‘अनु’ हो गई पता ही नहीं चला ... सच पता ही नहीं चला। उसे देखकर मेरे मन में न जाने कितने इन्द्रधनुष उग आते। जिस तरह बच्चों की पवित्र हंसी का कोई मजहब नहीं होता, हवाओं का

कोई पड़ाव नहीं होता, उसी तरह हमारे इस सम्बन्ध को हम दोनों ने भी कभी कोई नाम देने की कोशिश नहीं की। फिर भी अत्यंत भीतर से जन्मे आवेग के आलोक में हर बार हम एक दूसरे को पहले से अधिक पहचानते रहे और निःशब्द भावनाओं, निकटता को समर्पित होते रहे। हम दोनों के बीच की स्थिति बहाव की स्थिति थी। तरल ... अबाध पर दिशाहीन। मैं जानती थी हमारे सम्बन्धों की कोई मंजिल ना थी। एक आर्थोडॉक्स ब्राह्मण परिवार की मैं, और वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान परिवार का इकलौता वारिस ... इमाम परिवार से। बेशक हमारी धार्मिक मान्यताएं अलग थीं, फिर भी हमारे दृष्टिकोण में कहीं भी सांप्रदायिक विद्वेष नहीं था। अख्तर के विचारों में एक विस्तृत धार्मिक सहिष्णुता थी, जो मुझे प्रभावित करती थी। राजनीतिज्ञों और फिरका परस्तों के प्रति एक तीव्र आक्रोश था जो मुझे उसके अहितकर परिणामों के कारण डराता था। यह सम्बन्ध मेरे एक ‘बेहद निजी सम्पत्ति’ की तरह था जिसे मैं किसी के सामने सार्वजनिक करना नहीं चाहती थी। अख्तर के सामने भी नहीं। इसलिए मैं जानबूझकर अनभिज्ञ बनी रही। मेरी अनभिज्ञता को वह अपनी अभ्यस्त आत्मियता में घोलकर छोटे छोटे संवादों में मुझे थमाता रहा और मेरे द्वारा उसके प्यार को ना समझ पाने

की कड़वाहट को चुपचाप पीता रहा। एक वर्ष कैसे गुजर गया पता ही नहीं चला। मेरी पढ़ाई पूरी हुई और मुझे दिल्ली छोड़ना पड़ा। जैसे कल की ही तो बात है। अतीत के दरवाजे की चौखट पर लटकी हुई।

मेरा दिल्ली में आखिरी दिन था। दिन भर मैं सामान 'पैक' करती रही। अगली सुबह मुझे चण्डीगढ़ जाना था। टेबल-कुर्सी पर बैठी मैं अपनी डायरी में शायद कुछ लिख रही थी कि वह चुपचाप मेरे पीछे आ खड़ा हुआ। थोड़ी देर बार मैंने पलट कर देखा तो चौंक पड़ी – "तुम?" प्रति उत्तर में उसने एक प्रश्न धीमी आवाज में मेरी तरफ सरका दिया – "क्या सचमुच चली जाओगी अनु?" वक्त की चिनाई में भीतर कहीं दफन कोई छोटा सा आवेग उसके होठों पर एक फड़फड़ाहट बन कांप उठा – "मेरा मतलब कुछ दिन यहीं रुककर दिल्ली में ही 'ट्राय' करती ... कोई ना कोई जॉब मिल ही जाता।" मैं टुकुर-टुकुर उसका चेहरा देखने लगी। उसकी आंखों में उदासी की गहरी परछाई उसके पूरे चेहरे पर फैल गई थी। लगा जैसे वह पूरी रात सोया नहीं है। एक अतृप्त प्यास मुझे बैचैन करने लगी। मेरा मन, शरीर, आत्मा मेरे संस्कारों पर हावी होने लगे। कई बार शरीर, मन और आत्मा से भी आगे निकल जाता है। मैंने

सोचा यदि इस एक क्षण पर मैंने विजय पा ली तो संभवतः अपने और अख्तर के परिवार की भावनाओं को आहत करने के पाप से बच जाऊँ। अचानक मैंने अपने को अपने से ही वापिस झटक लिया ... उस अभिशप्त चाह के दायरे से बाहर।

"जाना ही होगा अख्तर" मैंने गला साफ कर आवाज की सलवटें दूर करने की कोशिश की – "क्या करूँगी यहाँ रुककर ... वहाँ चण्डीगढ़ में माँ है, पापा हैं, भाई है ... बाद में किस्मत कहां ले जाये पता नहीं।"

"हाँ, यह बात तो है ... यहाँ कौन है तुम्हारा। जाना ही चाहिये ... पर देखना भूल मत जाना" वह एक खोखली हंसी हँसा। कितना झुठला सकता है कोई अपने आपको ... अपने मन को। भीतर की हालत दोनों के चेहरों पर लिखी हुई थी ... बिछुड़ने की चोट से आहत। उसके चेहरे पर एक निहायत झीनी आवेगजमी रूआंसी छाया झलकी ही थी कि वह मुड़ गया – "अब मैं भी दिल्ली नहीं रुकूँगा – घर चला जाऊँगा ... अहमदाबाद।"

उन घटनाओं-दुर्घटनाओं का क्या, जो दो राहों चौराहों पर नहीं घटना विहीनता के सुनसान अंधेरे में घटती हैं। एक सतत और खामोश अहसास की तरह। अपने से अपना रिश्ता ही

तब दो टूक हो जाता है उस रात नींद अपने को बिस्तर के हवाले कर देने के बावजूद भी नहीं आई। आंखें छत पर मकड़ी के जाले में फंसी मरी हुई मक्खी की तरह अटक गई थी। सारी रात किसी के रोने सिसकने की आवाज कमरे से आती रही।

इसी दौरान मेरा अमेरिकन न्यूज ऐजेन्सी में चयन हुआ और मुझे अमेरिका जाना पड़ा। अख्तर 'अहमदाबाद' घर चला गया और पिता के व्यवसाय को संभालने लगा। हम दोनों ही किनारों से दूर बहते अपनी अपनी पहचान, संस्कार के दायरों में डूबते उतरते रहे। लगने लगा था कि जीवन चुपचाप खिसक चला है कुछ बटोरने जैसा कुछ बचा ही नहीं ... रीते हाथ। रीतेपन की यह विभीषिका इस सम्पन्नता और शोहरत के एकान्त में और ज्यादा प्रति ध्वनित होने लगी थी। फिर भी अप्राप्ति के अंतहीन फैलाव में अपनी नन्ही सी प्राप्ति उस मित्रता को हम दोनों ही एक स्वार्थी की तरह पकड़े रहे। पत्रों और टेलीफोन द्वारा हमारे बीच संवाद की स्थिति लगातार बनी रही। वह अक्सर टेलीफोन पर पूछता – "विवाह कब कर रही हो – मुझे बुलाना मत भूलना।" मैं जवाब देती – "अभी वह 'इन्सान' मिला नहीं है, मिलते ही सबसे पहले तुम्हें खबर करूँगी।" अचानक एक दिन उसका

पत्र मिला — “मुझे वह लड़की मिल गई है। आयशा — नाम है। इतनी अच्छी कि इंतजार नहीं कर सका। झटपट निकाह पढ़वा लिया। तुम्हें जल्दबाजी में बुला नहीं सका।” — पढ़कर अच्छा लगा या बुरा आज तक नहीं समझ पाई अनु। अंत में लिखा था — “तुम भी अब जल्दी ही शादी कर लो।” अपने तरीके से मैं इस “अब” शब्द का अर्थ निकालती रही। कुछ दिनों बाद मैंने भी उसे पत्र लिख दिया। “पिछले दिनों मैंने एक यहीं के हिन्दू लड़के से कोर्ट मैरेज कर ली है।” इसी बीच एक दो बार मैं भारत आई परन्तु अख्तर से चाह कर भी ना मिल सकी।

अचानक परिस्थितियों ने ऐसा मोड़ लिया कि नियमित रिपोर्टर की अनुपलब्धता के कारण गुजरात की साम्प्रदायिक घटनाओं की रिपोर्टिंग का काम मुझे करने के लिए भारत जाने को कहा गया। साथ में कैमरावूमैन के रूप में “एन्नीथामस” सहर्ष तैयार हो गई। उसके लिए ऐसी घटनाएं “फीडबैक” का काम करती थी। ट्रेन में एक विशेष समुदाय के लोगों को जिंदा जला देने की घटना को लेकर पूरे गुजरात में तनाव का माहौल था। जब हम अहमदाबाद पहुँचे तब दंगे शुरू नहीं हुए थे। पहुँचते ही हमने अख्तर को फोन किया। “हम आधे घन्टे में तुम्हारे घर

पहुँच रहे हैं। जल्दी पहुँचो।” होटल में कमरा बुक करा सामान छोड़कर हम उसके घर पहुँच गए। वह अभी तक पहुँचा नहीं था। मेरी आवभगत उसके अब्बू अम्मी और दो छोटी बहनों ने बड़ी ही गर्म जोशी से की। “भाईजान आपकी बहुत तारीफ करते हैं।” उसकी बहनें मेरे गले लिपटती हुई बोली। थोड़ी देर बाद मैंने ही पूछ लिया “आयशा जी नहीं दिख रही”। जवाब में उसकी बहन चौंक पड़ी — “कौन आयशा? मैं तबस्सुम और इसका नाम तरन्नुम हैं।” एक अंदेशा मुझे था फिर भी मैंने पूछ लिया — “अख्तर की पत्नी आयशा।” जवाब में सारे खिलखिला कर हँस पड़े। “अख्तर ने तो शादी ही नहीं की अभी तक।” तभी अख्तर आ पहुँचा। “क्या जरूरत थी झूठ बोलने की” मैं शिकायती लहजे में बोली। वह हँसने लगा — “अभी तक वह ‘लड़की’ ही नहीं मिली। देखो, इस बार मैंने तुम्हें मात दे दी।” फिर कुछ क्षण रुककर बोला “अपने पतिदेव को भी ‘भारत दर्शन’ करा देना था। साथ ले आतीं।” “तुमने कब की मैरेज?” एन्नी आश्चर्य से बोली। वह भी भारतीय माँ और भारत में ही नियुक्त रहें अमेरिकन पिता की संतान थी और भारत में ही पढ़ी थी तथा अच्छी तरह हिन्दी जानती थी। मैं चुप रह गई। अख्तर चुपचाप मुझे टुकुर-टुकुर

देखता रहा। खामोशी अख्तर के अब्बू ने तोड़ी “तुम्हें बेटी इस माहौल में यहाँ नहीं आना चाहिये था। पूरा शहर जल रहा है। दंगे भड़क उठे तो जान बचाना मुश्किल हो जायेगा। और अगर तुम अमेरिका की तरह यह सोचती हो कि कानून है, प्रशासन है, पुलिस है तो तुम गलत सोचती हो। इन सबके हाथ पैर बँधे हुए हैं और मुँह बंद। आम हिन्दू और मुसलमानों में कोई विद्वेष नहीं है यहाँ। अरे, जहाँ दो वक्त की रोटी का जुगाड़ नहीं है 80 प्रतिशत लोगों के पास, वहाँ धर्म के लिए मरने मारने की बात कहां जेहन में आती है। सारे दंगे इन राजनीतिज्ञों और फिरकापरस्त लोगों द्वारा प्रायोजित होते हैं, असामाजिक तत्वों के सहयोग से।”

“और इन सब घटनाओं की आग में घी डालने का काम करता है तुम्हारा मीडिया ये टी.वी., अखबार, रेडियो, पत्र पत्रिकाएं” — अख्तर आक्रोश से बोला “तुम्हारे इस मीडिया ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस देश के हिन्दू मुसलमानों को आमने सामने यद्ध के मैदान में खड़ा कर दिया है। अपने समाचारों को बेचने के लिए महज ...? कितनी घृणित मानसिकता है। वे यह नहीं सोचते कि साम्प्रदायिक नफरत की यह आग इनके हवा देने से पूरे देश में फैल जायेगी। आज स्थिति यह है कि हर

मुसलमान को भारत विरोधी और पाकिस्तान का समर्थक समझा जा रहा है। वे हमें देश से निकालने के बयान देते हैं। क्यों? क्यों मैं इस देश में नहीं रह सकता? क्या सिर्फ इसलिए कि मैं मुसलमान हूँ और मेरा नाम तनवीर अख्तर है। क्या ये देश मेरा नहीं, ये जमीन मेरी मातृभूमि नहीं। तो बताओ मुझे, कौन सा है मेरा मादरे वतन क्या है मेरी राष्ट्रीयता, मेरी मातृभाषा? तुम नहीं समझोगी अनु, क्योंकि तुम भी हिन्दू हो। तुम भी मुझे केवल मेरे धर्म से पहचानती रही हो अब तक, उससे अलग करके तुम मुझे देख ही नहीं पाई।" पीड़ा से उसका चेहरा तमतमा उठा।

इन्सान को बाँटने की प्रक्रिया में वे भगवान को भी बाँट रहे हैं। राम को रहीम के मुकाबले खड़ा कर देते हैं। वासुदेव कृष्ण को वाहेगुरु से लड़ा रहे हैं और आज तो अयोध्या में राम को राम से ही लड़ाने का कुचक्र जा रहा है। क्या इससे इनकी नीति आम लोगों की नजरों में स्पष्ट नहीं हो जाती? "सच बात है बेटा" अब्बू ने उसकी बात का समर्थन किया। लेकिन क्या फर्क आया। एक पूरी की पूरी पीढ़ी निकल गई। 1947 में मानव इतिहास की उस सबसे बड़ी त्रासदी को मैंने अपनी आँखों से देखा है। धार्मिक उन्माद और साम्प्रदायिक विद्वेष की उस आँधी में राजनीति को

मैंने घुटने टेकते और संस्कृति को लहुलुहान होते देखा है। तब भी बेटा, इस धर्म के परचम को ही सबसे ऊँचा करके लहराया जा रहा था। मानवता और इंसानियत पैरों तले रौंद दी गई थी। उसी दिन मर गई थी वे, उसी दिन" बोलते-बोलते वे सुबक पड़े।

"तुम गलत जगह छू रहे हो अख्तर" — मैं असहज हो उठी — "कौन भारत के मुसलमानों को बाहर निकालने की बात कर रहा है? चंद मुट्ठी भर मौका परस्त लोग, जो ना हिन्दू हैं ना मुसलमान। जिनका एकमात्र धर्म है केवल अपना स्वार्थ, और तुम पूरे एक वर्ग को, संप्रदाय को दोषी ठहरा रहे हो। यहीं तो चाहते थे वे।

माहौल अचानक ही भारी-भारी सा हो उठा। "लोग पागल नहीं हैं अनु ... लेकिन जब वो उन्मादी भीड़ बनते हैं तो वे पागल से भी बदतर हो जाते हैं। तुम देखना चाहोगी न, चलो मेरे साथ।" ... अख्तर मेरा हाथ पकड़कर कार तक ले आया — "बैठो, तुम भी एन्नी। लौट रहा था तभी शहर में कर्फ्यू एनाउन्स हो गया था। सिर्फ आधे घंटे की चेतावनी दी है प्रशासन ने। तुम्हारे कहे अनुसार 'कर्फ्यू पास' तुम्हारा मैं ले आया हूँ। लेकिन दंगे शुरू हो चुके हैं। दंगाईयों ने 'कर्फ्यू' लगाने से पहले ही अपने काम को अंजाम देना शुरू कर दिया है।" मैं

चुपचाप एन्नी के साथ कार में बैठ गई। अख्तर के अब्बू-अम्मी ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह माना नहीं।

बाहर सड़क पर निकले तो अजीब सी अफरा-तफरी का माहौल था। हर तरफ आगजनी, लूटपाट और नारेबाजी ...। हैवानियत का नंगा नाच हर गली मुहल्ले बाजार में हो रहा था। कार की खुली खिड़कियों से 'एन्नी' उन दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करती जा रही थी। वह जहाँ कहती, अख्तर वहीं कार रोककर बाहर निकल आता। एक जुनून सा सवार था अख्तर पर। अचानक ही दंगाइयों की भीड़ ने हमें घेर लिया। कार पर लाठियों, पत्थरों की बौछार कर दी। अख्तर हमें नीचे झुकने के लिए कहकर तेजी से वहाँ से कार निकालने की कोशिश करने लगा। लेकिन कार के सामने पूरी भीड़ थी। लापरवाही से कोई कार के नीचे भी आ सकता था। गति धीमी की तो लाठियों से लोगों ने कार के सारे शीशे तोड़ दिये। अख्तर को भी चोटें आईं। उसे खींचकर कार से बाहर निकालने की कोशिश की। बहुत मुश्किल से वहाँ से निकल पाये। अगर एक क्षण को भी अख्तर कार रोक देता तो हमारा बचना मुश्किल था। मैं 'सन्न' रह गई थी। एन्नी का भी बुरा हाल था। अख्तर का पूरा

चेहरा खून से सन गया था। मैं उसकी बाँह पकड़कर झिंझोडते हुए चीखी — “बस करो अख्तर, बस करो ... मुझसे अब और नहीं देखा जायेगा। कार अस्पताल की तरफ मोड़ लो।” तभी अख्तर का मोबाइल घनघना उठा। एक तेज चीत्कार के साथ ब्रेक लगने से कार पलटते-पलटते बची। उसने कार अस्पताल की बजाय घर की तरफ मोड़ दी — “अनु, दंगाइयों ने बाहर से दरवाजे बंद कर घर को आग लगा दी है। सारे लोग घर के अंदर हैं। वह बदहवास हा उठा। “क्या ...?” — मैं काँप उठी।

घर पहुँचे तो वहाँ सब कुछ खत्म हो चुका था। पूरा घर पेट्रोल की आग में धू-धू करके जल रहा था। अख्तर बड़ी मुश्किल से कार से बाहर निकला। उसकी हालत ... विक्षिप्तों सी हो गई थी। जलते हुए मकान के सामने वह फूट-फूट कर रो पड़ा — “देखा अनु, मैं कहता था न ... कुछ लोग हमें इस देश में रहने देना नहीं चाहते। मैं जीना चाहता हूँ अनु — इसी देश में अपने मादरे वतन में आत्म सम्मान से ... अभी भी, अभी भी मैं यहीं रहूँगा यहीं, सुना तुमने ... सुना ... यहीं रहूँगा ... किसी भी दूसरे हिन्दुस्तानी की तरह। देशद्रोही नहीं हूँ मैं।” मैं समझ नहीं पा रही थी कि उसे किस तरह सात्वना दूँ, सम्हालूँ। मैंने पास जाकर उसके कंधे पर हाथ

रखा तो वह बिफर पड़ा — “डॉट टच मी, छूना मत मुझे, मैं एक मुसलमान हूँ, तनवीर अख्तर।” मेरी आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। हिचकियों से गला रुँध गया था। मैं उसे दोनों बाहों में भरकर चीख उठी। “अख्तर ...अख्तर?” उसने अपने सीने से सटा मेरा चेहरा अपने दोनों हाथों में भर लिया — “तुम भी अनु इसलिए मुझे छोड़कर चली गई थी न कि मैं ...।” मैंने अपना हाथ उसके होठों पर रख दिया — “कुछ मत बोलो अख्तर, कुछ नहीं।” अचानक दंगाइयों की एक दूसरी भीड़ वहाँ आ पहुँची। वह हिन्दू विरोधी नारे लगा रही थी। अख्तर चीख पड़ा — “कोई इन लड़कियों को हाथ भी नहीं लगायेगा। घर मेरा जला है। माँ-बाप बहनें मेरी मरी हैं।” फिर हमें धकियाते हुए कार में बैठाता हुआ बोला — “एन्नी, तुम ड्राइव कर यहां से निकलो जल्दी और रास्ते में कहीं कार मत रोकता, सीधे होटल पहुंचो। एन्नी ने कार स्टार्ट की तो पहले मुझे अंदर धकियाता हुआ वह स्वयं पिछली सीट पर आकर बैठ गया। होटल पहुँचकर हमें उतार, वह बोला — “अच्छा, खुदा हाफिज चलता हूँ।” और चुपचाप कार में बैठ कर स्टार्ट कर दी। मैं बहुत कुछ कहना चाह रही थी, पर शब्द अपना अर्थ खो बैठे थे। मैं कार की विंडो के पास जाकर खड़ी हो

गई। “सुनो अख्तर ...।” वह टुकुर टुकुर मेरा आँसुओं भरा चेहरा ताकता रहा। आगे मुझे क्या कहना है मुझे स्वयं नहीं पता था। एक पीड़ादायक मुस्कराहट उसके होठों पर फैल गई — “मुझे कुछ नहीं होगा अनु, तुम अपना ख्याल रखना।”

अगले तीन दिन वह अस्पताल में ही रहा। हम चाह कर भी उससे नहीं मिल पाये। बस फोन पर वह इतना बताता रहा कि वह ठीक है।

दरवाजे की घंटी बजी तो मैं चौंक गई। घड़ी देखी तो सुबह के पाँच बज रहे थे। सात बजे हमारी ‘फ्लाइंट’ थी, ‘लॉस एंजिल्स’ के लिए। दरवाजा खोला तो एन्नी खड़ी थी, पूरी तरह तैयार। “अरे, तुम तैयार नहीं हुई अभी तक” — वह आश्चर्य से मुझे देखने लगी। मैं चुपचाप बैड पर आकर पसर गई — “मैं अमेरिका नहीं जा रही एन्नी — कभी नहीं जाऊँगी। ये नौकरी मैं छोड़ रही हूँ। यहाँ किसी को मेरी जरूरत है और मुझे उसकी। “मैं टेलीफोन का डायल घुमाने लगी। एन्नी हतप्रभ रह गई — “आर यू मैड अनु?” मैं चुप रही। दूसरी तरफ से हैलो की आवाज आई तो मैं बोली — “सुनो अख्तर ...।” एन्नी ने खुशी में भरकर मेरे गले में अपनी बाँहें डाल, मेरे मुँह को चूम लिया — “तू सचमुच पागल है अनु।”

कुदरत का कहर – कोरोना



नरेन्द्र बडगुज्जर
वरिष्ठ लेखाकार निधि-1
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हरियाणा लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5
सैक्टर-33बी, चण्डीगढ़

हवाओं में घुला है, यह कैसा जहर
सूने से गांव हैं, सूने पड़े शहर
घर बना है, अब कैदखाना
खुला है, केवल दवाखाना।

शासन-प्रशासन ने, ये उक्ति सुझाई
घर पर रहो, इसमें है सबकी भलाई
वुहान शहर से, कैसी हवा है आई
तड़प-तड़प कर, सब मर रहे हैं भाई।

देखो चीन आज बना शमशान
सोचो-समझो ना बनो नादान
अमेरिका, इटली और ईरान
लोगों से भरे हैं, कब्रिस्तान।

दुश्मन ऐसा, जो देता ना दिखाई
कैसे लड़ोगे, तुम इससे लड़ाई
अगर हराना है, इस दुश्मन को
घर में कैद कर लो, अपने जीवन को।

जो तोड़ेगा, यह नियम बंधन
उसका परिवार करेगा क्रंदन
घर है, अपना सुंदर सलोना
घुसने ना दो, इसमें कोरोना।

समस्त मानवता आज खतरे में है आई
कोरोना की नहीं बनी है, कोई दवाई
बात समझ लो तुम, यह जरा सी
मिलकर लड़ेंगे समस्त भारतवासी।

कोरोना को जब, हम हराएंगे
तभी हम विश्व विजेता कहलायेंगे।

लॉकडाउन का सकारात्मक प्रभाव

भास्कर कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या. प्र.नि. व ले.प.
प.स.ले.प. बोर्ड, बेंगलूर

ना धूलों का गुबार नज़र आता,
ना धुओं का जहरीला फुंकार नज़र आता,
ना कोलाहल, पीं-पीं, पों-पों,
ना मानव जमघट बाज़ार नज़र आता।
कर-कारखाने, निर्माण-कार्य, सिनेमाघर बंद पड़े,
ना कचड़े का अम्बार नज़र आता,
ना सड़कों पे गाड़ियों का भरमार नज़र आता,
ना फिज़ाओं में साँस लेना दुश्वार हो पाता।
नील गगन, है अब साफ नज़र आता,
अनिल है सौंधी खुशबू महकाता,
स्पष्ट इन्द्रधनुष के रंग सात नज़र आते,
प्रातः चिड़ियों-चुनमुन की चूँ-चूँ मन भा जाता।
अब जालंधर से भी धौलाधर का पहाड़ नज़र आता,
सिंहवाहिनी (सीतामढ़ी) गाँव से एवरेस्ट का नजारा हर्षाता,
ऋषिकेश में गंगा निर्मल कल-कल अबाध बह रही,
यमुना भी पतित पावनी हो चली भान हो जाता।
अंटार्कटिका में ओजोन परतों में अब सुधार नज़र आता,
जैव विविधताओं से भरपूर, अद्वितीय संसार नज़र आता,
पुलकित हैं पुष्प-कुसुम, प्रकृति का श्रृंगार नज़र आता,
लॉकडाउन का सकारात्मक परिणाम भी नज़र आता।
क्यों न हर साल एक लॉकडाउन लगाये,
धरती माँ को संवरने का मौका दे पायें,
सानिध्य में रहे हम प्रकृति के, पहचाने स्वयं को,
क्यों ना हम ये भीष्म-प्रतिज्ञा कर जाये?

एक मराठन – एक मराठा



मेहरबान सिंह नेगी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)

भूखण्ड 191 (एफ-2), वैशाली, सेक्टर-4
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

उसने देखा पास में ऐसा चांद मगन-सा
दूर जो देखा मेरे जैसा चांद गगन का।
तुलन पत्र में तब वो रख कर दोनों को
मिला रहा था उन के कोणों कोणों को।।
आकर्षण वश हो कर के इस चांद धरा के
डोला मन उस का तो उड़ा वो फड़फड़ा के।
मन ही मन कुछ तो वह गुनगुना रहा था
परशब्द अभाव में स्वयं को पा रहा था।।

मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

देख रहा था वो दोनों को ही यूँ फिर-फिर
ना जाने मन में कितना भरमा रहा था।
चांद सी मुझ लक्षणा औँ उस व्यंजना में
फर्क को समझ वो जितना पा रहा था।।

आकर कुछ समीप था उस ने जो देखा
क्या शब्दों में ही कह दूँ मैं उसका लेखा?
धड़कनें मेरी धकधकसा सिलसिला था –
धड़कनों पे मेरी दिल उस का खिला था।।

मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

धड़कती धड़कनों में दिल जो हिला था
छिपते छुपाते ही रहा वो नजरें मिलाता।
कभी वो नजरों को नीचे धरा पे गिराता
दृष्टि वृष्टि पर धराचंद्रिका पे इतराता।।

कभी मदिरिल गीतों को चुन गुनगुनाता
पर जोर से वो कुछ भी तो कह नहीं पाता।
जितना जाता वह उन भावों को छिपाता
मुख मण्डल में उसके जलज खिल जाता।।
मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

कनखियों से उस ने मुझे फिर से निहारा
मस्त जवानी पे दांव लगा के दिल हारा।
जोवन में मराठा को कोई सूझा ना चारा
लगने लगा था मुझको वो कितना बेचारा।।
राह में वो था जब कभी भी आता जाता
रह जाता मुझ से ही अपनी नजरें बचाता।
नजरें झुका के अपनी वो कर जाता टाटा
जैसे और तो कुछ भी ना हो उसको आता।।

मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

मैं सपनों में उसके तब से आने लगी थी
आ के मैं मदिरिल गीत भी गाने लगी थी।
मैं उड़ती चिड़िया उसके तो हाथ न आती
आंखें खोलता तब तक मैं फुर्र उड़ जाती।।

हर रात छल पलपल ऐसे ढल जाती थी –
नव किरण पहल नवल लेकर के आती थी।
मैं ठन ठन उस ठा ठा को भाने लगी थी
जितना मैं रिझाते सपने में सताने लगी थी।।

मैं एक मराठन – वो एक मराठा।
मैं थी ठन ठन – वो था ठा ठा!!

इस वीरां में कोई दोस्त नहीं मिलता



योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

इस वीरां में कोई दोस्त नहीं मिलता
कोई हमदर्द, कोई हमनफस नहीं मिलता
जो बनारस—जोधपुर के थे यार
अब वो नहीं मिलते
उनका जायका नहीं मिलता
कोई कहकहे लगाने वाला
बिना कहे समझने वाला
गले लगा कर गम हल्का जो कर दे
मुस्कुरा कर धीरे से हथेली पकड़
“मैं हूँ न साथ” का अहसास कराने
वाला नहीं मिलता
अब तो लोगों की आंख की किरकिरी
मुफ्त का ज्योतिषी, किसी का पति
किसी का पिता बन कर झुक गया हूँ।
दुकान से लाने वाले सामान की लिस्ट में
बैंकों की उलझी आसान किश्त में
बीमा के हिट लिस्ट में
कहीं खो गया वह हँसमुख बच्चा
जिसके पास थे अगणित प्रश्न
आसमान से जमीन तक
ननिहाल से दादा की पुश्तैनी मकान तक।
पर कहीं कहीं सुकून भी है
जब कोई आपके कंधे को

विश्वास का बसेरा समझे
किसी की आँख में आपके लिए आशा हो
आपकी वजह से नहीं आपके लिए आँसू हो
कोई गौरव का क्षण जो
आपसे किसी को मिलता हो
युगों से ऐसी ही परिपाटी
चली आ रही है और आगे बढ़ेगी
बचपन पीछे छूट जाने पर ही जवानी
और जवानी छूट जाने पर ही बुढ़ापे का स्वाद है
पर खट्टी मीठी यादें, आ ही जाती हैं
किसी की ठोकर से वह आराम याद आता ही है
जिसे किसी अपने ने दिया था
कोई हर वक्त साथ रहा
किसी ने दर्द बांटा, दवा की
उन सब को आभार मेरी यही याद है।
सब बीत जाएगा, बस रह जायेगा
तुम्हारी याद वो छेड़छाड़, वह मनुहार
विचारों में मतभेद, झगड़ा
मीठी साजिश और बिछड़ने पर रुलाई
आओ एक दिवस, एक शाम या कुछ घंटे ही सही
मिलते गपियाते हंसते खेलते हैं
वही पुरानी को नई कर के
साथ साथ मुस्कुराते हैं।

आज सुबह



राजेश 'पंकज'

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
प्लॉट नं. 4 व 5, सैक्टर-33बी
हरियाणा, चण्डीगढ़

आज सुबह इक पंछी बोला,
कहो कैसे हो, कहां रहे
तुम इतने दिन,
बोलो कैसे बीत रहे हैं,
अकेले में सारे निस दिन,
सूरज कैसे कब उगता है,
तारे लेते हो कितने गिन,
चंदा क्या खूब चमकता है,
शोर वाहनों का कहीं नहीं,
कहीं नहीं धुएं के बादल,
सांसों पर भी बोझ नहीं,
आंखों से अब मैल का पर्दा
दूर हुआ कुछ छिपा नहीं,
रंग सभी तो चटक उठे हैं,
गंगा सदय स्नाता सी मुस्काए,

यमुना धरा को अब दुलराये,
हिम का आंचल चमक चमक,
खिली फसल को देख लहराए,
प्रकृति के इस उत्सव को मानव
मना शांत हो, काहे पछताए,
याद कर तू मां की डांट को,
बचपन में जब बुहारती आंगन को,
आज धरती बुहार रही जल थल वायु
कुछ दिन पांव समेट
मूंद आंख झांक भीतर,
लेखा जोखा तोल मोल
निज कर्मों का कर ले,
मिला जो अवसर,
ज्ञान के मोती झोली भर ले।

फिर भला क्या



सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्या. प्रधान महालेखाकार (ले.ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

सोचती हूँ गर ना सोचा जाएगा
फिर भला क्या देश ये बच जाएगा
अपनी ही नादानियों और खामियों से
टूटे खिलौने सा बिखर ना जाएगा।

गांधी, सुभाष, टैगोर, तिलक के
दिल में क्या तस्वीर थी
नाम इसका था कभी सोने की चिड़िया
आज बिगड़े किस कदर हालात हैं
सोचती हूँ गर सोचा ना जाएगा
फिर भला क्या देश ये बच जाएगा।

हर तरफ लूट का बाज़ार है
चोरों की ही बस यहाँ भरमार है
सरफरोशी की तमन्ना अब है कहाँ
लौह पुरुष सा संकल्प होगा कब यहाँ

सोचती हूँ गर सोचा ना जाएगा
फिर भला क्या देश ये बच जाएगा।

पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण
न बचा कोई हिस्सा देश का
हर तरफ आतंक की एक आग सी
जल रहा है कोना कोना देश का
सोचती हूँ गर सोचा ना जाएगा
फिर भला क्या देश ये बच जाएगा।

सहमी हुई हर आंख में सवाल है
धर्म और मजहब के नाम पर
फिर से क्या देश ये बंट जाएगा
सोचती हूँ गर ना सोचा जाएगा
फिर भला क्या देश ये बच जाएगा
अपनी ही नादानियों और खामियों से
टूटे खिलौने सा बिखर न जाएगा।

माँ की दुआ ...



राजेश कुमार जांगिड़
कार्यालय प्रभारी वित्त व संचार
लेखापरीक्षा, जयपुर-302015

धुंधलाते लक्ष्य पर निगाहें दूर तक...
जाने कदम बढ़ते अपने आप क्यों हैं...
ये शिकन माथे की मिटा रहा है कौन?
लगता है किसी की दुआ साथ है...

आँखे खोजती हैं राह का साथी...
हँसते हुए राही, बस गुजर रहे हैं...
मिलाने हाथ, ये रुक जाता है कौन?
लगता है किसी की दुआ साथ है...

सूखते जख्मों को कुरेदता अनवरत...
हरे घाव पर नमक लगाता है कौन?
मरहम लगाने, ये आ जाता है कौन?
लगता है किसी की दुआ साथ है...

लहलुहान हैं पद, घाव भरने हैं बाकी...
सुलगते अंगार पर फिर चलाता है कोई...
शीतल मलय लेप, ये लगाता है कौन?
लगता है किसी की दुआ साथ है...

छलावा हर बार, मासूमियत के साथ...
निष्कलंक पर कलंक लगाता है कौन?
शक्ति बन, ये कलंक मिटाता है कौन?
लगता है किसी की दुआ साथ है...

मेरी हर बाधाओं को हर लेती है,
हर आह को वाह में बदल देता है कौन?
हर शाप को वरदान बना देता है कौन?
यकीनन माँ की दुआ साथ है...

विरह गीत



रामसिंह

आई.ए.ए.एस. (सेवानिवृत्त)
170, हुमायूँ पुर, सफदरजग एन्क्लेव
नई दिल्ली-110029

कितने युग बीत गये;
प्रियवर मनमीत गये;
जीवन संगीत गये;
आशा के दीप गये।

घटाटोप घन गर्जन;
जग के उद्वेलित व्रण;
ला रहे दृग जल प्लावन;
बरसाने पुरानी घन।

तुमने गृह लक्ष्मी बन;
सुरभित किया गेह आंगन;
कर पावन वृत्ति चयन;
दिये संस्कार प्रवण।

उद्विग्न मेरा मन;
चाहे तव सन्दर्शन;
स्वीकारो भाव सुमन;
नव सृजन प्रेरणा बन।



गरीब मजदूर की दर्द भरी आवाज



दीपक कुमार पंकज
डी.ई.ओ.

मकान नं. एफ-196, रामपार्क विस्तार,
लोनी, गाजियाबाद

आया जब से कोरोना आँसू रुला रहा है।
रोजगार भी रहा ना, रोजगार जा रहा है।
कैसे पलेंगे बच्चे, बीवी व मम्मी पापा
दिन रात सोच करके बे मौत मर रहा है।

जो कुछ भी मिला राहत सरकार द्वारा गरीबों को
मिलता है वह भी अधूरा बाकि खुद ही खा रहा है।
शहरों से भागे पैदल मजदूर अपने वतन को
पलायन में हुआ जो हालत बयां नहीं कर पा रहा है।

पड़ते पुलिस के डण्डे बेतहाशा गरीबों पर
बेकार ऐसी सरकार जो अत्याचार हो रहा है।
करते हैं ऐसे काम प्रशासन के कुछ दरिन्दे
मोदी ऐसे सरकार को जो बदनाम कर रहा है।

छूटा माँ का आंचल व छूटा पिता का साया
बीवी बच्चे रोवें मजदूर मर रहा है।
छोटा बड़ा ना कोई पर आत्मा के नजर में
जात पात का भेद मिटाओ इंसान कर रहा है।

विनती करे दीपक जी दोनों हाथों को जोड़कर
मानवता लाओ समाज में फरियाद कर रहा है।
लिखने में अगर हुई गलती तो माफी चाहता हूँ
देश बचाओ कोरोना भगाओ हिन्दुस्तान कह रहा है।

अन्याय



सुश्री सुमेधा अमर
निदेशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, नई दिल्ली

अन्याय की क्या परिभाषा दूँ?
वही बता सकता है,
जिसने वह सहा हो,
न कि वह, जिसने वह किया हो!!
अनादि काल से,
यही तो गाथा है,
इतिहास, पुराणों और
वेदों तक में चिन्हित है।
क्या कभी कैकेयी ने समझा
कि 'अन्याय क्या होता है?'
या कि राम ने भी जाना,
कि 'अन्याय क्या होता है?'
जब निर्वासित किया सीता को,
ऐसी अवस्था में?
या कि शान्तनु ने,
जिसने दिलाई शपथ,
अपने ही भीष्म को,
आजन्म ब्रह्मचर्य की,
परन्तु हम भूल जाते हैं ...
विनाश महाभारत का,
बचा नहीं, कोई भी,
चाहे वो कौरव हो,
या कि हो पाण्डव वह,
कारण बस एक था,
छीनना अधिकार उसका,
जो सबसे योग्य था,
बनना अधिकारी उनको,
जो महा अयोग्य थे!!
तो यदि आज भी अन्याय है
दिन-प्रतिदिन, के व्यवहार में,
दफ़्तर या बाज़ार में
क्यों दुखी होते हो?
भूल क्यों जाते हो?

यह तो हमारी,
वांशिक परम्परा है।
उसका कुछ अंश तो,
हमें भी है भोगना,
हम तो राम, सीता,
या भीष्म भी नहीं,
फिर भी, तो देखो तुम,
प्रकृति क्या बख्शाती है,
ऐसे अन्यायों को,
कुफ़्र तो पड़ता है,
देर या सवेर से,
बस यह देख लो,
इतनी भी देर नहीं
साहस ही छूट जाए,
सच्चे इंसान का,
क्योंकि जीवित जो रखना है,
हमें उन सबको,
जो बनाए रखें,
आस्था हमारी,
उस अदृश्य शक्ति में,
खड़ा न हो प्रश्न-चिह्न,
उसकी ही सत्ता पर,
जानते तो सब हैं,
बड़ी कठिन है डगर,
इस सच की,
तभी तो कम ही हैं,
राही इस डगर के,
उनको जिताना है,
उनको बढ़ाना है,
इंसानियत को मरने से यदि,
अब बचाना है।
आस-पास अन्याय पर,
कभी कुछ बोलो तुम,

कभी तो, मुख खोलो तुम,
वरना यह कलयुग है ...
प्रलय आ जाएगी,
उससे यदि बचना है,
सत्य का साथ दो,
अन्याय पर न्याय की,
विजय दिलवाओ तुम।
यदि 'सच' निहत्था हो
शस्त्र इसे, साहस और भरोसे का,
दिलवाओ तुम,
मित्रों, मैं क्या कहूँ
तुम सब ज्ञानी हो,
फिर भी, तुम मौन हो,
अन्याय को देखते,
यही कमजोरी है,
जो तुम्हें मिटानी है,
राह थोड़ी मुश्किल है,
फिर भी, यदि सही लगे,
बात मेरी जान लो,
सच की डगर के,
अकेले राही को,
अकेले कभी छोड़ो नहीं,
अपनी ही भलाई में,
उसे तुम सहारा दो,
बाकी सब ठीक है;
और सब ठीक है!!!

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में 'शहरीवन' की एक झलक





भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में 'शहरीवन' का मनमोहक दृश्य



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124